

कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र
सङ्कायअन्तर्गत वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, भरतपुर
नेपाली विभागको स्नातकोत्तर तह एम्.ए.
दोस्रो वर्षको दसौं पत्रको
प्रयोजनका लागि
प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी
ऋषिराम पाण्डेय
त्रि.वि. दर्ता नं. ३६-८३

नेपाली विभाग
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस
भरतपुर, चितवन
२०६९

शोधनिर्देशकको सिफारिस

त्रिभुवन विश्वविद्यालय वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरका नेपाली विभागअन्तर्गत स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षका छात्र ऋषिराम पाण्डेयले कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन शीर्षकको शोधपत्र मेरा निर्देशनमा तयार पार्नुभएको हो । परिश्रमपूर्वक तयार पारिएको प्रस्तुत शोधकार्यबाट म सन्तुष्ट छु र यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि विभागसमक्ष सिफारिस गर्दछु ।

होमनाथ सापकोटा
सहप्राध्यापक
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस
नेपाली विभाग
भरतपुर, चितवन

मिति : २०६९/५/२६

कृतज्ञताज्ञापन

कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन शीर्षकमा आधारित प्रस्तुत शोधकार्य आदरणीय गुरु सहप्राध्यापक होमनाथ सापकोटाको निर्देशनमा तयार पारेको हुँ । आफ्नो मूल्यवान् समय दिएर स्नेहपूर्वक कुशल निर्देशन गरिदिनुहुने सहप्राध्यापक होमनाथ सापकोटाप्रति म सर्वप्रथम हार्दिक कृतज्ञताज्ञापन गर्दछु ।

शोधकार्यका लागि मैले विभागमा प्रस्तुत गरेको शोधप्रस्ताव स्वीकृत गरी शोधकार्य गर्ने महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान गर्नुहुने वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली विभागका विभागीय प्रमुख तथा आदरणीय गुरु प्रा.डा. नारायणप्रसाद खनालप्रति र नेपाली विभागका सम्पूर्ण गुरुजनहरूप्रति म हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु ।

प्रस्तुत शोधपत्रको तयारीको क्रममा आफ्नो व्यक्तिवृत्तबारे कति पनि भर्को नमानी जानकारी गराइदिनुहुने शोधनायक केदारनाथ अधिकारी तथा सामग्रीसङ्कलन र अन्य आवश्यक यथातथ्य जानकारी उपलब्ध गराउनमा पर्याप्त सहयोग पुऱ्याउनुहुने शोधनायकका सुपुत्र ओमप्रकाश अधिकारीप्रति पनि हार्दिक आभार प्रकट गर्न चाहन्छु । प्रेरणा र हौसला प्रदान गर्ने मेरा अनन्य मित्र जनकराज पोखरेल र बन्धुराज कोइरालाप्रति विशेष आभार प्रकट गर्न चाहन्छु ।

यसरी नै मलाई यो अवस्थासम्म ल्याइपुऱ्याउनका साथै स्नेहमय सम्बल प्रदान गर्नुहुने ममतामयी माता अम्बिका पाण्डेयप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्नु म आफ्नो परमकर्तव्य ठान्दछु । यसैगरी मेरा लागि सम्पूर्ण घरायसी भन्भट तथा व्यावहारिक जिम्मेवारीसमेत आफ्नो थाप्लोमा बोकेर मलाई सहज वातावरण प्रदान गर्दै यो शोधपत्र लेखनमा हरबखत सहयोग पुऱ्याउने र शीघ्रताका लागि बारम्बार घच्चच्याइरहने मेरी जीवनसङ्गिनी श्रीमती तारादेवी पाण्डेयलाई म विशेष धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

यस शोधपत्रलाई यथाशक्य छिटो र शुद्ध टङ्कण गरिदिनुहुने क्वालिटी फोटोकपी तथा कम्प्युटरलाई विशेष धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

अन्त्यमा यस शोधपत्रको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय, वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, भरतपुर, चितवनको नेपाली विभागसमक्ष प्रस्तुत गर्दछु ।

शोधार्थी

मिति : २०६९/०५/२४

.....
ऋषिराम पाण्डेय
त्रि.वि.दर्ता नं.: ३६-८३
नेपाली विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस
भरतपुर, चितवन
२०६९

सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची

यस शोधपत्रमा प्रयोग गरिएका सङ्क्षेपीकृत शब्दहरूको पूरा रूप यसप्रकार छः

| | |
|----------------|--------------------------------|
| इ.स. | इस्वी सन् |
| ऐ. | ऐच्छिक |
| क्र.स. | क्रमसङ्ख्या |
| कि.मि. | किलो मिटर |
| गा.वि.स. | गाउँ विकास समिति |
| टि.भी. | टेलिभिजन |
| त्रि.वि. | त्रिभुवन विश्वविद्यालय |
| नं. | नम्बर |
| नि.मा.वि. | निम्न माध्यमिक विद्यालय |
| ने.रा.प्र.प्र. | नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान |
| पं. | पण्डित |
| प्रा. | प्राध्यापक |
| प्रा.डा. | प्राध्यापक डाक्टर |
| प्रा.लि. | प्राइभेट लिमिटेड |
| पृ. | पृष्ठ |
| वि.सं. | विक्रम सम्वत् |
| स्व. | स्वर्गीय |
| सम्पा. | सम्पादक |
| संस्क. | संस्करण |

विषयसूची

शोधनिर्देशकको सिफारिस

स्वीकृति पत्र

कृतज्ञताज्ञापन

सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची

परिच्छेद : एक

शोधपरिचय

| | | |
|------|------------------------------|---|
| १.१ | शोधशीर्षक | १ |
| १.२ | शोधप्रयोजन | १ |
| १.३ | विषयपरिचय | १ |
| १.४ | समस्याकथन | १ |
| १.५ | शोधकार्यका उद्देश्यहरू | २ |
| १.६ | पूर्वकार्यको विवरण र समीक्षा | २ |
| १.७ | शोधकार्यको औचित्य र महत्त्व | ६ |
| १.८ | प्राक्कल्पना | ६ |
| १.९ | शोधकार्यको सीमाङ्कन | ६ |
| १.१० | सामग्री सङ्कलन र शोधविधि | ७ |
| १.११ | सैद्धान्तिक ढाँचा | ७ |
| १.१२ | शोधपत्रको रूपरेखा | ७ |

परिच्छेद : दुई

केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्त

| | | |
|-----|----------------------------------|----|
| २.१ | विषयप्रवेश | १० |
| २.२ | जन्म र जन्मस्थान | १० |
| २.३ | वंशपरम्परा र पारिवारिक पृष्ठभूमि | १० |
| २.४ | बाल्यकाल र संस्कार | ११ |
| २.५ | शिक्षादीक्षा | ११ |

| | | |
|------|---|----|
| २.६ | पारिवारिक स्थिति र आर्थिक अवस्था | ११ |
| २.७ | मानसिक आघातका क्षणहरू | १२ |
| २.८ | रुचि र स्वभाव | १२ |
| २.९ | दिनचर्या र भ्रमण | १३ |
| २.१० | लेखनप्रेरणा र प्रभाव | १४ |
| २.११ | साहित्यसिर्जना र प्रकाशन | १४ |
| २.१२ | पुरस्कार तथा सम्मान | १४ |
| २.१३ | जीवनदर्शन र साहित्यरचनामा त्यसको प्रभाव | १५ |
| २.१४ | निष्कर्ष | १५ |

परिच्छेद : तीन

केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्व

| | | |
|--------|---|----|
| ३.१ | विषयप्रवेश | १६ |
| ३.२ | स्वभाव | १६ |
| ३.३ | आन्तरिक तथा बाह्य व्यक्तित्व | १६ |
| ३.४ | सामाजिक व्यक्तित्व | १७ |
| ३.५ | बहुभाषिक व्यक्तित्व | १७ |
| ३.६ | भागवतवाचक/कर्मकाण्डी व्यक्तित्व | १८ |
| ३.७ | योगाभ्यासी व्यक्तित्व | १८ |
| ३.८ | राजनीतिक व्यक्तित्व | १८ |
| ३.९ | भाषासंशोधक तथा परिवर्द्धक व्यक्तित्व | १८ |
| ३.१० | वाङ्मयरक्षक व्यक्तित्व | १९ |
| ३.११ | भजनगीतका रचनाकार व्यक्तित्व | १९ |
| ३.१२ | साहित्यिक व्यक्तित्व | १९ |
| ३.१२.१ | कवि व्यक्तित्व | १९ |
| ३.१२.२ | टिप्पणीमूलक संवादकार व्यक्तित्व | २० |
| ३.१२.३ | अनुवादक व्यक्तित्व | २१ |
| ३.१३ | जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यसिर्जनाबीच आन्तरिक सामञ्जस्य | २१ |
| ३.१४ | निष्कर्ष | २१ |

परिच्छेद : चार

केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्रा र चरण विभाजन

| | | |
|-------|--|----|
| ४.१ | विषयप्रवेश | २२ |
| ४.२ | केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्रा | २२ |
| ४.३ | केदारनाथ अधिकारीका कृतिहरूको वर्गीकरण | २२ |
| ४.४ | केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्राको चरण विभाजन | २३ |
| ४.४.१ | पहिलो चरण | २३ |
| ४.४.२ | दोस्रो चरण | २४ |
| ४.४.३ | तेस्रो चरण | २४ |
| ४.५ | निष्कर्ष | २५ |

परिच्छेद : पाँच

केदारनाथ अधिकारीको कृतित्वको अध्ययन

| | | |
|------------|-------------------------------|----|
| ५.१ | विषयप्रवेश | २६ |
| ५.१.१ | ‘कर्तव्य दर्पण’ | २६ |
| ५.१.१.१ | संरचना | २६ |
| ५.१.१.२ | भावविधान | २७ |
| ५.१.१.२.१ | धार्मिक चेतना | २७ |
| ५.१.१.२.२ | आचारमहिमा | २८ |
| ५.१.१.२.३ | ईश्वरभक्ति/प्रार्थना | २८ |
| ५.१.१.२.४ | मानवता | २९ |
| ५.१.१.२.५ | अतिथिसेवा | २९ |
| ५.१.१.२.६ | बालशिक्षा | ३० |
| ५.१.१.२.७ | स्वास्थ्य शिक्षा | ३१ |
| ५.१.१.२.८ | जितेन्द्रिय बन्नुको महिमा | ३१ |
| ५.१.१.२.९ | सदाचार | ३१ |
| ५.१.१.२.१० | सत्सङ्ग महिमा | ३२ |
| ५.१.१.२.११ | सेवाभाव | ३२ |
| ५.१.१.२.१२ | सामाजिक चेतना | ३२ |
| ५.१.१.२.१३ | पशुहरूप्रति विवेकी बन्न आग्रह | ३३ |
| ५.१.१.२.१४ | जीवनको क्षणभङ्गुरता | ३३ |

| | | |
|------------|---------------------------------|----|
| ५.१.१.२.१५ | नैतिक शिक्षा | ३४ |
| ५.१.१.२.१६ | परजन्म सुधारको आग्रह | ३४ |
| ५.१.१.२.१७ | सत्यकामना | ३४ |
| ५.१.१.२.१८ | कल्याणकामना | ३५ |
| ५.१.१.२.१९ | आध्यात्मिक शुद्धता | ३५ |
| ५.१.१.२.२० | ब्रह्ममुहूर्तमा उठ्नुको महत्त्व | ३६ |
| ५.१.१.२.२१ | सत्पात्रता | ३६ |
| ५.१.१.२.२२ | कर्म र जातित्व | ३६ |
| ५.१.१.२.२३ | अभिमानीपनको नकारात्मकता | ३७ |
| ५.१.१.२.२४ | सद्भावयुक्त कर्मको महिमा | ३७ |
| ५.१.१.२.२५ | न्यायिक सोच | ३८ |
| ५.१.१.३ | उद्देश्य | ३८ |
| ५.१.१.४ | कथनपद्धति | ३८ |
| ५.१.१.५ | भाषाशैली | ३८ |
| ५.१.१.६ | लयविधान | ३९ |
| ५.१.१.७ | अलङ्कारविधान | ४० |
| ५.१.१.७.१ | श्लेष | ४० |
| ५.१.१.७.२ | रूपक | ४१ |
| ५.१.१.७.३ | उपमा | ४१ |
| ५.१.१.७.४ | अन्त्यानुप्रास | ४२ |
| ५.१.१.७.५ | दृष्टान्त | ४२ |
| ५.१.१.७.६ | वृत्यानुप्रास | ४३ |
| ५.१.१.८ | शीर्षकविधान | ४३ |
| ५.१.१.९ | निष्कर्ष | ४४ |
| ५.१.२ | 'दिव्यमधु' | ४४ |
| ५.१.२.१ | संरचना | ४५ |
| ५.१.२.२ | भावविधान | ४५ |
| ५.१.२.२.१ | दया | ४५ |
| ५.१.२.२.२ | आपसी मेलमिलाप | ४६ |
| ५.१.२.२.३ | अहिंसा | ४६ |
| ५.१.२.२.४ | मातृ-पितृभक्ति | ४७ |
| ५.१.२.२.५ | नैतिक शिक्षा | ४७ |
| ५.१.२.२.६ | विनम्रता | ४७ |

| | | | |
|-------|------------|---------------------------|----|
| | ५.१.२.२.७ | विवेकको चाहना | ४८ |
| | ५.१.२.२.८ | व्यवहारशिक्षा | ४८ |
| | ५.१.२.२.९ | परोपकार | ४९ |
| | ५.१.२.२.१० | विश्वबन्धुत्व | ४९ |
| | ५.१.२.२.११ | शान्तिको कामना | ४९ |
| | ५.१.२.३ | चरित्रविधान | ५० |
| | ५.१.२.४ | परिवेश | ५० |
| | ५.१.२.५ | उद्देश्य | ५० |
| | ५.१.२.६ | कथनपद्धति | ५० |
| | ५.१.२.७ | भाषाशैली | ५० |
| | ५.१.२.८ | लयविधान | ५१ |
| | ५.१.२.९ | अलङ्कारविधान | ५१ |
| | ५.१.२.९.१ | वृत्यानुप्रास | ५१ |
| | ५.१.२.९.२ | दृष्टान्त | ५२ |
| | ५.१.२.९.३ | उपमा | ५२ |
| | ५.१.२.१० | शीर्षकविधान | ५३ |
| | ५.१.२.११ | निष्कर्ष | ५३ |
| ५.१.३ | | 'आनन्ददीपिका' | ५३ |
| | ५.१.३.१ | संरचना | ५४ |
| | ५.१.३.२ | भाव | ५४ |
| | ५.१.३.२.१ | संयम | ५४ |
| | ५.१.३.२.२ | परस्त्रीप्रतिको दृष्टिकोण | ५५ |
| | ५.१.३.२.३ | सन्तोष | ५५ |
| | ५.१.३.२.४ | सुकर्मको महत्त्व | ५५ |
| | ५.१.३.२.५ | सँसारिक अस्थिरता | ५६ |
| | ५.१.३.२.६ | मोक्ष | ५६ |
| | ५.१.३.२.७ | निश्चिन्ता | ५७ |
| | ५.१.३.२.८ | रोग नै नरक हो | ५७ |
| | ५.१.३.२.९ | आत्मज्ञान र कर्मयोग | ५७ |
| | ५.१.३.२.१० | समता | ५८ |
| | ५.१.३.२.१३ | योगाभ्यास | ५८ |
| | ५.१.३.३ | उद्देश्य | ५९ |
| | ५.१.३.४ | कथनपद्धति | ५९ |

| | | |
|---------|--------------------------------------|----|
| ५.१.३.५ | भाषाशैली | ५९ |
| ५.१.३.६ | लयविधान | ६० |
| ५.१.३.७ | अलङ्कारविधान | ६० |
| | ५.१.३.७.१ एपमा | ६० |
| | ५.१.३.७.२ दृष्टान्त | ६१ |
| ५.१.३.८ | शीर्षकविधान | ६१ |
| ५.१.३.९ | निष्कर्ष | ६१ |
| ५.१.४ | 'संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ' | ६२ |
| ५.१.४.१ | संरचना | ६२ |
| ५.१.४.२ | कथावस्तु | ६२ |
| ५.१.४.३ | भावविधान | ६३ |
| | ५.१.४.३.१ सांसारिक वितृष्णा | ६४ |
| | ५.१.४.३.२ पूर्वजन्मप्रति विश्वास | ६४ |
| | ५.१.४.३.३ ईश्वरभक्ति | ६४ |
| | ५.१.४.३.४ नीतिशिक्षा | ६५ |
| | ५.१.४.३.५ आचारदीक्षा | ६५ |
| | ५.१.४.३.६ व्यवहारदीक्षा | ६६ |
| | ५.१.४.३.७ सामाजिक असङ्गति | ६६ |
| | ५.१.४.३.८ आमाको सहनशीलता | ६६ |
| | ५.१.४.३.९ गहनाप्रति विमोह | ६७ |
| | ५.१.४.३.१० आन्तरिक स्वभाव | ६७ |
| | ५.१.४.३.११ शुद्ध आहारको महत्त्व | ६७ |
| | ५.१.४.३.१२ प्रशासनमा सुधारको अपेक्षा | ६८ |
| | ५.१.४.३.१३ समाज उत्थानको चाहना | ६८ |
| | ५.१.४.३.१४ ज्ञान र विज्ञानको समन्वय | ६९ |
| | ५.१.४.३.१५ मानवीय सेवा | ६९ |
| | ५.१.४.३.१६ छोराछोरीमा विभेद | ६९ |
| | ५.१.४.३.१७ सामाजिक न्याय | ७० |
| ५.१.४.४ | चरित्रविधान | ७० |
| ५.१.४.५ | परिवेश | ७१ |
| ५.१.४.६ | उद्देश्य | ७१ |
| ५.१.४.७ | कथनपद्धति | ७१ |
| ५.१.४.८ | भाषाशैली | ७१ |

| | | |
|----------|---|----|
| ५.१.४.९ | लयविधान | ७१ |
| ५.१.४.१० | अलङ्कारविधान | ७२ |
| | ५.१.४.१०.१ रूपक | ७२ |
| | ५.१.४.१०.२ उपमा | ७२ |
| | ५.१.४.१०.३ दृष्टान्त | ७३ |
| | ५.१.४.१०.४ लोकोक्ति | ७३ |
| ५.१.४.११ | शीर्षकविधान | ७३ |
| ५.१.४.१२ | निष्कष | ७४ |
| ५.१.५ | ‘सुदामाको कनिका’ | ७५ |
| ५.१.५.१ | संरचना | ७५ |
| ५.१.५.२ | विषयवस्तु/कथावस्तु | ७६ |
| ५.१.५.३ | भावविधान | ७८ |
| | ५.१.५.३.१ हरिभक्ति | ७८ |
| | ५.१.५.३.२ दर्शनभेटमा शिष्टाचार | ७९ |
| | ५.१.५.३.३ मैत्रीप्रेम | ७९ |
| | ५.१.५.३.४ साभापनको भावना | ७९ |
| | ५.१.५.३.५ श्रद्धाभाव | ८० |
| | ५.१.५.३.६ क्षमाशीलता | ८० |
| | ५.१.५.३.७ सन्मार्ग उन्मुखता | ८१ |
| | ५.१.५.३.८ आचारमहिमा | ८१ |
| | ५.१.५.३.९ सद्भक्ति | ८१ |
| | ५.१.५.३.१० सत्य र प्रियवादिता | ८२ |
| | ५.१.५.३.११ अहिंसा | ८२ |
| | ५.१.५.३.१२ दयाभाव | ८२ |
| | ५.१.५.३.१३ मोक्षप्राप्ति | ८३ |
| | ५.१.५.३.१४ दुष्प्रवृत्तिप्रति नकारात्मक भाव | ८३ |
| | ५.१.५.३.१५ रिसप्रति वितृष्णा | ८४ |
| | ५.१.५.३.१६ अस्तित्व रक्षा | ८४ |
| | ५.१.५.३.१७ भविष्यचिन्तन | ८४ |
| | ५.१.५.३.१८ मनको शुद्धता | ८५ |
| | ५.१.५.३.१९ परोपकार | ८५ |
| | ५.१.५.३.२० श्रमप्रति सम्मान | ८६ |
| | ५.१.५.३.२१ सुकर्मको महत्त्व | ८६ |

| | |
|-------------------------------------|----|
| ५.१.५.३.२२ कर्मको महानता | ८६ |
| ५.१.५.३.२३ वैराग्य | ८७ |
| ५.१.५.३.२४ सन्तोष | ८७ |
| ५.१.५.३.२५ बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार | ८८ |
| ५.१.५.३.२६ पुण्य | ८८ |
| ५.१.५.३.२७ शत्रुता पहिचान | ८९ |
| ५.१.५.३.२८ सुसाधना | ८९ |
| ५.१.५.३.२९ सन्मार्ग महिमा | ९० |
| ५.१.५.३.३० धीरता | ९० |
| ५.१.५.३.३१ महात्माको अनुशरण | ९० |
| ५.१.५.३.३२ समन्वयवादी चिन्तन | ९१ |
| ५.१.५.४ चरित्रविधान | ९१ |
| ५.१.५.५ परिवेश | ९२ |
| ५.१.५.६ उद्देश्य | ९२ |
| ५.१.५.७ कथनपद्धति | ९२ |
| ५.१.५.८ भाषाशैली | ९२ |
| ५.१.५.९ लयविधान | ९३ |
| ५.१.५.१० अलङ्कारविधान | ९५ |
| ५.१.५.१०.१ वृत्यानुप्रास | ९५ |
| ५.१.५.१०.२ स्वभावोक्ति | ९६ |
| ५.१.५.१०.३ दृष्टान्त | ९६ |
| ५.१.५.११ शीर्षकविधान | ९६ |
| ५.१.५.१२ निष्कर्ष | ९७ |

परिच्छेद : छ

उपसंहार

| | |
|----------------------|-----|
| ६.१ सारांश | ९८ |
| ६.२ समग्र मूल्याङ्कन | १०० |
| ६.३ निष्कर्ष | १०१ |

परिशिष्ट खण्ड

खण्ड 'क'

| | | |
|---|-------------------------|-----|
| १ | हिंसक कृषक तुलना | १०२ |
| २ | ब्रह्मकर्म | १०५ |
| ३ | श्राद्धपद्धति | १०६ |
| ४ | अष्टावक्रगीता | १०७ |
| ५ | तिलक रहस्य दर्पण | १०७ |
| ६ | आयुर्वेद सार दर्पण | १०९ |
| ७ | चतुर्विंशति-रत्न-दीपिका | ११२ |

खण्ड 'ख'

| | | |
|----|--|-----|
| १. | एकल छायौचित्र : केदारनाथ अधिकारी | ११३ |
| २. | धर्मपत्नीका साथ केदारनाथ अधिकारी | ११४ |
| ३. | परिवारजनका साथ केदारनाथ अधिकारी | ११५ |
| ४. | केदारनाथ अधिकारीको तपसी अवस्थाको छायौचित्र | ११६ |

खण्ड 'ग'

| | | |
|----|--------------------------------|-----|
| १. | केदारनाथ अधिकारीको जन्मकुण्डली | ११७ |
| २. | केदारनाथ अधिकारीको वंशक्रम | ११८ |
| ३. | हस्तलिखित रचनाको नमुना | ११९ |

खण्ड 'घ'

| | |
|---|-----|
| कवि केदारनाथ अधिकारीलाई प्राप्त भएको सम्मानपत्रको प्रतिलिपि | १२० |
|---|-----|

खण्ड 'ङ'

| | | |
|----|--------------------------|-----|
| १. | स्रोत व्यक्तिहरूको परिचय | १२१ |
|----|--------------------------|-----|

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

| | | |
|-----|-------------------|-----|
| (क) | प्रमुख पुस्तकसूची | १२२ |
| (ख) | सहायक पुस्तकसूची | १२२ |

परिच्छेद : एक
शोधपरिचय

परिच्छेद : दुई

केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्त

परिच्छेद : तीन
केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्व

परिच्छेद : चार
केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्रा र
चरण विभाजन

परिच्छेद : पाँच

केदारनाथ अधिकारीका कृतित्वको अध्ययन

परिच्छेद : छ

उपसंहार

परिशिष्ट

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

परिच्छेद : एक

शोधपरिचय

१.१ शोधशीर्षक

प्रस्तुत शोधपत्रको शीर्षक कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन रहेको छ ।

१.२ शोधप्रयोजन

प्रस्तुत शोधकार्य त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्वारा निर्धारित मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत नेपाली विषयको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनार्थ प्रस्तुत गरिएको छ ।

१.३ विषयपरिचय

नवलपरासीको रकुवा गा.वि.स.मा वि.सं. १९९१ मा जन्मेका केदारनाथ अधिकारी भक्तिकविको रूपमा परिचित छन् । यिनका थुप्रै भक्तिभावपरक पुस्तकाकार कृति प्रकाशित छन् । भक्तिसाहित्य र साहित्येतर गरी एक दर्जन कृतिका रचयिता कवि अधिकारीले गद्य, पद्य, अनुवाद, संवाद, समस्यापूर्ति र विवेचना यी सबै क्षेत्रमा कलम चलाएका छन् र कृतिहरू प्रकाशित गरेका छन् । कवि केदारनाथ अधिकारीका प्रकाशित पुस्तकाकार कृतिहरूको सङ्ख्या बाह्र रहेको छ । बाह्रओटा कृतिहरूमध्ये ७ ओटा साहित्येतर रहेका छन् । यस आधारमा प्रस्तुत अनुसन्धानमा कवि अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययनलाई अनुसन्धानको विषय बनाइएको छ ।

कवि अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन हुन जरुरी छ । अतः यहाँ जीवनी र व्यक्तित्वका आलोकमा उनका साहित्यिक कृतिहरूको अध्ययनतर्फ प्रस्तुत शोधकार्य उन्मुख रहेको छ ।

१.४ समस्याकथन

कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन नै यस शोधको मूल समस्या हो । यससँग सम्बन्धित प्रस्तुत शोधकार्यका आधारभूत समस्या यसप्रकार छन् :

- क) कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी के-कस्तो रहेको छ ?
- ख) कवि केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्व के-कस्तो छ ?
- ग) उनको साहित्यिक लेखनयात्रा र प्रवृत्तिका चरणहरू के कस्ता रहेको छन् ?
- घ) उनका प्रमुख साहित्यिक कृतिहरूको कृतिगत साहित्यिक पहिचान के हो ?

यिनै समस्याहरूको समाधान खोज्ने कार्यतर्फ यो शोधपत्र उन्मुख रहेको छ ।

१.५ शोधकार्यका उद्देश्यहरू

नेपाली भक्तिसाहित्यमा महत्त्वपूर्ण योगदान पुऱ्याउने कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी र व्यक्तित्वका विविध पाटा, काव्ययात्रा र कवितागत योगदानको मूल्याङ्कन गर्नु नै यस शोधकार्यको प्रमुख उद्देश्य हो । प्रस्तुत शोधकार्यका निम्नलिखित विशेष उद्देश्यहरू रहेका छन् :

- क) कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्तको अध्ययन गर्नु,
- ख) कवि केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्वको अध्ययन गर्नु,
- ग) कवि केदारनाथ अधिकारीको काव्ययात्राका चरणहरूको पहिचान गर्नु,
- घ) कवि केदारनाथ अधिकारीका कृतित्वको अध्ययन गर्नु,

यिनै उद्देश्य परिपूर्तिर्तर्फ यो शोधपत्र उन्मुख रहेको छ ।

१.६ पूर्वकार्यको विवरण र समीक्षा

वि.सं. २०२० सालदेखि साहित्यसिर्जनामा लागिपरेका कवि अधिकारीका बारेमा सामान्य टीकाटिप्पणी र चर्चा परिचर्चा गरिएको छ । हालसम्म उनका बारेमा भए गरेका पूर्वकार्यहरूको कालक्रमिक विवरण यसप्रकार रहेको छ :

इन्द्रप्रसाद भट्टराईले **ब्रह्मकर्म** (२०३३) नामक पुस्तकको *सम्मतिमा* वेद, सूत्र, स्मृतिग्रन्थ, संहिता, गीता आदि ग्रन्थबाट सार भिकी केदारनाथ अधिकारीबाट प्रस्तुत **ब्रह्मकर्म** नामक कृति तयार गरिएको हो भन्ने उल्लेख गरेका छन् ।

वासुदेव शर्मा पङ्केनीले **ब्रह्मकर्म** (२०३३) नामक पुस्तकको *सम्मतिमा* केदारनाथ अधिकारीले आध्यात्मिक शास्त्रहरूमा पाइने गूढ रहस्य प्रस्तुत गरेको उल्लेख गरेका छन् ।

गुरुप्रसाद सुवेदीले **कर्तव्य दर्पण** (२०४७) *दर्पण हेर्दा* नामक भूमिकामा आजको परिप्रेक्ष्यमा धर्मप्रति रहेको जनसामान्यको दृष्टिदोषलाई उपचार गर्न केदारनाथ अधिकारीद्वारा तयार पारिएको **कर्तव्य दर्पण** उपयोगी हुने कुरा उल्लेख गरेका छन् ।

जुननाथ पण्डितले **कर्तव्य दर्पण** (२०४७) नामक पुस्तकको *शुभसम्मतिमा* केदारनाथ अधिकारीको यस पुस्तकबाट समाजले उपयोगी शिक्षा प्राप्त गरी लाभान्वित हुने टिप्पणी गरेका छन् ।

पद्मचन्द्र शर्माले **कर्तव्य दर्पण** (२०४७) को *शुभाशीषमा* आजको अराजकतावादी युगमा यसरी सोचेर काम गर्ने व्यक्तिहरूको कार्यले पृथ्वीको पापमय भार कम गर्न सहायक सिद्ध हुनेछ भन्दै केदारनाथ अधिकारीको **कर्तव्य दर्पण** उपयोगी हुने आशा गरेका छन् ।

पद्मप्रसाद शर्मा ढकालले **कर्तव्य दर्पण** (२०४७) को *शुभकामनामा* श्रुतिस्मृत्यादि अनेकौं ग्रन्थहरूको सार भिकी केदारनाथ अधिकारीद्वारा लिखित पुस्तक मानव समुदायको लागि मार्गदर्शकको रूपमा रहने बताएका छन् ।

कोमलप्रसाद शर्माले **दिव्यमधु** (२०४८) नामक पुस्तकको *सम्मतिमा* केदारनाथ अधिकारीको कृति दिव्य उपदेशजस्तै उपयोगी बन्न पुगेको कुरा औल्याएका छन् ।

गुरुप्रसाद सुवेदीले **दिव्यमधु** (२०४८) नामक पुस्तकको *सम्मतिमा* केदारनाथ अधिकारीद्वारा रचित दिव्यमधुमा मानवतावादी भल्का रहेकोले यस्तो कृतिबाट सर्वत्र फैलिएको स्वार्थीपन र अनिश्वरवादजस्ता दुर्गुण हटी सबै ज्ञानी, सद्गुणी बन्न प्रेरित गर्ने उपदेशात्मक पद्य भएकाले 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भन्ने भावनाका साथ आध्यात्मिक शान्ति फैलाउन सक्ने भाव व्यक्त गरेका छन् ।

जगन्नाथ शर्मा कँडेलले **दिव्यमधु** (२०४८) नामक पुस्तकको *दिव्यमधुको सम्बन्धमा* शीर्षक राखी लेखिएको सम्मतिमा केदारनाथ अधिकारीद्वारा रचित **दिव्यमधु** राष्ट्रिय परम्परानुसारी नैतिकता संरक्षणको प्रयासको रूपमा रचिएको र बदलिँदो राजनैतिक परिवेशमा नैतिक शिक्षा प्रसारका पूरकको रूपमा देखिएको धारणा व्यक्त गरेका छन् ।

काशीराम शर्मा शास्त्रीले **हिंसक कृषक तुलना** (२०५१) को *विद्वान्हरूको सम्मतिमा* केदारनाथ अधिकारीद्वारा लिखित **हिंसक कृषक तुलना**मा मानवलाई हिंसाबाट टाढै

राख्ने प्रेरणा दिने भएकाले सबैमा सदबुद्धि प्रदान गर्न उपयोगी हुने विचार व्यक्त गरेका छन् ।

कोमलप्रसाद शर्माले **हिंसक कृषक तुलना** (२०५१) को *विद्वान्हरूको सम्मतिमा* केदारनाथ अधिकारीले **हिंसक कृषक तुलना** प्रतीकात्मक अर्थमा हलोलार्ई अगि सारेर निरापराध प्राणीलाई हत्या गर्ने कामको भर्त्सना गरिएको उल्लेख गरेका छन् ।

पूर्णचन्द्र दुङ्गेलले **हिंसक कृषक तुलना** (२०५१) को *विद्वान्हरूको सम्मतिमा* जीवोजीवस्य जीवनम्' को तात्पर्य स्पष्ट पार्न केदारनाथ अधिकारीको **हिंसक कृषक तुलना** नामक पुस्तक सफल रहेको र मानिसले त्यसबाट उपदेश प्राप्त गर्ने उपयोगी कृति भएको ठहर गरेका छन् ।

गोविन्दप्रसाद उपाध्यायले **अष्टावक्रगीता** (२०५०) को *मन्तव्यमा* केदारनाथ अधिकारीले सबैले बुझ्ने सरल भाषामा सो पुस्तकको अनुवाद गरेकाले यसबाट सबैको हित हुने बताएका छन् ।

गौरीशङ्कर वशिष्ठले **अष्टावक्रगीता** (२०५०) को *एक विचार* शीर्षकमा केदारनाथ अधिकारीद्वारा अनुदित पुस्तक सरल भाषामा भएकाले जनसामान्यको हितमा भएको विचार व्यक्त गरेका छन् ।

स्वामी प्रपन्नाचार्यले **हिंसक कृषक तुलना** (२०५१) को *विद्वान्हरूको सम्मतिमा* केदारनाथ अधिकारीको प्रस्तुत कृति समयसापेक्ष रचना भएकोले यसबाट समाजले ठूलो लाभ उठाउन सक्ने र राष्ट्रसेवामा टेवा पुऱ्याउने आशा लिएका छन् ।

जगन्नाथ शर्मा कँडेलले **आयुर्वेद सार दर्पण** (२०५६) को *सम्मति* शीर्षकमा केदारनाथ अधिकारीको **आयुर्वेद सार दर्पण** प्रकाशनबाट नेपाली भाषाको प्राचीन रूपको प्रकाशनका साथै जडीबुटीद्वारा औषधी गर्ने परम्पराको प्रचारसमेत हुन सक्ने कुरा उल्लेख गरेका छन् ।

स्वामी प्रपन्नाचार्यले केदारनाथ अधिकारीद्वारा सङ्कलित **आयुर्वेद सार दर्पण** (२०५६) को *विचार* शीर्षकमा प्रस्तुत पुस्तकको प्रकाशनबाट आफ्नै क्षेत्रमा उब्जिएका जडीबुटी चिनेर उत्पादन, उपभोग र सेवन गर्न अत्यन्त उपयोगी रहेको धारणा व्यक्त गरेका छन् ।

इन्द्रप्रसाद भट्टराईले **तिलक रहस्य दर्पण** (२०६०) को *तिलक रहस्य दर्पण* शीर्षकमा केदारनाथ अधिकारीद्वारा रचित कृतिमा आध्यात्मिकतामा अभिरुचि राख्नेहरूका लागि पथ-प्रदर्शक र कर्तव्याकर्तव्य बोध गराउनमा यो पुस्तक एउटा दर्पण बन्ने उल्लेख गरेका छन् ।

गोविन्दप्रसाद उपाध्यायले **तिलक रहस्य दर्पण** (२०६०) को *दर्पण हेर्दा* शीर्षकमा केदारनाथ अधिकारीद्वारा रचित कृतिमा हालसम्म प्रकाशमा आउन नसकेको प्राचीन पद्धति प्रकाशमा ल्याएकाले यसबाट भवार्णव पार तर्नेछन् भनी उल्लेख गरेका छन् ।

हरिप्रसाद उपाध्यायले **तिलक रहस्य दर्पण** (२०६०) को *शुभकामना*मा केदारनाथ अधिकारीद्वारा लिखित पुस्तक प्रकाशन एउटा परोपकारी कार्य भएको उल्लेख गरेका छन् ।

भूपेन्द्र शर्मा भट्टराईले **नवलपरासीका साहित्यिक व्यक्ति र कृति** (२०६२) मा कवि केदारनाथ अधिकारीको **दिव्यमधु** कविता सङ्ग्रहको उल्लेख गर्दै नवलपरासीको साहित्यिक व्यक्तित्वको रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

भगवती अर्याल (पाण्डे)ले **नवलपरासीको साहित्यिक गतिविधि** (२०६३) मा कवि केदारनाथ अधिकारीले समाजमा प्राचीन राष्ट्रिय परम्पराअनुसार नैतिकताको संरक्षण गर्ने हेतुले **दिव्यमधु**को रचना गरेको र कवि अधिकारी रचनात्मक मात्र नभै अनुवादात्मक व्यक्तित्वसमेत रहेको कुरा **अष्टावक्रगीता**को अनुवादबाट प्रमाणित भएको कुरा उल्लेख गर्दै कविको रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

प्रा.डा. नारायणप्रसाद खनालले **चतुर्विंशति-रत्न-दिपीका** (२०६८) को *शुभ सम्मति* शीर्षकमा केदारनाथ अधिकारीलाई वर्तमान समयमा वैदिक संस्कृति र संस्कारको पुनरुद्धार कार्यमा लागेका आदरणीय लेखक भनी टिप्पणी गरेका छन् ।

भूपेन्द्र शर्मा भट्टराई (गण्डर्षि) ले **सुदामाको कनिका** (२०६८) को *भोग र मोक्षको एउटै बाटो : सुदामाको कनिका* शीर्षकमा प्रस्तुत कृति भक्ति, ज्ञान र वैराग्य मिश्रित पूर्वीय जीवनदर्शनको घनीभूत सारसङ्क्षेप हो भनेका छन् ।

शम्भुप्रसाद उपाध्याय भण्डारीले **सुदामाको कनिका** (२०६८) को कनिकामा *कनिकाकै कुरा* शीर्षकमा यसमा समाविष्ट विषयहरू ज्ञानवर्द्धक, शिक्षाप्रद र कल्याणकारी रहेको कुरा औल्याएका छन् ।

यसरी कवि केदारनाथ अधिकारीका कवितागत योगदानका बारेमा विभिन्न व्यक्तिहरूले सामान्य चर्चा-परिचर्चा गरेको पाइए पनि उनको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतिहरूको समग्र अध्ययन र मूल्याङ्कन गर्ने काम भएको छैन । प्रस्तुत शोधमा कवि अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको समग्र अध्ययन गरिएको छ ।

१.७ शोधकार्यको औचित्य र महत्त्व

चार दशक लामो समयसम्मको साहित्यिक यात्रा पार गरिसकेका कवि केदारनाथ अधिकारीको विषयमा माथि १.६ मा उल्लिखित फाटफुट चर्चाबाहेक सुव्यवस्थित रूपमा अध्ययन अनुसन्धान भएको पाइँदैन । त्यसैले उनको विषयमा सर्वप्रथम व्यवस्थित र विस्तृत रूपमा गरिने अध्ययन-अनुसन्धान आफैमा औचित्यपूर्ण रहने देखिन्छ । साथै नेपाली साहित्यको कविता विधाको साधनामा निरन्तर लागि रहेका कुशल स्रष्टा अधिकारीको जीवनी र व्यक्तित्वको अध्ययन महत्त्वपूर्ण देखा पर्दछ भने कवि अधिकारीको विषयमा जानकारी लिन चाहने सबैका लागि प्रस्तुत कार्य निकै लाभदायी रहेको छ ।

१.८ प्राक्कल्पना

यस शोधकार्यका निम्ति निम्नलिखित प्राक्कल्पनाको परीक्षण गरिएको छ :

- क) कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी सामान्य उतार चढावयुक्त रहेको छ ।
- ख) कवि अधिकारी सामाजिक क्षेत्रमा सरल, निस्वार्थ र भद्र व्यक्तित्वका रूपमा चिनिन्छन् ।
- ग) केदारनाथ अधिकारी काव्ययात्रा चार दशकभन्दा बढीको छ ।
- घ) साहित्यिक सिर्जनाका रूपमा कविताकाव्य र साहित्येतर विधामा समेत उनका कृतिहरू प्रकाशित छन् ।
- ङ) कवि अधिकारीका काव्यहरूको मुख्य प्रवृत्ति भक्तिभाव रहेको छ ।
- च) नेपाली साहित्यमा भक्तिभाव र आध्यात्मिक चिन्तनलाई उर्जाशील तुल्याउनमा कवि अधिकारीको योगदान रहेको छ ।

यिनै प्राक्कल्पनाहरूको परिपूर्तिर्तर्फ यो शोध केन्द्रित रहेको छ ।

१.९ शोधकार्यको सीमाङ्कन

प्रस्तुत शोधपत्रमा कवि केदारनाथ अधिकारीको सामान्य जीवनी र व्यक्तित्वको परिचय दिदै उनका प्रकाशित पाँचओटा साहित्यिक कविता काव्यको व्यवस्थित अध्ययन गरिएको छ । यस क्रममा उनका कवितामा पाइने शिल्पविधान र भक्तिभावविधानजस्ता कवितात्मक संरचनाको आधारभूत विश्लेषण गरिएको छ । उनका कविता रचना र कवित्वप्रवृत्तिका साथै साहित्यिक योगदानजस्ता महत्त्वपूर्ण विषयहरूको सूक्ष्म अध्ययन गरिएको छ र अन्य विषयहरू भने यस अध्ययनको सीमाभित्र परेका छैनन् । साथै केदारनाथका साहित्यिक कृतिहरूको मात्र विश्लेषण गरिएको छ र अन्य कृतिहरूको परिचय मात्र दिनु यस शोधको सीमा रहेको छ ।

१.१० सामग्री सङ्कलन र शोधविधि

सामग्री सङ्कलनका क्रममा पुस्तकालयीय अध्ययन विधिको उपयोग गरी सम्बन्धित पुस्तकहरूको अध्ययन गरिएको छ । अनुसन्धेय व्यक्ति जीवितै रहेको हुँदा उनीसँग प्रत्यक्ष भेटि लिखित र मौखिक रूपमा आवश्यक जानकारी लिनुका साथै उनका परिवार निकटतम व्यक्ति, मित्र तथा विभिन्न विद्वान्हरूसँग प्रत्यक्ष सम्पर्क गरी क्षेत्रीय विधि अपनाई सामग्री सङ्कलन गरिएको छ । सामग्रीको अध्ययनको क्रममा प्रभावपरक र समाजपरक समालोचनालाई आधार बनाइएको छ भने कतिपय कृतिको विवेचनामा कृतिपरक समालोचनालाई समेत प्रयोगमा ल्याइएको छ ।

१.११ सैद्धान्तिक ढाँचा

प्रस्तुत शोधकार्यअन्तर्गत जीवनी खण्डमा स्वयम् अनुसन्धेय व्यक्तिसँगको अन्तर्वाता र भेटघाटलाई मूल आधार मानिएको छ भने व्यक्तित्व खण्डमा अनुसन्धेय व्यक्तिका व्यक्तित्वका विभिन्न पाटाहरूलाई केलाइएको छ । कृतिहरूको अध्ययनका लागि कविताका तत्त्वहरू संरचना, भावविधान, चरित्रविधान, परिवेश, उद्देश्य, कथनपद्धति, भाषाशैली, लयविधान, अलङ्कारविधान र शीर्षकविधानलाई मूल आधार बनाइएको छ ।

१.१२ शोधपत्रको रूपरेखा

यस शोधपत्रलाई सङ्गठित र व्यवस्थित रूपमा प्रस्तुत गर्न विभिन्न छ परिच्छेदमा यसरी विभाजन गरिएको छ :

पहिलो परिच्छेद : शोधपत्रको परिचय

यस शीर्षकमा शोधपत्रको परिचय प्रस्तुत गरिएको छ । यसमा शोधपरिचयअन्तर्गत शोधशीर्षक, शोधप्रयोजन, विषयपरिचय, समस्याकथन, शोधकार्यको उद्देश्य, पूर्वकार्यको विवरण, प्राक्कल्पना, शोधको औचित्य र महत्त्व, सीमाङ्कन, सामग्री सङ्कलन र शोधविधि तथा शोधपत्रको रूपरेखा रहेका छन् ।

दोस्रो परिच्छेद : केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्त

यस परिच्छेदमा केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्त तथा जीवनका विविध र पारिवारिक पृष्ठभूमिका पक्षहरूलाई प्रस्तुत गरिएको छ । यस खण्डमा अधिकारीको जन्म र जन्मस्थान, वंश परम्परा र पारिवारिक पृष्ठभूमि, बाल्यकाल र संस्कार, शिक्षादीक्षा, पारिवारिक स्थिति र आर्थिक अवस्था, मानसिक आघातका क्षणहरू, रुचि र स्वभाव, दिनचर्या र भ्रमण, लेखनप्रेरणा र प्रभाव, साहित्यसिर्जना र प्रकाशन, पुरस्कार तथा सम्मान, जीवनदर्शन र साहित्यिकरचनामा त्यसको प्रभावको चर्चा गरिएको छ ।

तेस्रो परिच्छेद : केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्व

यस परिच्छेदमा केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्वका विविध पाटाहरूको चर्चा गरिएको छ । यसअन्तर्गत उनको स्वभाव, आन्तरिक तथा बाह्य व्यक्तित्व, सामाजिक व्यक्तित्व, बहुभाषिक व्यक्तित्व, भागवतवाचक/कर्मकाण्डी व्यक्तित्व, योगाभ्यासी व्यक्तित्व, राजनीतिक व्यक्तित्व, भाषा संशोधक तथा परिवर्द्धक व्यक्तित्व, वाङ्मयरक्षक व्यक्तित्व, भजनगीतका रचनाकार व्यक्तित्व, अनुवादक व्यक्तित्व र साहित्यिक व्यक्तित्वको चर्चा प्रस्तुत गरिएको छ ।

चौथो परिच्छेद : केदारनाथ अधिकारीको साहित्यिक यात्रा र कृतिको वर्गीकरण

यस परिच्छेदमा केदारनाथ अधिकारीको साहित्यिक प्रेरणा र प्रभावदेखि लेखनयात्रा र चरण विभाजनको आधार र चरण विभाजनको विस्तृत चर्चा गरिएको छ ।

पाँचौँ परिच्छेद : केदारनाथ अधिकारीको कृतित्वको अध्ययन

यस परिच्छेदमा केदारनाथ अधिकारीको कृतित्वको अध्ययन गरिएको छ । मूलतः सिर्जनात्मक पुस्तककार कृति कर्तव्य दर्पण (२०४७), दिव्यमधु (२०४८), आनन्ददीपिका (

२०५१), संसारदेखि सारै लाग्छ उराठ (२०५८) र सुदामाको कनिका (२०६८) को अध्ययन, विश्लेषण र मूल्याङ्कन गरिएको छ ।

छैठौं परिच्छेद : उपसंहार

यस खण्डमा अधिल्ला परिच्छेदमा चर्चा गरिएका विभिन्न परिच्छेदहरूको निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ साथै अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको शोधसार तथा मूल्याङ्कन गरिएको छ ।

शोधपत्रको अन्तिम खण्ड सन्दर्भसामग्री खण्डको रूपमा रहेको छ । यस खण्डअन्तर्गत साहित्येतर कृतिहरूको परिचय, शोध नायकको विभिन्न अवस्थाको छायाँचित्र, शोधनायकसहित परिवारको छायाँचित्र, जन्मकुण्डली, अधिकारी वंशक्रम, हस्तलेखनको नमुना, शोधमा प्रयोग भएका सन्दर्भग्रन्थहरूको सूची, स्रोतव्यक्तिहरूको परिचयलाई परिशिष्टमा समावेश गरिएको छ । यसरी आन्तरिक र बाह्य संरचनाका साथै पूर्वभाग, मध्यभाग र अन्त्य भागसमेत समावेश गरी सर्वाङ्गपूर्ण शोधपत्र प्रस्तुत गरिएको छ ।

परिच्छेद : दुई

केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्त

२.१ विषयप्रवेश

केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्तको अध्ययन जन्म र जन्मस्थान, वंशपरम्परा र पारिवारिक पृष्ठभूमि, बाल्यकाल र संस्कार, शिक्षादीक्षा, पारिवारिक स्थिति र आर्थिक अवस्था, मानसिक आघातका क्षणहरू, रुचि र स्वभाव, दिनचर्या र भ्रमण, लेखनप्रेरणा र प्रभाव, साहित्यसिर्जना र प्रकाशन, पुरस्कार तथा सम्मान, जीवनदर्शन र साहित्यरचनामा त्यसको प्रभावका आधारमा केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्तको अध्ययन गरिएको छ ।

२.२ जन्म र जन्मस्थान

केदारनाथ अधिकारीको जन्म पिता स्व.पं. छविलाल अधिकारी र माता स्व. पद्मप्रभा अधिकारीका पाँच छोरा र एक छोरीमध्ये ज्येष्ठ सुपुत्रका रूपमा वि.सं. १९९१ साल ज्येष्ठ ४ गतेका दिन लुम्बिनी अञ्चल, नवलपरासी जिल्ला, रकुवा गा.वि.स. वडा नं. ५ ओटाडमा भएको हो । पुनर्वसु नक्षत्र, मिथुन राशिमा जन्मेका हुँदा उनको नाम केदारनाथ राखिएको थियो (जन्मकुण्डली, परिशिष्ट, पृ. ११५) ।

२.३ वंशपरम्परा र पारिवारिक पृष्ठभूमि

कश्यप गोत्रीय अधिकारी थरका मानिसहरू नेपाल तथा भारतका विभिन्न भूभागमा बस्दै आएका छन् । यी अधिकारीहरूको प्राचीन थलो भारतको उत्तरप्रदेश राज्य, फर्रुखाबाद जिल्लाको कान्यकुब्ज मानिएको छ (शर्मा, २०५८: १७५) । शान्तिपूर्वक जीवन बिताउन चौधौं शताब्दीतिर उत्तरी पहाडी क्षेत्रतर्फ लागेका अधिकारीहरू भारतको अलनापुर र त्यसपछि खारि प्रदेश र कुमाउँ गढवाल हुँदै हुम्लामुम्ला आई बसेका थिए । हालसम्म प्राप्त अभिलेखको आधारमा चिन्तामणि अधिकारी वंशका मूल पुरुष हुन् । उनका एक मात्र सन्तान सेमलाल हुन् । त्यहाँबाट पनि उनका केही सन्तानहरू कास्कीको अस्थाम आई बसेका तीमध्ये केदारनाथका हजुरबाबु हिरण्यलाल अधिकारी लम्जुङको दुराडाँडामा आई बसेका थिए । उनी चिन्तामणिका नाति र केदारनाथका हजुरबाबु हुन् (अधिकारी वंशक्रम परिशिष्ट, पृ.११६.) । केही दशक दुराडाँडामा बिताएपछि केदारनाथका पिता छविलाल त्यहाँबाट

नवलपरासीको रकुवा गा.वि.स.मा आई बसोबास गरेका हुन् (अधिकारी, २०६७: १७१)। हाल उनी नवलपरासीको अग्यौली गा.वि.स. वडा नं. ९ तीनधारे (शान्तिचोक, डण्डा)मा आफ्ना एक मात्र सुपुत्र ओमप्रकाश अधिकारीका साथ बसोबास गरिरहेका छन्।

सामान्य कृषि व्यवसाय र मध्यम आर्थिक अवस्थाका उनका पिता छविलाल अधिकारी पण्डित थिए (पाण्डे, खुशीलाल बाट प्राप्त जानकारी परिशिष्ट पृ. १२१)। छविलाल शान्त स्वभावका धार्मिक प्रकृतिका व्यक्ति थिए। आफ्ना पितासँगको सम्पर्कमा आइरहने धार्मिक व्यक्तिहरू, पण्डित, पुरोहित तथा त्यति बेलाका शिक्षित व्यक्तिहरूसँगको भेटघाट र सम्पर्कको प्रभाव कवि अधिकारीको बालक तथा किशोर जीवनमा पर्नु स्वाभाविक थियो।

२.४ बाल्यकाल र संस्कार

केदारनाथ अधिकारीको बाल्यकाल रकुवा गाउँमा बित्यो। रकुवा गाउँका डाँडाकाँडा, खोलानाला र पाखापखेरा र चउरहरूमा उकाली ओराली गर्दै आफ्ना साथीभाइका साथ उनले आफ्नो बाल्यकाल बिताए। सातै वर्षको उमेरमा उनको ब्रतबन्ध भएको थियो।

२.५ शिक्षादीक्षा

केदारनाथ अधिकारीले पाँच वर्षको उमेरमा आफ्नै पिताजीबाट घरैमा अक्षरारम्भ गरेका थिए। सानैदेखि नै पण्डित पिताको प्रभाव उनमा पर्नु स्वाभाविक थियो। त्यसैले उनी परम्परागत संस्कृत शिक्षातर्फ आकर्षित हुँदै गए। नौदेखि एघार वर्षको उमेरमा उनी कास्की पोखराको विन्ध्यवासिनी स्थित संस्कृत पाठशालामा अध्ययनरत रहे। १३ वर्षको उमेरमा उनले तनहुँको किहुँमा गई गुरुहरूको सम्पर्कमा रहेर केही समय अनौपचारिक अध्ययन गरे (कवि अधिकारीबाट प्राप्त जानकारी)। उक्त समयमा जहाँकहीं औपचारिक शिक्षा ग्रहणको सुलभ व्यवस्था थिएन। अझ त्यसैमा पिता छविलाल अधिकारीको वि.सं. २००८ सालमा ५९ वर्षको उमेरमा असामयिक निधन भएका कारण पारिवारिक जिम्मेवारी आफ्नै काँधमा पर्न आएकाले पनि केदारनाथ अधिकारीको शिक्षाआर्जन स्वाध्ययन, स्वचिन्तन र अनौपचारिक रूपमा नै सीमित रह्यो।

२.६ पारिवारिक स्थिति र आर्थिक अवस्था

केदारनाथ अधिकारीको विवाह वि.सं. २००५ सालमा रुचाड गा.वि.स. वडा नं. ९ दसडाँडा (दशरथ डाँडा) निवासी नोतलाल पराजुली र दुतला पराजुलीका ज्येष्ठ सुपुत्री

पद्मकुमारीका साथ सम्पन्न भएको थियो । वि.सं. २०१८ सालमा प्रथम सन्तानका रूपमा उनले पुत्रीलाभ गरेका थिए । हाल उनका एक छोरी, एक छोरा, दुई नाति, दुई नातिनीहरू रहेका छन् । केदारनाथ अधिकारीको पैतृक सम्पत्ति पाँच भाइमा अंशवन्डा गर्नुपरेकाले आर्थिक अवस्था पहिले मध्यम खालको रहेको थियो र हाल छोरा बुहारीको जागिरका कारणले उनको आर्थिक अवस्था राम्रो रहेको छ (सिग्देल, रामप्रसादबाट प्राप्त जानकारी, परिशिष्ट पृ. १२१) । पत्नी, छोरा तथा बुहारीको असल व्यवहारबाट उनको पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक रहेको थाहा हुन्छ । उनको परिवारमा रहेको पारिवारिक वातावरण आदर्श, सद्भावपूर्ण र अनुकरणीय देखिन्छ ।

२.७ मानसिक आघातका क्षणहरू

केदारनाथ अधिकारी वि.सं. २०२० सालमा शीतलामाईको प्रकोपबाट पीडित भई मरणासन्न अवस्थामा पुगेका थिए । त्यो अवस्थाले सुरूमा मानसिक आघात उत्पन्न गराएको भए पनि एक दिन सपनामा सेता वस्त्रधारी देवकन्याहरू आएर उनैका सामुन्ने व्रत पूजा गर्न लाग्दा एउटीले उनलाई छुरी प्रहार गर्न खोज्दा अरूले छेकेर बचाएको र पूजा समाप्तिपछि पनि प्रसादरूपी अमृत केदारनाथलाई दिने वा नदिने भन्ने उनीहरूमा विवाद भएको र यही विवादका क्रममा अमृत उछिडिएर बिरामी परेका केदारनाथका मुखमा पर्न गएकाले सपनामा प्राप्त अमृतको प्रभावबाट शीघ्र स्वास्थ्यलाभ र अन्तर्हृदयबाट पहिलो पटक कविताहरू प्रस्फुटन भएको हो भन्ने उनमा विश्वास रहेको छ । वि.सं. २०२० को शीतलामाईको प्रकोपको पीडा खपेको सात वर्षपछि २०२७ सालमा आमा पद्मप्रभा अधिकारीको मृत्युले पनि उनमा थप पारिवारिक जिम्मेवारीका साथै मातृशोकको पीडा बेहोर्नु परेको थियो ।

२.८ रुचि र स्वभाव

हरेक व्यक्तिमा आफ्नै प्रकारको रुचि र स्वभाव हुन्छ । मान्छेको रुचि र स्वभावलाई हरेक कुराले प्रभाव पारेको हुन्छ । केदारनाथ अधिकारीको जीवनमा सामाजिक वातावरण, साथीभाइसँगको उठबस, मान्यजनको व्यवहार र शिक्षादीक्षा आदिले प्रभाव पारेको छ । उनले सानैदेखि स्वाध्ययन, मनन र समाजसेवामा रुचि राखेको देखिन्छ । उनी साहित्यसिर्जना गर्न, धार्मिक ग्रन्थहरू पढ्न मन पराउँथे । बिहान सबेरै उठेर नित्य स्नान गर्ने, पाठ पूजा गर्ने, समय मिलेमा साहित्य रचना गर्ने, आफूभन्दा सानासँग पनि मित्रवत्

व्यवहार गर्ने उनको स्वभाव छ (सिग्देल, यज्ञप्रसादबाट प्राप्त जानकारी, परिशिष्ट पृ.१२१) । सामान्य पोसाक, सात्त्विक, शाकाहारी किसिमको खानपिन र सरल किसिमको व्यवहार मन पराउँछन् । कुसङ्गतबाट टाढा रहने र तडकभडक मन नपराउने स्वभाव उनमा देखिन्छ । साहित्यसिर्जनाद्वारा सामाजिक विकृति, विसङ्गतिलाई प्रस्तुत गर्नु, राष्ट्रियता र साहित्यको चिन्तनमा आफ्नो जीवन समर्पण गर्नमा उनको रुचि देखिन्छ ।

केदारनाथ अधिकारी नरम र मिजासिलो स्वभावका व्यक्ति हुन् । हाँसेर बोल्ने, शिष्ट एवम् मर्यादित शब्दको प्रयोग गर्ने, सहृदयी एवम् मिलनसार स्वभाव उनमा देखिन्छ । कसैप्रति डाह, ईर्ष्या र अर्कालाई होच्याउने, उकास्ने स्वभाव उनमा छैन । उनमा सत्यतथ्यमा आधारित भई बोल्ने हक्की स्वभाव रहेको छ (सिग्देल, चन्द्रप्रसादबाट प्राप्त जानकारी, परिशिष्ट पृ.१२१) । सबै मानवप्रति हेर्ने दृष्टिकोण समान हुनुपर्छ भन्ने मान्यता उनमा रहेको छ । महिला र पुरुषप्रति समान व्यवहार हुनुपर्छ भन्ने भावनाको विकास उनको मनमस्तिष्कमा रहेको देखिन्छ । सङ्क्षेपमा अध्ययन, मनन र सामाजिक सेवा, धार्मिकता, सात्त्विकता उनको रुचिक्षेत्र हो भने सरल, सहृदयी, मिलनसार र परोपकारी उनको स्वभावगत चिनारी हो (पराजुली, ऋषिरामबाट प्राप्त जानकारी, परिशिष्ट पृ.१२१) ।

२.९ दिनचर्या र भ्रमण

केदारनाथ अधिकारी चार घडी रात छँदै उठेर नियमित स्नान, ध्यान र पाठपूजा गर्छन् । बिहानको चियापानपछि अध्ययन-लेखन र इष्टमित्रहरूसँग भेटघाट तथा वार्तालापमा संलग्न हुन्छन् । अति आवश्यक परेमा कहिलेकाहीं उनी पूजाआजा वा धार्मिक कृत्यहरू सम्पादन गर्न जान्छन् । साँझ पुनः सन्ध्याबन्दना आदि गरेर समयमै आराम गर्ने दिनचर्या उनको देखिन्छ ।

केदारनाथ अधिकारी धार्मिक क्षेत्रहरूको पनि भ्रमण गरेका छन् । उनले स्वदेशका प्रसिद्ध स्थलहरू त्रिवेणी, पशुपतिक्षेत्र, देवघाट, रिडी, राम्दी, लुम्बिनी आदि क्षेत्रमा पनि उनी पुगेका छन् । उनले भारतका प्रसिद्ध स्थलहरू हरिद्वार, ऋषिकेश, बद्रीनाथ, केदारनाथ, बनारस क्षेत्रहरूमा पुगेको बताउँछन् । यस्ता भ्रमणले उनको जीवनपद्धतिमा समेत प्रभाव परेको अनुभव गर्न सकिन्छ ।

२.१० लेखनप्रेरणा र प्रभाव

केदारनाथ अधिकारीका पिता पं. छविलाल अधिकारीले लेखनाथ पौड्यालद्वारा रचित 'बुद्धिविनोद'का समस्यामूलक प्रश्नहरूको उत्तर लेखेका थिए । पिता छविलाल अधिकारीका प्रश्नोत्तरात्मक कविताहरू, भानुभक्तको रामायण, लेखनाथ पौड्यालका काव्यकृतिहरू, महाभारत, पुराण, स्मृतिग्रन्थ, गीता, श्रीमद्भागवत तथा अन्य धार्मिक पौराणिक ग्रन्थहरूको अध्ययन-मनन तथा आफ्ना पिताको लेखनकार्यबाट समेत प्रभावित भई कवि केदारनाथ अधिकारी लेखन र सिर्जनातर्फ अभिप्रेरित भएको देखिन्छ (अधिकारी, ओमप्रकाशबाट प्राप्त जानकारी, परिशिष्ट पृ.१२१) । खास साहित्यसर्जक वा कुनै खास व्यक्तिविशेषको प्रेरणा-प्रभाव प्राप्त गर्न र साहित्यिक सङ्गत प्राप्त गर्न नसके पनि आफ्ना पिताको प्रेरणा र आफ्नै चिन्तन-मनन, अध्ययनबाट उनी साहित्यसिर्जनातर्फ अभिमुख र अभिप्रेरित बनेको देखिन्छ ।

२.११ साहित्यसिर्जना र प्रकाशन

वि.सं. २०२० सालदेखि लेख्न थालेका केदारनाथ अधिकारीका हाल १२ ओटा पुस्तकाकार कृतिहरू प्रकाशित छन् । गद्य, पद्य, अनुवाद, संवाद, समस्यापूर्ति र विवेचना गरी विभिन्न विधामा उनले कलम चलाएका छन् ।

केदारनाथ अधिकारीको प्रथम प्रकाशित कृति **ब्रह्मकर्म** (२०३३) हो । यसपछि **कर्तव्य दर्पण** (२०४७), **दिव्यमधु** (२०४८), **श्राद्धपद्धति** (२०४९), **अष्टावक्रगीता** (पद्यानुवाद) (२०५०), **आनन्ददीपिका** (२०५१), **हिंसक कृषक तुलना** (२०५१), **आयुर्वेद सार दर्पण** (२०५६), **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ** (२०५८), **तिलक रहस्य दर्पण** (२०६०), **सुदामाको कनिका** (२०६८) र **चतुर्विंशति-रत्न-दीपिका** (२०६८) प्रकाशित छन् ।

२.१२ पुरस्कार तथा सम्मान

नेपाली भक्तिसाहित्यको क्षेत्रमा धेरै कृतिहरू प्रकाशित गरी उल्लेखनीय काम गरेकाले उनलाई त्रिवेणी साहित्य परिषद् नवलपरासीबाट वि.सं. २०६८ मा सम्मानपत्र र नगद पुरस्कार प्राप्त भएको छ ।

२.१३ जीवनदर्शन र साहित्यरचनामा त्यसको प्रभाव

ईश्वरभक्त, अध्यात्मचिन्तक, कर्तव्यनिष्ठ, नैतिक र धार्मिक प्रवृत्तिका केदारनाथ अधिकारीले 'परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्' भन्ने कथनमा आधारित जीवनदर्शनलाई मूलमन्त्र बनाएका छन् । यसको प्रभाव उनका रचनाहरूमा परेको छ । उनका साहित्यिक रचनाहरू यही जीवन आदर्शहरूबाट प्रभावित छन् ।

२.१४ निष्कर्ष

केदारनाथ अधिकारीको जन्म वि.सं. १९९१ ज्येष्ठ ४ गते नवलपरासीको रकुवा गा.वि.सं. वडा नं. ५ ओटाडमा भएको हो । उनका पुर्खाहरू कास्कीको अस्थामबाट लमजुङको दुराडाँडा हुँदै नवलपरासीको ओटाडमा आई बसोबास गरेका थिए । ५ वर्षको उमेरमा अक्षरारम्भ गरेका केदारनाथ अधिकारीको बाल्यकाल ओटाडमा नै बित्यो । कास्की पोखराको विन्ध्यवासिनी संस्कृत पाठशालामा उनले प्रारम्भिक शिक्षा आर्जन गरे । १३ वर्षको उमेरमा तनहुँको किहुँमा गुरुहरूको सम्पर्कमा रही उनले आफ्नो अनौपचारिक शिक्षा अगाडि बढाए । उनी पण्डित पिता छविलालको प्रेरणाबाट संस्कृतशिक्षातर्फ उन्मुख भएका हुन् । वि.सं. २००५ सालमा चौध वर्षको उमेरमा केदारनाथको विवाह पद्मकुमारीसँग भएको हो । उनका एक छोरी, एक छोरा, दुई नाति र दुई नातिनीहरू रहेका छन् । सुरुमा मध्यम आर्थिक अवस्थाका केदारनाथको हालको आर्थिक अवस्था सुदृढ र पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक रहेको थाहा हुन्छ । सात्त्विक र शाकाहारी केदारनाथ अधिकारी सरल व्यवहार मन पराउँछन् । वि.सं. २०२० सालदेखि साहित्यसिर्जनामा लागेका केदारनाथ अधिकारीका हालसम्म १२ ओटा पुस्तकाकार कृतिहरू प्रकाशित छन् । उनका कृतिहरूमा मूल रूपमा मानवता, ईश्वरभक्ति, नैतिकतामा आधारित अध्यात्मचिन्तनका भाव भेटिन्छ ।

परिच्छेद : तीन

केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्व

३.१ विषयप्रवेश

केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्वको अध्ययन उनको स्वभाव, आन्तरिक तथा बाह्य व्यक्तित्व, सामाजिक, बहुभाषिक, भागवतवाचक/कर्मकाण्डी, योगाभ्यासी, राजनीतिक, भाषा संशोधक तथा परिवर्द्धक, वाङ्मय रक्षक, साहित्यिक, टिप्पणीमूलक संवादकार, अनुवादक व्यक्तित्व तथा जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्य सिर्जनाबीच आन्तरिक सामञ्जस्यका आधारमा अध्ययन गरिएको छ ।

३.२ स्वभाव

शान्त र सरल स्वभावका केदारनाथ अधिकारी विचार र चेतनाका दृष्टिले अध्यात्मवादी रहेका छन् । अध्यात्मप्रेरित उनको व्यवहारमा निश्छलता छ । उनी सहयोगी र सरल सामाजिक व्यक्तित्वका रूपमा चिनिन्छन् । बोल्दा र आफ्नो कार्य सम्पन्न गर्दा उनी अरूलाई कुनै किसिमले असजिलो नहोस् भन्ने चाहन्छन् ।

३.३ आन्तरिक तथा बाह्य व्यक्तित्व

कवि अधिकारी सानै उमेरदेखि चिन्तनशील र भावुक स्वभावका रहेका थिए । उनी प्रकृतिप्रेमी छन् । उनले एकान्त वातावरण मन पराउँछन् । एकान्तमा धार्मिक सुख, शान्ति र सन्तोष प्राप्त गर्न सकिन्छ भन्ने कुरामा उनी विश्वास राख्छन् । उनी पटक-पटक गरी करिब डेढ वर्ष कालीगण्डकी किनारको एकान्त गुफामा एकलै बसेर तपसीका रूपमा आध्यात्मसाधनामा लागेका थिए (अधिकारी, यज्ञप्रसादबाट प्राप्त जानकारी, परिशिष्ट पृ.१२१) । अध्यात्मसाधना, धार्मिक पौराणिक ग्रन्थहरूको अध्ययन-मनन र चिन्तनबाट उनको तपसी तथा आध्यात्मिक व्यक्तित्व सबल बनेको देखिन्छ । यसको प्रभाव उनको व्यक्तिगत दिनचर्या, सामाजिक जीवन र साहित्यसिर्जनामा परेको पाइन्छ ।

व्यक्तिमा रहेको शारीरिक बनोट, ढाँचा, स्वभाव, आचरण, बोलीचाली, रुचि र प्रकृतिले व्यक्तित्व निर्माण गरेको हुन्छ । शारीरिक दृष्टिले हेर्दा केदारनाथ अधिकारी पाँच फिट दुई इन्च अग्ला, मझौला आकृतिका आकर्षक चेहरा, हँसिलो अनुहार, मिलेका

दन्तपङ्क्ति र गहुँगोरो वर्ण भएका व्यक्ति हुन् । पिताको मृत्युपछि टोपी नलगाएको बताउने अधिकारीले नीलो वा अन्य रातो, हरियो, कालो रडका वस्त्रहरू प्रयोग नगरी सेतो, पहेंलो (गेरु रडका) कुर्ता, धोती, कछाड र रामनामी वा पहेंलो गम्छा फेटाको रूपमा प्रयोग गर्दछन् । घरमा रहँदा वा बाहिर निस्कँदा उनका परिधानबाट नै उनी धार्मिक र सात्त्विक प्रवृत्तिका हुन् भन्ने सहजै अनुमान गर्न सकिन्छ ।

३.४ सामाजिक व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारीको समाजसेवाप्रतिको चासो बाल्यकालीन अवस्थाबाट विकसित भएको पाइन्छ । उनी सामाजिक व्यक्ति पनि हुन् । समाजसेवाका क्षेत्रमा समेत उनको रुचि देखिन्छ । विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाका माध्यमबाट उनले समाजमा सेवा पुऱ्याउँदै आएका छन् । खानेपानी, सिंचाइकुलो, बाटोघाटो निर्माणका अतिरिक्त ओटाडमा श्री शारदा नि.मा.वि. स्थापना गर्ने क्रममा उनी लागिपरेका र करिब ८ आना आफ्नै जग्गा विद्यालयका लागि प्रदान गरेको कुराले उनी शिक्षाप्रेमी व्यक्तित्वका रूपमा समेत चिनिन्छन् । वि.सं. २०२२ सालतिर रकुवा गा.वि.स.को वडा समितिमा रही काम गरेका र बचत (धर्मभकारी)को सङ्कलन र वितरण कार्यको पूरै जिम्मामा लिएर त्यसको संरक्षण र सम्बर्द्धनमा समेत उनले महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेको देखिन्छ (पङ्केनी, धर्मराजबाट प्राप्त जानकारी, परिशिष्ट पृ.१२१) । तत्कालीन समाजमा ब्राह्मणहरूले हलो जोत्न हुँदैन भन्ने कुराको विपक्षमा रही उनले हलो जोत्न हुन्छ भन्ने पक्षमा वकालत गर्दै विभिन्न शास्त्रोक्त प्रमाणहरूका आधारमा जनचेतना फैलाएकाले उनी समाजसुधारक व्यक्तिका रूपमा समेत चिनिएका छन् ।

३.५ बहुभाषिक व्यक्तित्व

हाम्रो मुलुक बहुजातीय र बहुभाषिक रहेको छ । हाम्रो समाजमा मगर, गुरुड, नेवार, थारू आदि विभिन्न भाषाभाषीहरूको बासोबास रहेको छ । केदारनाथ अधिकारीले मातृभाषा नेपालीका साथै संस्कृत, मगर आदि भाषाहरू बोल्न र लेख्न जानेका छन् । यस्तो भाषिक ज्ञानले साहित्यसिर्जना गर्न र सामाजिक क्षेत्रमा काम गर्न सहज भएको उनी बताउँछन् ।

३.६ भागवतवाचक/कर्मकाण्डी व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारीले श्रीमद्भागवतका प्रमुख वाचक भएर भागवतवाचकका रूपमा समेत आफ्नो पहिचान कायम राखेका छन् । यसैगरी उनका लेख, रचना र अनुवादहरू कर्मकाण्डसँग पनि सम्बन्धित छन् । आवश्यक पर्दा समाजमा पाठपूजा र धार्मिक कृत्यहरू सम्पादन गरेर कर्मकाण्डी व्यक्तित्वका रूपमा समेत उनी चिनिएका छन् ।

३.७ योगाभ्यासी व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारीको योगाभ्यासमा समेत रुचि देखिन्छ । सांसारिक माया, मोह र दिग्दारीबाट मुक्त भई मन एकाग्र बनाएर ईश्वरमा मात्र मन रहने स्थिति सिर्जना गर्न उनले कृष्णागण्डकी किनारको बेलघाट (वि.सं. २०२०) र साँवरीको सिखेनीघाट (वि.सं. २०२८)मा एकान्त कुटी बनाई योगाभ्यास गरेका हुन् । योगाभ्यासबाट आत्मानन्दबोध हुन्छ भन्ने कुरामा उनलाई विश्वास छ ।

३.८ राजनीतिक व्यक्तित्व

राजनीतिले समाजमा ठूलो प्रभाव पार्दछ । हरेक समाजको उत्थान र पतनमा प्रत्यक्ष वा परोक्षरूपले राजनीतिले महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । कुनै पनि समाज राजनीतिबाट टाढा रहन सक्दैन । एउटै समाजमा पनि विभिन्न विचारधारा अवलम्बन गरेका मानिसहरू हुन्छन् । केदारनाथ अधिकारी पनि सामाजिक प्राणी भएकाले प्रजातन्त्रको पक्षमा सदैव आफूलाई समर्पित गरेका छन् । वि.सं. २०१७ सालको राजनीतिक परिवर्तनपछिको निर्दलीय पञ्चायती व्यवस्थाको विरुद्धमा लागेका राजनीतिक दलका नेता कार्यकर्ताहरूलाई आश्रय दिने गरेको र मुलुकमा राजनीतिक परिवर्तनको पक्षमा सदैव क्रियाशील रहेका छन् ।

३.९ भाषासंशोधक तथा परिवर्द्धक व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारीले आफू स्रष्टा मात्र नभई आफ्ना समकालीन एवम् उत्तरवर्ती स्रष्टाहरूलाई पनि उत्तिकै प्रेरणा दिने काम गरेका छन् । यिनले हुतराज हरिशरण उपाध्याय लम्सालद्वारा लिखित **मानवधर्म** (२०४९) **ज्ञानरत्नमाला** (२०६३) को आवश्यक परिमार्जन र परिवर्द्धन समेत गरेका छन् । यसबाट यिनी भाषासंशोधक र परिवर्द्धक व्यक्तित्वका रूपमा समेत चिनिएका छन् ।

३.१० वाङ्मयरक्षक व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारीले १७० वर्ष पुरानो लोप हुन लागेको हस्तलिखित ग्रन्थ सङ्कलन गरी त्यसै समयका पदावलीहरूको प्रयोग समावेश गर्दै तत्कालीन भाषिक स्वरूपको संरक्षण गर्ने काम गरेका छन् । प्राचीन आयुर्वेदिक घरेलु पद्धतिबाट बालबालिका, पुरुष र महिलाहरूको उपचार गर्न सकिने विधिहरूका बारेमा ४१२ पृष्ठको **आयुर्वेद सार दर्पण** (२०५६) प्रकाशित गरेका छन् ।

३.११ भजनगीतका रचनाकार व्यक्तित्व

भजनगीतका रचनाकारका रूपमा समेत यिनी देखा पर्दछन् । यिनले 'हरि भजौं' शीर्षकको भजनगीत रचेका छन् । उक्त भजनगीतले बेला छँदै ईश्वरको चिन्तनमनन गर्नुपर्दछ, समय बितेपछि पछुतो हुन सक्छ भन्ने सन्देश दिएको छ (अधिकारी, २०६८: २८) ।

३.१२ साहित्यिक व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारीले नेपाली साहित्यका गद्य, पद्य, अनुवाद, संवाद र विवेचनाका क्षेत्रका पुस्तकहरू लेखी प्रकाशनसमेत गराएकाले यिनको कवि, टिप्पणीमूलक संवादकार र अनुवादक व्यक्तित्वको रूपमा समेत लिन सकिन्छ ।

३.१२.१ कवि व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारी नेपाली साहित्यसिर्जनामा विगत लामो समयदेखि साधनारत रहेका छन् । अधिकारीले नेपाली साहित्यको कविता विधामा कलम चलाएका छन् । बाल्यकालदेखि नै साहित्यप्रति अभिरुचि देखिए पनि उनको औपचारिक साहित्यिक यात्रा भने वि.सं. २०२० बाट आरम्भ भएको हो । औपचारिक साहित्ययात्रा कविताबाट सुरु गरेका अधिकारीले धर्म, कर्तव्य, ईश्वरभक्ति, नीतिशिक्षा र आध्यात्मिक विषयहरूलाई नै आफ्ना कविताका विषयवस्तु बनाएका छन् । उनले आफ्ना कविताहरूमा समाजमा देखिएका असङ्गति, सामाजिक विकृति र विसङ्गतिप्रति व्यङ्ग्यका साथै सांसारिक वितृष्णाका भाव व्यक्त गरेका छन् ।

वि.सं. २०२० सालमा **हिंसक कृषक तुलना**बाट साहित्यिक कृतिहरूको रचना सुरु गरेका भए पनि प्रकाशनका दृष्टिले २०४७ सालमा प्रकाशित **कर्तव्य दर्पण** प्रथम साहित्यिक

कृति हो । कविताबाटै साहित्यको फाँटमा उदाएका अधिकारीले भन्डै पाँच दशक लामो साहित्यिक यात्रा पार गरिसकेका छन् । साहित्ययात्राको क्रममा अधिकारीले प्रकाशन गरेका प्रमुख पुस्तकाकार कृतिहरू यसप्रकार रहेका छन् :

| | |
|------------------------------|--------|
| क) हिंसक कृषक तुलना | (२०२०) |
| ख) ब्रह्मकर्म | (२०३३) |
| ग) कर्तव्य दर्पण | (२०४७) |
| घ) दिव्यमधु | (२०४८) |
| ङ) श्राद्धपद्धति | (२०४९) |
| च) अष्टावक्र गीता | (२०५०) |
| छ) आनन्ददीपिका | (२०५१) |
| ज) आयुर्वेद सार दर्पण | (२०५६) |
| झ) संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ | (२०५८) |
| ञ) तिलक रहस्य दर्पण | (२०६०) |
| ट) सुदामाको कनिका | (२०६८) |
| ठ) चतुर्विंशति रत्न-दीपिका | (२०६८) |

उल्लिखित कृतिहरूको सूचीद्वारा नै नेपाली कविता विधामा केदारनाथ अधिकारीले पुर्याएको योगदान महत्त्वपूर्ण रहेको स्पष्ट हुन्छ ।

३.१२.२ टिप्पणीमूलक संवादकार व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारी टिप्पणीमूलक संवादकार व्यक्तित्वका रूपमा पनि देखा परेका छन् । अधिकारीले कविताका अतिरिक्त टिप्पणीमूलक संवादात्मक कृति पनि रचना गरेका छन् । दुई हजार बीस सालमा रचना गरिएको उनको **हिंसक कृषक तुलना** (२०५१), टिप्पणीमूलक संवादात्मक कृति हो ।

३.१२.३ अनुवादक व्यक्तित्व

केदारनाथ अधिकारीले गद्य/पद्य विधाका लेख-रचनाहरूका अतिरिक्त संस्कृत भाषामा लेखिएका कृतिहरूको अनुवाद पनि गरेका छन् । अष्टावक्र गीता (२०५०) संस्कृतबाट नेपालीमा गरिएको पद्यानुवाद हो । यसबाट उनको अनुवादक व्यक्तित्वसमेत प्रकटमा आएको छ ।

३.१३ जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यसिर्जनाबीच आन्तरिक सामञ्जस्य

केदारनाथ अधिकारीको जीवनयात्रा सामाजिक, धार्मिक र सांस्कृतिक परिवेशलाई प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपमा भोग्दै वर्तमान अवस्थासम्म आइपुगेको कुरा उनको जीवनीबाट थाहा हुन्छ । केदारनाथले बाल्यकालदेखि घरपरिवारबाट नै धार्मिक वातावरण प्राप्त गरेको कारणले उनमा धर्मशास्त्रतर्फको रुचि देखिएको छ । उनका आन्तरिक र बाह्य व्यक्तित्वका साथै उनका साहित्यिक कृतिहरूमा पनि हिन्दू धर्म र दर्शनमा आधारित नैतिक र धार्मिक कर्तव्यको उल्लेख पाइन्छ । समग्रमा उनको जीवनयात्रामा देखिएको समाजसेवी र धार्मिक प्रवृत्ति साहित्यलेखनमा पनि देखा पर्दछ ।

३.१४ निष्कर्ष

केदारनाथ अधिकारीमा बहुमुखी व्यक्तित्व देखा पर्दछ । उनी धार्मिक र सात्त्विक प्रकृतिका व्यक्ति हुन् । एकान्तमा धार्मिक सुख, शान्ति र सन्तोष प्राप्त गर्न सकिन्छ भन्ने कुरामा उनी विश्वास राख्दछन् । वि.सं. २०२० र वि.सं. २०२८ सालमा पटक-पटक गरी करिब डेढ वर्ष कालीगण्डकी किनारको एकान्त गुफामा एकलै बसेर तपसीका रूपमा अध्यात्मसाधना गरेकाले योगाभ्यासमा समेत उनको रुचि देखिन्छ । समाजसेवाको विविध क्षेत्रमा काम गरेकाले उनी सामाजिक व्यक्ति पनि हुन् । नेपाली समाजमा प्रचलित प्रमुख भाषाहरूका ज्ञाता भएकाले बहुभाषिक व्यक्तित्वका रूपमा पनि उनलाई चिन्न सकिन्छ । केदारनाथ अधिकारीका कवि, अनुवादक, भागवतवाचक, भाषा परिवर्द्धक तथा संशोधक, वाङ्मयरक्षक, भजनगीतका रचनाकार र टिप्पणीमूलक संवादकार व्यक्तित्वका रूपमा पनि चिनिन सक्ने व्यक्तित्व हुन् । मूलतः केदारनाथ अधिकारीलाई कवि व्यक्तित्वको रूपमा चिन्न सकिन्छ ।

परिच्छेद : चार

केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्रा र चरण विभाजन

४.१ विषयप्रवेश

केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्रा, केदारनाथ अधिकारीका कृतिहरूको वर्गीकरण र उनको लेखनयात्राको चरण विभाजनका आधारमा यहाँ विश्लेषण गरिएको छ ।

४.२ केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्रा

किशोरावस्थाको उत्तरार्द्धबाट नै कविता विधातर्फ आकर्षित भएका केदारनाथ अधिकारीले वि.सं. २०२० सालदेखि कविता क्षेत्रमा कलम चलाएका हुन् । अधिकारीमा सानैदेखि कविता सुन्ने र लेख्ने स्वभावको विकास भएको थियो । औपचारिक रूपमा धेरै लेखपढ गरेका व्यक्ति नभए तापनि कविता सुन्ने र लेख्ने चाहना भएका कारणले उनी यस क्षेत्रमा अभिप्रेरित भएका हुन् ।

केदारनाथ अधिकारीको पहिलो कृति **हिंसक कृषक तुलना** (२०५१) दुई हजार बीस र उनको अन्तिम कृति **चतुर्विंशति-रत्न-दीपिका** हो । वि.सं. २०२० सालदेखि २०६८ सालसम्म करिब पाँच दशकको अवधिमा उनका प्रकाशित साहित्यिक र साहित्येतर कृतिहरूमध्ये गद्य विधाका दुई, पद्य विधाका चार, गद्य-पद्य मिश्रित पाँच र पद्यानुवादको एक गरी जम्मा १२ कृति रहेका छन् ।

४.३ केदारनाथ अधिकारीका कृतिहरूको वर्गीकरण

केदारनाथ अधिकारीका कृतिहरूलाई साहित्यिक र साहित्येतर गरी दुई वर्गमा छुट्याउन सकिन्छ । **ब्रह्मकर्म** (२०३३), **श्राद्धपद्धति** (२०४९), **अष्टावक्रगीता** (२०५०), **हिंसक कृषक तुलना** (२०५१), **आयुर्वेद सार दर्पण** (२०५६), **तिलक रहस्य दर्पण** (२०६०), **चतुर्विंशति-रत्न-दीपिका** (२०६८) साहित्येतर कृतिहरू हुन् । विषयवस्तु, प्रस्तुति र अभिव्यक्तिकलाका दृष्टिले यी कृतिहरूलाई साहित्येतर वर्गमा राख्न उपयुक्त हुन्छ । **कर्तव्य दर्पण** (२०४७), **दिव्यमधु** (२०४८), **आनन्ददीपिका** (२०५१), **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ** (२०५८), **सुदामाको कनिका** (२०६८) यी कृतिहरूलाई साहित्यिक वर्गमा राख्न सकिन्छ ।

साहित्येतर कृतिहरूको संक्षिप्त परिचय परिशिष्ट खण्डमा दिइएको छ । यहाँ उनका यिनै साहित्यिक कृतिहरूको चरणगत लेखनयात्राको अध्ययन गरिएको छ ।

४.४ केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्राको चरण विभाजन

केदारनाथ अधिकारीले सुरूमा चम्पूकाव्य लेखनबाट कलम चलाएका हुन् । चम्पूकाव्य प्रकृतिका दुईओटा कृति लेखिसकेपछि मात्र विशुद्ध पद्यात्मक कृतिहरू प्रकाशित गरेका हुन् । वि.सं. २०२० सालदेखि नै लेख्न थालेका भए पनि अधिकारीका कृतिहरूको प्रकाशन वि.सं. २०३३ बाट मात्रै भएको पाइन्छ । २०२० सालतिरका केही अप्रकाशित कविताहरू पनि भेटिएका छन् । समयको गतिसँगै युगानुकूल विभिन्न धार्मिक र सामाजिक विषयहरूलाई आत्मसात् गर्दै पाँच दशक लामो लेखनयात्रामा उनले १२ ओटा पुस्तकाकार कृतिहरू जन्माइसकेका छन् ।

यस यात्रामा उनको कवित्वले क्रमशः उत्कर्षतातर्फ लम्कँदै प्रौढत्व प्राप्त गर्दै गइरहेको पाइन्छ । उनको कवितायात्रामा चिन्तन र शैलीशिल्पमा विविधता देखिएको छ । छन्द प्रयोग र पदावलीका दृष्टिले पूर्ववर्ती कृतिहरूको तुलनामा उत्तरवर्ती कृतिहरू परिष्कृत भेटिएका छन् । उनका भन्डै ५० वर्षको लेखनयात्राको विकासक्रमलाई निम्नलिखित चरणहरूमा विभाजन गरी अध्ययन गर्न सकिन्छ :

- क) पहिलो चरण २०२०-२०४६
- ख) दोस्रो चरण २०४७-२०५७
- ग) तेस्रो चरण २०५८-हालसम्म

४.४.१ पहिलो

वि.सं. २०२० सालदेखि २०४६ सालसम्म २७ वर्षको समायवधि उनको कविता लेखनको पहिलो चरण हो । यस चरणमा उनी चम्पूकाव्यकारका रूपमा देखा परेका छन् । यस अवधिमा उनले वेद, उपनिषद्, गीता आदि ग्रन्थहरूको अध्ययनका आधारमा अहिंसा, आहारविहार, नित्यकर्म आदि विषयहरूमा ब्राह्मणले गर्नुपर्ने कर्तव्य, आचार, व्यवहार र नैतिक शिक्षामा जोड दिएका छन् । यस अवधिमा लेखिएका उनका कृतिहरूमा धेरैजसो संस्कृतका सूक्तिहरूको प्रयोग भेटिएको छ । यसमा गद्य/पद्य मिश्रित रचनाहरू रहेका छन् ।

यसमा ब्राह्मणले गर्नुपर्ने नित्यकर्मका साथै भक्ष्याभक्ष्य, कर्तव्याकर्तव्य, नैतिक र आध्यात्मिक चेतनामा विशेष जोड दिइएको छ ।

प्रथम चरणमा प्रकाशित **ब्रह्मकर्म** (२०३३) भए तापनि यस चरणमा लेखिएका उनका कविताहरू साहित्यिक कसीमा सामान्य रहेका छन् । कविता लेखनका दृष्टिले यस काललाई आभ्यासिक काल र छन्द प्रयोग तथा भाषाशैलीका दृष्टिमा सिकारु अवस्था मान्न सकिन्छ ।

४.४.२ दोस्रो

वि.सं. २०४७ सालदेखि २०५७ सालसम्म ११ वर्षको समयावधि कविको कवितालेखनको दोस्रो चरण हो । **कर्तव्य दर्पण** (२०४७) र २०४८ सालमा **दिव्यमधु** कविता सङ्ग्रह प्रकाशित भएपछिको समयलाई दोस्रो चरणमा प्रवेश भएको मान्न सकिन्छ । यस चरणमा कवि अधिकारीको कविता र रचना परिष्कृत हुँदै गएको छ । छन्दप्रति उनी अरु सचेत देखिएका छन् । यस अवधिका कृतिहरूमा ज्ञान, वैराग्य र ईश्वरभक्तिको भाव प्रकट भएको छ । यस चरणमा उनको अर्को कृति **आनन्ददीपिका** (२०५१) प्रकाशित भएको छ ।

४.४.३ तेस्रो

वि.सं. २०५८ सालदेखि २०६८ सालसम्म ११ वर्षको समयावधि केदारनाथ अधिकारीको कवितालेखनको तेस्रो चरण मानिन्छ । यस चरणमा जम्मा दुईओटा साहित्यिक कृतिहरू प्रकाशित भएका छन् । दुईओटा कृतिहरूमा क्रमशः **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ** (२०५८) र **सुदामाको कनिका** (२०६८) रहेका छन् । उपर्युक्त कृतिहरूमध्ये **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ** खण्डकाव्य-कृति हो । **सुदामाको कनिका** कविता सङ्ग्रह हो । तेस्रो चरणको समयावधि छोटै देखिए पनि कवित्व विकासका दृष्टिले महत्त्वपूर्ण रहेको छ । कवितासिर्जनामा उत्तरोत्तर प्रगति हुँदै जाने क्रममा यस चरणमा खण्डकाव्यको रचना भएको छ । साथै भक्तिकविका रूपमा आफूलाई उभ्याउन सफल कृतिहरूको सिर्जना भएको छ । यस अवधिमा छुट्टै प्रवृत्ति र विशेषताहरू नभेटिए पनि ईश्वरभक्ति र सामाजिक असङ्गति प्रकट गर्दै पौराणिक विषयवस्तुमा आधारित सुदामा र अश्वत्थामाचरित्रजस्ता विषयहरू समावेश भएका छन् । छन्द र भाषाशैलीमा पूर्ववर्ती चरणहरूमा भन्दा सचेतता पाइएको छ । यसमा कवि अधिकारीको कवित्वमा अपेक्षाकृत निखार आएको प्रतीत हुन्छ ।

४.५ निष्कर्ष

केदारनाथ अधिकारीको साहित्यिक यात्रा वि.सं. २०२० बाट सुरू भएको हो । वि.सं. २०२० सालबाट लेखनका क्षेत्रमा लागेका भए पनि प्रकाशन वि.सं. २०३३ बाट मात्र भएको देखिएको छ । उनको प्रथम लिखित कृति **हिंसक कृषक तुलना** र अन्तिम कृति **चतुर्विंशति-रत्न-दीपिका** (२०६८) हो । उनको भन्डै पचास वर्षको लेखनयात्रामा जम्मा १२ ओटा कृतिहरू प्रकाशित छन् । उनका कृतिहरूलाई साहित्यिक र साहित्येतर गरी दुई वर्गमा छुट्ट्याउन सकिन्छ । विषयवस्तु, प्रस्तुति र अभिव्यक्तिकलाका दृष्टिले **कर्तव्य दर्पण** (२०४७), **दिव्यमधु** (२०४८), **आनन्ददीपिका** (२०५१), **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ** (२०५८) र **सुदामाको कनिका** (२०६८) लाई साहित्यिक वर्गमा राख्न सकिन्छ । उनको वि.सं. २०२० सालदेखि वि.सं. २०६८ सालसम्मका भन्डै ५० वर्षको लेखनयात्रा प्रमुख तीन चरणमा विभाजित हुन्छ । वि.सं. २०२० देखि वि.सं. २०४६ सालसम्मको २७ वर्षको अवधि उनको लेखनयात्राको पहिलो चरण हो । यस चरणमा उनले साहित्यइतरको एक मात्र कृति प्रकाशित गरेका छन् । पहिलो चरण कविको आभ्यासिक चरण हो । दोस्रो चरणमा तीन साहित्यिक कृति प्रकाशित छन् । तेस्रो चरणमा दुई कृतिहरू प्रकाशित भएका छन् । यसरी हेर्दा पहिलो चरणमा भन्दा दोस्रो चरणका कृतिहरू बढी परिष्कृत देखिएका छन् । उनको दोस्रो चरण मौलिक लेखनभन्दा अनुवादमा बढी केन्द्रित भएको देखिन्छ । तेस्रो चरणमा उत्तरोत्तर परिष्कृति प्राप्त गर्दै खण्डकाव्य स्तरसम्मको रचना उनले गरेका छन् ।

परिच्छेद : पाँच

केदारनाथ अधिकारीका कृतित्वको अध्ययन

५.१ विषयप्रवेश

कवि केदारनाथ अधिकारीका १२ ओटा प्रकाशित पुस्तकाकार कृतिहरूमध्ये ५ ओटा मात्र साहित्यिक कृतिका रूपमा देखा परेका छन् । यहाँ तिनै ५ ओटा कृतिहरू क्रमशः कर्तव्य दर्पण, दिव्यमधु, आनन्ददीपिका, संसारदेखि लाग्छ सरै उराठ र सुदामाको कनिका कृतिहरूको संरचना, भावविधान, चरित्रविधान, परिवेश, उद्देश्य, कथनपद्धति, भाषाशैली, लयविधान, अलङ्कारविधान र शीर्षकविधानका आधारमा अध्ययन गरिएको छ ।

५.१.१ 'कर्तव्य दर्पण'

कर्तव्य दर्पण (२०४७) केदारनाथ अधिकारीको धार्मिक तथा नैतिक चेतनासित सम्बन्धित कविता कृति हो । यहाँ यसको संरचना, भावविधान, उद्देश्य, कथनपद्धति, भाषाशैली, लयविधान, अलङ्कारविधान र शीर्षकविधानका आधारमा विश्लेषण गरिएको छ । यसमा सङ्कलित रचनाहरू आध्यात्मिक नीतिचेतना, भक्तिपरकता, औपदेशिकता र नैतिकतामा आधारित छन् ।

५.१.१.१ संरचना

कर्तव्य दर्पण २२२ पृष्ठ सङ्ख्या भएको मध्यमाकारको पुस्तिकाका रूपमा संरचित छ । पुस्तकको आरम्भमा 'ॐ श्री सर्वेश्वरो विजयते' उल्लेख गरी मङ्गलाचरणको विधान गरिएको छ । यो तीन खण्ड र परिशिष्ट भागसमेत गरी चार खण्डमा विभाजित र विस्तारित छ । प्रत्येक खण्डमा विभिन्न शीर्षकहरूमा क्रमशः ४६, २९, ४५ र ३२ उप-शीर्षकहरू गरी जम्मा १५२ उप-शीर्षकहरू रहेका छन् । प्रथम खण्डमा ज्ञान, दोस्रो खण्डमा कर्म र तेस्रो खण्डमा उपासनाका बारेमा वर्णन गरिएको छ ।

प्रथम खण्डमा चार पाउको एक श्लोक हुने वसन्ततिलका छन्दका ८३ श्लोकहरू, दोस्रो खण्डमा वसन्ततिलका र अनुष्टुप् छन्दका १०३ श्लोक र तृतीय खण्डमा वसन्ततिलका अनुष्टुप्, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित छन्दका १५६ श्लोकहरू रहेका छन् । यसैगरी परिशिष्ट भागमा उपर्युक्त कथनहरूको परिपुष्टिका निम्ति संवादात्मक टिप्पणीहरू कतै पद्यमय

श्लोकहरूका साथै भावलाई थप स्पष्ट पार्न चित्रहरूसमेत अङ्कित गरिएका छन् । साथै आवश्यक ठानिएको स्थानमा संस्कृतका सूक्तिहरू पादटिप्पणीमा दिइएको छ । सबै खण्डमा रहेका श्लोकहरू अन्त्यानुप्रासयुक्त छन् ।

५.१.१.२ भावविधान

कविका अन्तरहृदयमा उब्जने भावहरू नै कविताका रूपमा बाहिर प्रकट हुन्छन् । कर्तव्य दर्पणमा सङ्कलित कविताहरू पनि कवि अधिकारीका हृदयमा साँचिएका अनुभूतिहरूका पोखाइ हुन् । वेद, उपनिषद्, स्मृतिग्रन्थ, गीता, पुराण, रामायण, महाभारत आदिका अध्ययनबाट प्राप्त धार्मिक चेतनाको प्रकटीकरण नै कर्तव्य दर्पणको भावभूमि हो । यसमा सङ्कलित कविताहरूमा यसमा धार्मिक चेतना, आचारमहिमा, ईश्वरभक्ति, मानवता, अतिथिसेवा, बालशिक्षा, स्वास्थ्यशिक्षा, अहिंसाभाव, जितेन्द्रिय बन्नुको महिमा, सदाचार, सत्सङ्गमहिमा, सेवाभाव, सामाजिक चेतना, पशुहरूप्रति विवेकी बन्न आग्रह, जीवनको क्षणभङ्गुरता, नैतिक शिक्षा, परजन्म सुधारको आग्रह, सत्यकामना, कल्याणकामना, आध्यात्मिक शुद्धता, ब्रह्ममुहूर्तमा उठ्नुको महत्त्व, सत्पात्रता, कर्म र जातित्व, अभिमानीपनको नकारात्मकता, सद्भावयुक्त कर्मको महिमा, न्यायिक सोच आदि विषयहरू रहेका छन् ।

५.१.१.२.१ धार्मिक चेतना

कवि केदारनाथ अधिकारीका कवितामा धार्मिक चेतनाको भावना प्रबल छ । यिनले आफ्ना कविताहरूमा हिन्दूधर्मद्वारा निर्दिष्ट आचार विचारहरू पालना गर्न अनुरोध गरेका छन् । धर्म मानवजीवनको अभिन्न अङ्ग हो । हिन्दू धर्मग्रन्थहरूको ज्ञान संस्कृत नजान्नेहरूका निमित्त सुगम नभएकाले धर्मशास्त्रले बताएका आधारभूत कुराहरू सरल भाषामा सर्वसाधारणमा पुऱ्याई धार्मिक कर्तव्यको पालना गर्न कविले यसरी अनुरोध गरेका छन् :

हिड्दा मार्ग बिरिन्छ लोट्छन् कुनै देखेर तेस्ताकन,
देखाउन्न उठाइदिन्न यदि जुन् हुन रे तिनै दुर्जन ।
तस्मात् शास्त्र-सुमार्ग जान सजिलै होऊ सुमार्गी सब
धुलो पुस्नु 'म' हेर्नु भन्छ सबमा कर्तव्य दर्पण पथ ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, पृ. 'ट'

५.१.१.२.२ आचारमहिमा

केदारनाथ अधिकारले आफ्ना कविताहरूमा वेदादि शास्त्रहरूको तत्त्वबोध गर्नुपर्ने कुरामा जोड दिएका छन् । सत्शास्त्रहरूमा वर्णित आचार पालना गर्नुपर्दछ । शुद्ध आचार पालनाबाट ज्ञानको प्रकाश हुन्छ, र भवसिन्धु पार हुन सकिन्छ भन्ने भाव कविले यसरी व्यक्त गरेका छन् :

सत्-शास्त्र वेद सम सत्पथ तत्त्वबोध
स्वाचार आर्जव दयादि लिने जउन् छ ।
भै स्वन्त शुद्धि हृदयामृत ज्योति खुल्ला
त्यो ज्ञान निश्चल भई भवसिन्धु तर्ला ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ३

शुद्ध आचारविनाको व्यक्ति कुपात्र मानिन्छ । दुष्पात्रमा रहेको असल चीज पनि खराब बन्न पुग्दछ । शुद्ध आचाररहितको व्रत, कर्म, उपासना र बुद्धिसमेत अपूर्ण हुन्छ भन्दै कविले आचारमहिमा यसरी व्यक्त गरेका छन् :

दुष्पात्रमा असल चीज् पनि हुन्छ नाश,
आचारहीन तनु हुन्छ कुपात्र खास ।
आचार विना व्रत उपासन योग कर्म,
प्रज्ञादि सर्व इ कुनै पनि हुन्न पूर्ण ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ४

५.१.१.२.३ ईश्वरभक्ति/प्रार्थना

केदारनाथ अधिकारीका रचनाहरूमा ईश्वरभक्तिको भाव पर्याप्त मात्रामा भेटिन्छ । उनले ईश्वर दुःखनाशक, प्राणरक्षक, विश्वको सृष्टिकर्ता र सबैका संरक्षक हुन् भन्ने कुरामा दृढ विश्वास गरेका छन् । अतः कविले सद्बुद्धि र ईश्वरप्राप्तिको कामना यसरी गरेका छन् :

ओम् प्राणेश्वर ! दुःखभञ्जक विभो ! हे विश्व उत्पादक !
सर्वात्मन् भवसिन्धुपोत ! सुगते ! हे विश्व संरक्षक !
सत्-चित् पूर्ण सुख-स्वरूप भगवन् हृद्पद्ममा देखिनोस् !
हाम्रो सत्मति होस् मिलौं हजुरमै यो प्रार्थना सुन्दिनोस् !

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ३८

५.१.१.२.४ मानवता

केदारनाथ अधिकारीका कविता मानवतावादी भावनाले ओतप्रोत भएका छन् । दिनु जान्नु मानवता हो भन्ने उनको धारणा छ । सबैको वेदना बुझेर सेवा गर्नु महानता हो । सबै जीवहरू ईश्वरका रूप हुन् सबैलाई सम दृष्टिले हेर्नुपर्दछ । आफूले मात्रै खाने व्यक्ति पशुसमान हुन्छ भन्ने भाव यसरी अभिव्यक्त भएको छ :

ब्रह्मज्ञ सर्व समदर्शि महर्षि सब्का,
शिक्षा छ जीव सब सम्भिइ रूप हरीका ।
सेवाक्त्मज्ञान यदि मानवधर्म मान,
आ-आफू मात्र सब खानु पशू समान ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ६३

५.१.१.२.५ अतिथि सेवा

केदारनाथ अधिकारीले पाँच महायज्ञ ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ र मनुष्ययज्ञको बारेमा चर्चा गरेका छन् । यीमध्ये मनुष्ययज्ञ अतिथिसेवा हो । अतिथिहरूमा विवेक र सम्मान गर्नुपर्दछ । कुनै अतिथि खान नपाई वा अपमानित भई फर्केमा श्राप दिन्छ । त्यस्ता श्रापले गार्हस्थ धर्म नष्ट हुन्छ भनेर कविले अतिथि सेवाको महिमा यसरी व्यक्त गरेका छन्:

यी चार यज्ञ सकिए, अब बाँकी एक,
गर्नु सदा अतिथिजन्हरुमा विवेक ।
जस्वाट क्वै अतिथि जान्छ विमुख भएर,
गार्हस्थधर्म सब जान्छन श्राप् दिएर ॥

-कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ६०

त्यस कारण घरमा आउने अतिथि जो जस्तोसुकै होस्, मूर्ख वा शत्रु नै होस् तापनि आफ्नो शक्तिअनुसार सम्मान गरी सँगै राखेर मीठा वचन र प्रसादीद्वारा सेवा गर्न कविले यसरी आह्वान गरेका छन् :

आयो भने अतिथि मूर्ख कि शत्रु होस,
योग्यै र शक्तिअनुसारसँग पूजियोस ।
राखेर आसनमहाँ गर मान आदि,
ख्वाऊ मिठा वचनपूर्वकले प्रसादी ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ६१

५.१.१.२.६ बालशिक्षा

कवि केदारनाथ अधिकारी धार्मिक चेतना जगाउने क्रममा वयस्कहरूलाई धार्मिक कर्तव्यप्रति सजग गराउने मात्र नभई बालबालिकाहरूलाई सानैदेखि बानी सुधार गरी असल आदत बसाउन आह्वान यसरी गरेका छन् :

कोट्याई नाक् श्रवण दाँत र सर्व गात्र
टोकी भिंजादि, नड, ओठ, मल अङ्गवस्त्र ।
होच्याउँदै मनपरी सँग बात गर्ने,
बानी अनेक छन है बुभ ! त्यागनु पर्ने ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड २, श्लोक १३०

कविले आफ्ना कवितामा पुरुषवर्गलाई मात्र लक्षित नगरी बालबालिका, नारी-पुरुष सबैलाई समान हक र अधिकार भएको कुरा व्यक्त गरेका छन् । कविले नारीहरूमा पनि उत्साह बुद्धि, विचार समान भएकाले राम्रा विषय अध्ययन गरी सत्चरित्रको विकास गर्न यसरी अनुरोध गरेका छन् :

बैनी ! बुभे पुरुषकै सरि हक् छ तिम्रो,
उत्साह धैर्य मन बुद्धि विचार राम्रो ।
संस्कारयुक्त भई दीक्षित जप्नु मन्त्र,
सद्ग्रन्थ पढनु सुननु लिनु सत्चरित्र ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड २, श्लोक १३३

५.१.१.२.७ स्वास्थ्य शिक्षा

कवि केदारनाथ अधिकारीले यस कविता कृतिमा धार्मिक चेतनाका साथै स्वास्थ्यसम्बन्धी चेतना पनि जगाएका छन् । उनले यसमा बालकदेखि नै राम्ररी हात धुने बानीको विकास गर्न यस्तो आग्रह गरेका छन् :

मुखमा त हात् लगिरने यदि बानि लिन्छ,
धोएन हात सबलाई जुठो दिइन्छ ।
हातले त पाउ नछुनु यदि छूनु पर्दा,
वाम् हातले छुनु र हात् धुनु केही गर्दा ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड २, श्लोक १२७

५.१.१.२.८ जितेन्द्रिय बन्नुको महिमा

कवि केदारनाथ अधिकारीले इन्द्रिय जित्नु नै सबभन्दा ठूलो सुख हो भनेका छन् । उनको विचारमा इन्द्रिय जित्न सके सबै जितिन्छ । उनले मन जित्नका लागि गुरुको वचन पालन गरेमा सुबुद्धि मिल्छ भन्ने आशय व्यक्त गरेका छन् :

जिह्वा, उपस्थ दुई इन्द्रिय नित्य जित्नु,
सुख हो जितेन्द्रिय हुनु अरु के छ जित्नु ?
जित्नु छ मूख्य मन नै तब सब् जितिन्छन्,
मन् जित्न सद्गुरु लिनू र सुवृद्धि मिल्छन् ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २४३

५.१.१.२.९ सदाचार

कवि केदारनाथ अधिकारीले आफ्ना कवितामा सदाचारमा विशेष जोड दिएका छन् । उनको विचारमा सत्कर्म वा उद्योगबाट मानिसको सुधार सम्भव छ । उनी भन्छन् जे जति मिल्छ सन्तोषी भएर लिऊँ, ज्यादै हर्ष र विषमय नलिऊँ । उनी शुद्ध आचारमा दृढ रहन सके मन शुद्ध हुन्छ भन्छन्, उदाहरणार्थ :

उद्योग गर्नु शुभ काम्हरू जो सकिन्छ,
उद्योगबाट बुझ ! सर्व सुधार हुन्छ ।

उद्योग गर्नु फल जो जति मिल्छ लीऊँ,
सन्तोष शान्त भई हर्ष विषाद् नलीऊँ ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २४९

५.१.१.२.१० सत्सङ्ग महिमा

कवि केदारनाथ अधिकारीले मानिसको ज्ञान र बुद्धिको विकास गराई असल बन्न सत्सङ्गको महत्त्व औल्याएका छन् । कल्पतरुले आफूले इच्छा गरेमा मात्र फल दिन सक्छ । खोजी गरे मात्र खोजेको चीज पाउन सकिन्छ तर सत्सङ्गबाट धेरै कुरा प्राप्त गर्न सकिन्छ भन्ने भनाइ उनले यहाँ व्यक्त गरेका छन् :

कुनै कल्पे मात्रै दिन सक्छ रे कल्पतरुले,
दिने रे आफूले मन जुन गयो त्यो सुरभिले ।
चिताएमा चिन्तामणि तब दिने चीजहरु रे,
निरिच्छैमा मिल्ने परमपद सत्सङ्गति गरे ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २६३

५.१.१.२.११ सेवाभाव

कवि केदारनाथ अधिकारी सेवा नै परम धर्म हो भन्ने कुरालाई मूल मन्त्र ठान्दछन् । उनले आफ्ना माता-पिता, आफन्त जन एवम् गुरुजन मात्र नभई दीन-दुःखी सबै जनामा सेवाभाव र सबै जीवहरूप्रति समताभाव व्यक्त गरेका छन् :

सबै जीव आफै समान् ठान्नु पर्छ,
यथायोग्य सेवा सदा गर्नुपर्छ ।
पितामातृ जो छन् गुरु मान्यजन्मा,
गरौं नित्य सेवा दया दुःखि सब्मा ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २६१

५.१.१.२.१२ सामाजिक चेतना

अनेकौ विकृति विसङ्गगतिले समाज ग्रस्त छ । धुम्रपान र मद्यपानले हाम्रो समाजलाई विसङ्गत बनाएको छ । अशिक्षा र अज्ञानताका कारणले गर्दा धुम्रपान र मद्यपान गर्ने व्यक्तिहरू समाजमा प्रशस्तै भेटिन्छन् । मद्यपानले धन खर्च हुने र स्वास्थ्यमा समेत प्रतिकूल

असर देखिने हुनाले मद्यपान त्याग्न कविले आग्रह गरेका छन् । रतिक्रिया, तासजुवा र अन्यायको धनले क्षणिक आनन्द दिए पनि यी वास्तवमा विष हुन् भन्ने भाव कविले व्यक्त गरेका छन् :

जूवा र मांस मदिरा, रति वीर्यनाश,
अन्यायको धन इ गछ्छन सर्वनाश ।
आभाषमात्र सुख अमृत भैं परन्तु,
हुन् त्राश लाश, विष, रोग र अग्नितन्तु ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २३२

५.१.१.२.१३ पशुहरूप्रति विवेकी बन्न आग्रह

कवि केदारनाथ अधिकारीले मानव मात्रमा नभै पशुहरूप्रति पनि विवेकी बन्न आग्रह गरेका छन् । पशुहरूलाई भोक तिर्खाको ख्याल नगरी नाके डोरी लगाएर जाडो, गर्मी, घाम र पानीको कुनै पर्वाह नगरी भारी बोकाउने अविवेकीहरूप्रति विवेकी बन्न कविले यस्तो आग्रह गरेका छन् :

कठै गोरु राँगाहरू छेडि नाक,
कठोरी दया हीनताले नहाँक ।
लिऊँ काम तिन्को बुभी भोक तिर्खा,
बिसन्चो, असक् घाम अत्यन्त वर्षा ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २५७

५.१.१.२.१४ जीवनको क्षणभङ्गुरता

मानव जीवन नाशवान् छ । आयु अत्यन्त छोटो छ । मानव शरीर अत्यन्त कच्चा र विभरको छ । समय छँदै जसले अर्काको हित गर्न सक्छ, उसको नाम अमर हुन्छ । अतः अल्प समयमा असल कर्म गरेर कीर्ति राख्नुपर्दछ भन्ने भाव कविले यहाँ व्यक्त गरेका छन् :

चुहूने भाँडाको जलसरि छ है आयु सबको,
सडी जानेवाला शरिर अति कच्चो विभरको ।
गन्थो ता, साराको हित अमर भो नाम उसको,
स्वयं नित्यै रे यो यदि मन बने निर्विषयको ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २६२

५.१.१.२.१५ नैतिक शिक्षा

कवि अधिकारीले कर्तव्य दर्पणमा धार्मिक चेतनाका साथै नैतिक चेतनामा पनि जोड दिएका छन् । अन्यायपूर्वक धन आर्जन गर्ने, छली, ठगी, चोरी र भाइमारा प्रवृत्तिको घोर विरोध गरेका छन् । असल शिक्षा लिन आग्रह गर्दै आफूले अरूबाट जस्तो व्यवहारको अपेक्षा गरिएको हुन्छ त्यस्तै व्यवहार अरूप्रति पनि गरेमा सभ्य समाजको निर्माण हुन सक्ने भनाइ कविले यहाँ यसरी व्यक्त गरेका छन् :

ठग, छल, छपटचार्यी, धूर्त, अन्याय सारा,
सकल, बुझ ! इ चोरी कर्म हुन् भ्रातृमारा ।
विहकसँग कुनै धन् क्यै कसैको नलेऊ,
श्रुतिहरू सब भन्छन् सत्य शिक्षादि लेऊ ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २११

५.१.१.२.१६ परजन्म सुधारको आग्रह

कविले परजन्ममा विश्वास गर्दछन् । यो जन्ममा राम्रा कर्म गरेर हरिको नाम जपे परजन्म सुधिन्छ । ईश्वर अन्तर्यामी, विवेकी र सर्वव्याप्त छन् । कतै कर र डरले राम्रो कर्म गर्न नसके पनि मनमा राम्रा कुरा चिन्ताएमा पनि सांसारिक बन्धनबाट पारि तरेर परजन्ममा सुख-सन्तोष प्राप्त हुन्छ, भन्ने भाव कविले यहाँ व्यक्त गरेका छन् :

स्त्रीका कुपति भैं छैन, छ विवेकी जगत्पति ।
अन्तर्यामी छ, शुद्धात्मा राखे दिन्छ परंगति ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड २, श्लोक १३६

५.१.१.२.१७ सत्यकामना

कविले प्रस्तुत सङ्ग्रहमा सत्यका निम्ति आवश्यक पक्षहरूको व्याख्या गर्दै सत्यको महिमा गान गरेका छन् । सत्यको पालना गर्न सके मात्र जीवन सार्थक हुन्छ अन्यथा जीवन व्यर्थ हुन्छ । दया, क्षमा, अहिंसा, त्याग र ध्यान आदि सन्मार्गका पक्षहरू हुन् । अतः जीवन सुखमय बनाउन सत्यको पक्षलाई कदापि भुल्ल हुँदैन भन्दै सत्यमार्ग अवलम्बन गर्न कविले यसरी आग्रह गरेका छन् :

निर्मात्सर्य, दया, क्षमा, सु-समता, लज्जा, अहिंसा दम,
त्याग, ध्यान, तितीक्ष, साधुपनता, धैर्यानसूयात्मन ।
सत्यैका हुन् अङ्ग तेह यि सदा,पालौं लियौं रे मन ।
सत्यात्मा गर ओम् प्रकाश, नहिँ ता,व्यर्थ छ रे जीवन ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक ३३८

५.१.१.२.१८ कल्याणकामना

केदारनाथ अधिकारीले कर्तव्य दर्पणमा सङ्कलित उपदेशात्मक पद्यको अध्ययन मननबाट धेरै मानिस सुमार्गी बन्न सक्ने, सांसारिक बन्धनबाट मुक्त हुन सक्ने, सत्शिक्षा प्राप्त गर्नेछन् भन्दै सत्यम् शिवम् सुन्दरम्को भावनालाई अगि बढाउने आशा यसरी व्यक्त गरेका छन् :

पाई सत् उपदेश मानव सबै नित्यै सुमार्गी बनुन्
सन्मार्गी जन सर्व बन्धन फुकी मुक्तात्मनै भै रहुन् ।
मुक्तात्माहरु सत्यज्ञान सबमा शिक्षा सदा दी रहुन्
हे विश्वम्भर ! भै रहोस जगतै सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक ३४२

५.१.१.२.१९ आध्यात्मिक शुद्धता

कवि अधिकारीको विचारमा ईश्वरप्राप्तिका लागि धन खर्च गरेर देश विदेश घुम्न आवश्यक छैन । ब्रह्म विश्वव्यापी छ । उसलाई खोज्न अन्यत्र कहीं जानुपर्दैन । तीर्थाटनको मुख्य उद्देश्य मन शुद्ध गराउनु हो । राग द्वेष पखाल्नु हो । मन शुद्ध गराएमा यही नै तीर्थ हो भन्ने धारणा यसरी अभिव्यक्त भएको छ :

तीर्थार्थ मुख्य मन शुद्ध गराउनु हो,
रोग् द्वेष आदि मल नित्य पखालनु हो ।
यो देह शुद्धि गरिए यहि पुण्य क्षेत्र,
हो धाम सर्व समतत्त्व बुझे त भित्र ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २०४

५.१.१.२.२० ब्रह्ममुहूर्तमा उठ्नुको महत्त्व

कवि अधिकारीले मानिसका विविध कर्तव्यहरूमध्ये बिहान पाँच/सात घडी रात छँदै उठ्नु मुख्य कर्तव्य हो भनेका छन् । ब्रह्ममुहूर्त पुण्यको समय हो । आलस्यले अबेरसम्म सुत्नु दोष हो । अतः प्रातकालमा सबै जाग्नू आवश्यक छ भन्ने कुरा राम्ररी सम्झनू भन्ने भाव कविले यहाँ व्यक्त गरेका छन् :

सातै कि पाँच घडि रात्रि हुँदा बिहान,
हो पुण्यको समय ब्रह्ममुहूर्त जान ।
उठ्नु सदैव बुझ ! ब्रह्ममुहूर्त कालमा,
आलस्यले सुत्नु दोष छ सम्भ मन्मा ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ७

५.१.१.२.२१ सत्पात्रता

कविले कर्तव्य दर्पणमा सबैलाई सत्पात्र बन्न आग्रह गरेका छन् । सत्पात्र कस्तालाई भनिन्छ ? भन्ने प्रश्नार्थक शीर्षकमा कविले सत्पात्रताका लक्षण बताएका छन् । सबै जीवहरूमा समभाव राख्ने, सबैलाई अभयत्व प्रदान गर्न सक्ने, उपकारी, तत्त्ववेत्ता, सन्तोषी, शान्त, अभिमानरहित आदि सत्पात्रताका लक्षण हुन् भन्दै उनले सबैलाई सत्पात्र बन्न आग्रह गरेका छन् :

जीवात्मा सर्व समता अभयत्व दाता,
सर्वेश भक्त, उपकारि र तत्त्ववेत्ता ।
सन्तोषि शान्ति हवि भोजी, अगर्वि दान्ति,
सत्पात्रिका सुगुण लक्षण छन् अगिन्ति ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड २, श्लोक १६७

५.१.१.२.२२ कर्म र जातित्व

जन्मसिद्ध कुनै जातिविभेद हुँदैन । संस्कार र गुणले राम्रो वा नराम्रो जाति हुन्छ । दुष्कर्ममा प्रवृत्त भएमा त्यो आफै नराम्रो जाति कहलिन्छ । सत्य, निष्ठा र दया नै राम्रो वा उच्च जाति हुनाका गुण वा लक्षणहरू हुन् :

छन् जन्म सिद्ध त इ जीव सबै द्विजाति,
संस्कार जन्म गुण वास्तव हो द्विजाति ।
दुष्कर्ममा रत भए उहि भो कुजाति,
सत् निष्ठ आर्जव दया हुन उच्च जाति ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड २, श्लोक १६२

५.१.१.२.२३ अभिमानीपनको नकारात्मकता

राग, द्वेष र अभिमान यी सबै रुग्ण र असन्तुलित मनोवृत्तिका उपज हुन् । मान्छेले जब अभिमान प्रकट गरिरहेको हुन्छ, तब उसले आफ्नो स्वाभाविक संवेगलाई गुमाएको हुन्छ । उसको असन्तुलित र विक्षिप्त प्रायः मानसिक दशाको प्रतिफलमा रिस वा अभिमान प्रकट हुने भएकाले उसबाट हिंसा र आक्रमणको खतरा पनि उत्तिकै हुन्छ । अतः अभिमान त्यागौं भन्ने सन्देश उनले यहाँ प्रकट गरेका छन् :

त्यागी कुकर्म अभिमान र राग द्वेष
सद्ग्रन्थ सद्गुरु मनन् गर ओंप्रकाश ।
श्री ब्रह्मकै शरण ली हरि जप्नु नित्य
संसार तरिन्छ मनले लिनु धर्म सत्य ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक ३३६

५.१.१.२.२४ सद्भावयुक्त कर्मको महिमा

खराब भावना मनमा लिएर गरेको कर्म वा यज्ञ नै पनि व्यर्थ वा निष्फल हुन्छ । मनमा असल भावना राखेर गरिने कर्म र व्यवहार यज्ञसरि महान् हुन्छ । अतः प्राणीहरूमा दया भाव राखी द्रोह नगर्नु, सत्कर्म गर्नु, ज्ञान लिनु यी सबै सद्भावयुक्त कर्महरू हुन् । पुण्यार्जन गर्न यज्ञ, व्रत, तीर्थ, जप, होम मात्रै गर्नुपर्ने होइन । शुद्ध मनले गरेका असल कर्म सबै यज्ञ नै हुन् :

यज्ञ नै सब व्यर्थ हुन्छ मनमा, दुष्कामना कल्पिए
बन्छन् सद्व्यवहार यज्ञसरि नै सद्भाव मन्मा लिए ।
अद्रोह सब जीवमा, सम दया सन्तोष शीलाकर्जव ।
सत्कर्म, तप, दान, ज्ञान, यी महायज्ञै भनिन्छन् सब ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक ३०२

५.१.१.२.२५ न्यायिक सोच

नीतिज्ञ व्यक्ति अरूको प्रशंसा वा निन्दाबाट विचलित हुँदैन । धनको प्राप्ति हुँदा वा नहुँदा पनि कुनै फरक अनुभव गर्दैन । धेरै बँच पाउने भए पनि, तत्कालै प्राण जाने भए पनि न्यायको मार्ग भुल्न हुँदैन भन्ने सोच भएका मानिस मात्र सज्जनमा गनिन्छन् ।

नीतिज्ञले स्तुति गरुन् कि गरुन् ति निन्दा
लक्ष्मी मिलुन् बसुन जाउन जे गरुन् वा ।
धेर् बाँचियोस् कि यदि मर्नु परोस ऐल्यै
छाड्दैन न्याय पथ सज्जनवर्ग कैल्यै ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक ३४१

५.१.१.३ उद्देश्य

सदाचार र कर्तव्याकर्तव्यको जानकारी गराई धार्मिक चेतना फैलाउने उद्देश्य यसमा रहेको छ । यसमा अहिंसा, सत्य, वैराग्य, आहारविहारका बारेमा शिक्षा दिने प्रमुख उद्देश्य रहेको छ (सुवेदी, २०४७: ग) । केदारनाथ अधिकारीले यसमा हिन्दूधर्मद्वारा निर्दिष्ट आचारविचारहरू पालन गर्न आह्वान गरेका छन् । धर्म मानव जीवनको अभिन्न अङ्ग हो । संस्कृत भाषा नबुझेहरूका निम्ति धर्मग्रन्थको ज्ञान प्राप्त गर्न सरल नभएका धर्मशास्त्रले बताएका आधारभूत कुराहरू सरल भाषामा सर्वसाधारणसमक्ष पुऱ्याई धार्मिक कर्तव्यपालन गर्ने गराउने उद्देश्य यसको रहेको छ ।

५.१.१.४ कथनपद्धति

विभिन्न धर्मशास्त्रहरूको अध्ययनको निचोड स्वरूप लेखिएको कर्तव्य दर्पणमा सङ्कलित कविताहरूमा कवि प्रौढोक्तिसिद्ध उक्तिविधानको प्रयोग गरिएको छ ।

५.१.१.५ भाषाशैली

कर्तव्य दर्पणमा प्रयुक्त भाषाशैलीका बारेमा कवि आफैले छन्द मिलाउने सुरमा लाग्दा कतै पुनरुक्ति पनि भएको र कतै हलन्त नगर्नुपर्ने ठाउँमा पनि गरिएको र गर्नुपर्ने ठाउँमा नगरिएको बताएका छन् :

होलान् शब्द अशुद्ध छन्द सुरमा, हल् पारिएका हुँदा,
 धेरै छन् पुनरुक्ति पूर्ण बुझलान् भन्ने चिताई लिंदा ।
 जस्तो होस् तर पढ्न हुन्छ सजिलो, होला भनी यो कृत,
 भाषा छ्यास्मिस छन् बुझी पढनुहोस्, होओस् सबैको हित ॥

- कर्तव्य दर्पण, परिशिष्ट, श्लोक ३७

यस सङ्ग्रहमा प्रकाश, पात्र, वायु, जल, पुष्प, ज्ञान, सिन्धु, योग, प्रज्ञा, अमृत, वृष्टि, विश्व, तृण, दन्त, जननी, उत्तम, विप्र, चरणोदक, जनक, नभ, ललाट, पूर्ण, श्वान, ताम्र, अग्नि, नेत्र, शिशुजस्ता प्रशस्त तत्सम शब्द, खेत, वीउ, पात, हात, दाँत, रोग, दूध आदि तद्धव र टुलुटुलु, सुटुक्कजस्ता केही अनुकरणात्मक शब्दहरूको पनि प्रयोग भएको छ । आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग नगन्य मात्रामा भएको छ । सामान्य पाठकहरूले पनि कविताको भाव बुझ्न सक्ने किसिमको रहेको छ । ऐले, लगाउनी, क्वै, संभ्र, तेसतो, पाइनी आदि भाषाका र कथ्य रूपको प्रयोग भएको छ हलन्तको अत्यधिक प्रयोग, छन्दभङ्गता, वर्णविन्यासगत त्रुटिहरू भाषाशैलीगत सीमाहरू हुन् । यसमा सामान्य पाठकहरूलाई लक्षित गरी सरल शब्दहरूको चयन गरिएको छ तर जिज्ञासु पाठकहरूले अभ्र बढी बुझ्न चाहेमा पाद टिप्पणीमा शब्दार्थ पनि दिइएको छ । प्रस्तुत सङ्ग्रहमा सरल बोलचालको भाषा प्रयोग यसरी गरिएको छ :

आहार शुद्ध गरदा मन शुद्ध हुन्छ,
 भै ज्ञान नित्य जन जीवन मुक्त हुन्छ ।
 आहारबाट मन बन्दछ रे सबैको,
 छन्दोग्य वेदहरूले उपदेश् दिएको ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २३४

५.१.१.६ लयविधान

विश्लेष्य कृति कर्तव्य दर्पणमा वर्णमात्रिक छन्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । वर्णमात्रिक लयका वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा, भुजङ्गप्रयात र अनुष्टुप् छन्दको प्रयोग गरिएको छ । अन्त्यानुप्रास मिलेको छ । गति, यति र विश्रामयुक्त श्रुतिमधुर लयका हरफहरू रहेका छन् । प्रस्तुत सङ्ग्रहमा कविले वर्णमात्रिक लयका वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा, भुजङ्गप्रयात र अनुष्टुप् छन्दहरूको प्रयोग

गरेका छन् । उपर्युक्त छन्दहरूमध्ये तुलनात्मक रूपमा वसन्ततिलका छन्दमा उनले बढी सिद्धि प्राप्त गरेको देखिन्छ । वसन्ततिलका छन्द प्रयोगको उदाहरण :

जस्वाट शक्ति श्रुति बीज भई प्रकाश,
अध्यात्म भौतिक जगत् हुन गो विकास ।
आत्मा स्वरूप विभुके सब यन्त्र पात्र
लिनोस् गुरो ! मम नमः मन बुद्धि छात्र ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक १

प्रस्तुत सङ्ग्रहमा वसन्ततिलका छन्द सबैभन्दा बढी प्रयोग भएको छ । यसमा एकाध ठाउँमा छन्दभङ्गको स्थिति देखा परेको छ । एउटा नमुना यस्तो रहेको छ :

तुलसीको सबै वर्णान् लेख्न अड्दैन एसमा,
पुण्य, शुद्धि, निरोग् हुन्छ पूजे खाए लगाएमा ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड २, श्लोक ११९

५.१.१.७ अलङ्कारविधान

केदारनाथ अधिकारीको प्रस्तुत कवितासङ्ग्रहभित्रका कवितामा अलङ्कारहरूको प्रयोग भेटिन्छ । अलङ्कार कविताको सौन्दर्य विचायक तत्त्व हो । शब्दालङ्कार र अर्थालङ्कारले कविताको बाह्य तथा आन्तरिक सौन्दर्य बृद्धिमा सहयोग पुऱ्याउँछ (ज्ञवाली र अन्य, २०५९: ७) । कविले प्रस्तुत कविता कृतिमा श्लेष, रूपक, उपमा, अन्त्यानुप्रास, दृष्टान्त, वृत्यानुप्रास आदि अलङ्कारहरूको प्रयोग गरेका छन् :

५.१.१.७.१ श्लेष

चन्दन, श्रीखण्ड उत्तम् अरु पनि र कुनै शुद्ध वेसार मिस्छन्,
अर्पे जुन् सार त्यै हो हरिकन नदिए सर्व वेसार बन्छन् ।

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ५२

होस् दूध् दही 'तर' सहित् तर लोभ मान्छन्
तार्नुहओस भवसागरदेखि भन्छन् ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड २, श्लोक २८०

उपर्युक्त कवितामा बेसार शब्दको प्रयोग दुबै हरफमा गरिएको छ । पहिलोमा अक्षता रङ्गाउन प्रयोग हुने पहेंलो रङ बेसारलाई बुझाउन प्रयोग गरिएको छ भने दोस्रोमा सारहीन भन्ने अर्थमा प्रयोग भएकाले शब्दालङ्कारको एक भेद श्लेष अलङ्कार पर्न गएको छ ।

उपर्युक्त दोस्रो श्लोकमा 'तर' अनेकार्थी शब्दको दुई ठाउँमा प्रयोग भएको छ । पहिलो 'तर' ले दूध दहीको तर भन्ने अर्थ र दोस्रो संयोजक-सूचक शब्दको रूपमा प्रयोग भएकाले श्लेष अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.१.७.२ रूपक

ब्रह्मिष्ठ विप्र गुरुको चरणोदकै जो,
श्रद्धालु भै गरनु पान् यहि तीर्थ मूल हो ।
साक्षात् हरी स्वरुप हुन् गुरु भक्त सज्जन,
सेवा र सङ्गत गरे भवसिन्धु तार्छन् ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १९, श्लोक ६५

उल्लिखित पद्यमा भवसिन्धु शब्दको प्रयोगमा भव नै सिन्धु हो अर्थात् संसार नै सागर हो भन्ने अर्थ व्यक्त हुने हुँदा रूपक अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.१.७.३ उपमा

तेस्तै वृकासुरसरी कलिमा त धेर,
वृत्यर्थि मात्र कि त तत्व विबुध् हुनन् र ।
वेदार्थ रस् दुरुपयोग् गरनन् भनेर,
वेदै असत् भनि भन्यौ नि सुगत् बनेर ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक ३१२

कवितामा वृकासुरजस्ता अबुध् र दम्भी भई आफ्नो भलो गर्नेमाथि जाइलाग्ने प्रवृत्तिलाई दुरुत्साह गर्न आग्रह गर्ने क्रममा कलियुगी मानिसहरूमा वृकासुरको आरोप गरी वाचक शब्द भैं प्रयोग भएकाले यसमा उपमा अलङ्कार प्रयोग भएको छ ।

चुहूने भाँडाको जलसरि छ है आयु सबको,
सडी जानेवाला शरिर अति कच्ची विभरको ।
गन्यो ता साराको हित अमर भो नाम उसको,
स्वयं नित्यै रे यो यदि मन बने निर्विषयको ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २६२

यसैगरी उपयुक्त दोस्रो श्लोकमा मान्छेको आयुलाई चुहूने भाँडाको जलसँग उपमा दिइएकाले उपमा अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.१.७.४ अन्त्यानुप्रास

पैले थिए जन सबै श्रुतितत्व मुग्ध,
ऐले भए जनहरू अति सूर्ति लुब्ध ।
बस्थे ति वेद रस अमृत पान गर्दै,
बस्छन् त सूर्ति विजया मद पान गर्दै ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड ३, श्लोक २६७

कर्तव्य दर्पणमा सङ्कलित श्लोकहरूमा अन्त्यानुप्रासको प्रयोगमा सचेतता देखिएको छ । प्रत्येक हरफको अन्त्यमा गरिने समान वर्णको पुनरावृत्ति नै अन्त्यानुप्रास हो । माथिका हरफहरूमा अन्त्यानुप्रासका निम्ति मुग्ध, लुब्ध, पान गर्दै, पान गर्दै जस्ता वर्णहरूको पुनरावृत्ति भएकाले यसलाई अन्त्यानुप्रासको उदाहरणको रूपमा लिन सकिन्छ ।

५.१.१.७.५ दृष्टान्त

वेद निन्दा गरी अन्य मात्रैको धर्म रोज्नु जो ।
फेद ढाली सुकी हाँगा कलमी पान खोज्नु हो ॥

- कर्तव्य दर्पण, परिशिष्ट, श्लोक १६६

प्रस्तुत कवितामा वेदको निन्दा गरेर अर्काको धर्म रोज्नु भनेको वृक्षलाई फेदबाट ढालेर सुकेका हाँगाबाट कलमी बनाउन खोज्नु जस्तै हो भनी पहिलो हरफको भनाइलाई पुष्टि दोस्रो हरफमा गरिएकाले दृष्टान्त अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.१.७.६ वृत्यानुप्रास

के को तिलक् ? किन लगाउने हो ? कसोरी ?

केही विवेचन यहाँ लिनुहोस हेरी !

सन्यासि शैवि, अनि सौर्य र क्षत्रि शाक्त,

तेस्रो विभूति विधि रे यिनका निमित्त ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ८७

वैष्णव् द्विपुण्ड्र र त्रिपुण्ड्र त शैव भन्छन्

यस्ता प्रमाण दिई वादविवाद गर्छन् ।

खण्डन् र मण्डन परस्पर वैमनस्य,

विद्रोह हास्य गरछन् नबुभी रहस्य ॥

- कर्तव्य दर्पण, खण्ड १, श्लोक ८८

उपर्युक्त श्लोकहरूमध्ये पहिलो श्लोकको पहिलो हरफमा 'क' वर्णको पटक-पटकको पुनारावृत्ति र तेस्रो हरफमा 'स' ध्वनिको धेरै पटक पुनारावृत्ति हुन जाँदा वृत्यानुप्रास अलङ्कार पर्न गएको छ । यस्तै दोस्रो श्लोकमा पनि 'ण' वर्णको पुनारावृत्तिले श्रुतिरम्यता बढाएकाले वृत्यानुप्रास परेको छ ।

५.१.१.८ शीर्षकविधान

शीर्षक कविताको महत्त्वपूर्ण अङ्ग हो । शीर्षकले सिङ्गो रचनाको प्रतिनिधित्व गरेको हुन्छ । विश्लेष्य कृतिको मूल शीर्षक **कर्तव्य दर्पण** अन्तर्गत विभिन्न उपशीर्षकहरूको व्यवस्था गरिएको छ । यसमा आचारमहिमा, बिहान ब्युँभेर गर्ने काम, भगवत् प्रार्थना, भोजन विधि, पशुहरूप्रति विवेक, अहिंसा, अतिथि सेवा, स्नान, जप र सन्ध्याविधि आदि थुप्रै उपशीर्षकहरूको व्यवस्था छ ।

कवि केदारनाथ अधिकारीको **कर्तव्य दर्पण** विभिन्न कविताहरूको सङ्ग्रह हो । यसमा मानव मात्रका लागि शास्त्रोक्त कर्तव्यको वर्णन छ । कविले यसको मूल शीर्षक **कर्तव्य दर्पण** रोजेका छन् । यसमा तीन खण्ड र परिशिष्ट भागसमेत चारओटा खण्डहरू छन् । ती चारै खण्डमा मानिसले गर्नुपर्ने धार्मिक सामाजिक, व्यावहारिक शास्त्रोक्त कर्तव्यहरूमा थुप्रै

उपशीर्षकहरू पनि राखिएका छन् । सबै उपशीर्षकहरूलाई समेट्न सक्ने **कर्तव्य दर्पण** शीर्षक चयन गरिएकाले यसको शीर्षक उपयुक्त छ । यसमा कविता सङ्ग्रहको शीर्षक सुहाउँदा विभिन्न संवाद र चित्रहरूको विधान पनि गरिएकाले शीर्षक र यसको केन्द्रीय कथ्यबीच तालमेल छ ।

५.१.१.९ निष्कर्ष

विश्लेष्य कृति **कर्तव्य दर्पण**, वेद, उपनिषद्, स्मृतिग्रन्थ, श्रीमद्भगवद्गीता र पुराणहरूको अध्ययनबाट प्राप्त धार्मिक चेतनाका साथै ज्ञान, कर्म र उपासनाको प्रस्तुति हो । यसमा विशेष गरी धार्मिक चेतना जगाएर शुद्ध आचार, विचार, अहिंसाद्वारा परजन्म सुधारका लागि आध्यात्मिक चिन्तन आवश्यक भएको कुरामा जोड दिइएको छ । प्रस्तुत कृति परिशिष्ट भागसमेत ४ खण्ड २२२ पृष्ठ सङ्ख्याको आयाममा विस्तारित रहेको छ । यसमा वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा, भुजङ्गप्रयात र अनुष्टुप् छन्दलयको प्रयोग गरिएको छ । धार्मिक चेतना प्रमुख विषय रहेको यस कृतिमा आचारमहिमा, ईश्वरभक्ति, मानवता, अतिथि सेवा, बालशिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, अहिंसाभाव, जितेन्द्रिय बन्नुको महिमा, सदाचार, सत्सङ्ग महिमा, सेवाभाव, पशुहरूप्रति विवेकी बन्न आग्रह, सामाजिक चेतना, जीवनको क्षणभङ्गुरता, नैतिक शिक्षा, परजन्म सुधारको आग्रह, सत्यकामना, कल्याणकामना, आध्यात्मिक शुद्धता, ब्रह्ममुहूर्तमा उठनुको महत्त्व, सत्पात्रता, कर्म र जातित्व, अभिमानीपनको नकारात्मकता, सद्भावयुक्त कर्मको महिमा, न्यायिक सोचजस्ता विषयहरू समावेश गरिएका छन् । तत्सम र तद्भव शब्दहरूको उचित संयोजनबाट कविता गेय बन्न पुगेको छ । उपमा, श्लेष, रूपक, दृष्टान्त आदि अलङ्कारहरूको समुचित प्रयोग भएको छ । कर्तव्याकर्तव्य बोध गराउने विभिन्न विषय समेटिएको प्रस्तुत कृतिको शीर्षक **कर्तव्य दर्पण** उपयुक्त र सार्थक रहेको छ ।

५.१.२ दिव्यमधु

दिव्यमधु (२०४८) कवि केदारनाथ अधिकारीको अध्यात्मवादमा आधारित कविता कृति हो । यसमा हिन्दूधर्म, संस्कृति र नैतिकता संरक्षणको आग्रह गरिएको छ । यहाँ यसको विषयप्रवेश, संरचना, भाव, चरित्रचित्रण, परिवेश, उद्देश्य, कथनपद्धति, भाषाशैली, लयविधान, अलङ्कारविधान र शीर्षकविधानको आधारमा विश्लेषण गरिएको छ ।

५.१.२.१ संरचना

दिव्यमधु ४० पृष्ठ सङ्ख्यामा लघु आकारको पुस्तिकाको रूपमा संरचित रहेको छ । 'श्री सर्वेश्वरो विजयते' भनी मङ्गलाचरणबाट सुरु गरिएको प्रस्तुत पुस्तकको आरम्भमा मङ्गलाचरण स्वरूप १ श्लोक स्तुति पद्य रहेको छ । यसको विषयसूचीमा १६ उपशीर्षकहरू रहेका छन् । पहिलो र दोस्रो श्लोकमा छोटो परिवेश वर्णनसहित तेस्रो श्लोकबाट मौरीहरूले मानवजातिसँग दयाको याचना गरिएका शिखरिणी छन्दका ३७ श्लोकहरू शार्दूलविक्रीडित र अन्त्यमा मालिनी छन्दका तीन श्लोकहरू रहेका छन् । कविले यसमा मौरीहरूको वेदना बुझी परपीडा त्याग्नु पर्ने भाव अभिव्यक्त गरेका छन् । तेस्रो उपशीर्षकमा मेरो पहिलो वर्णमाला उपशीर्षकमा शार्दूलविक्रीडित छन्दका १३ श्लोक चौथोमा गृहशिक्षा उपशीर्षक अन्तर्गत १२ श्लोक, पाँचौंमा मेरो सङ्कल्प उपशीर्षकमा शार्दूलविक्रीडित छन्दका १४ श्लोक, छैठौंमा बाल अर्ति शीर्षकमा अनुष्टुप् छन्दका ५ श्लोक, सातौंमा पञ्चश्लोकी शीर्षकमा अनुष्टुप् छन्दका ६ श्लोक, नवौंमा नेपाल आमा उपशीर्षकमा शार्दूलविक्रीडित छन्दमा ५ श्लोक, १० मा बाहु उपशीर्षकमा दश श्लोक, एघारौंमा अनुष्टुप् छन्दका २२ श्लोक, बाह्रौंमा पञ्चश्लोकी उपशीर्षकमा ५ श्लोक, सोह्रौंमा शान्तिपुष्प उपशीर्षकमा १ श्लोक गरी जम्मा १४० श्लोकहरू रहेका छन् ।

५.१.२.२ भावविधान

विश्लेष्य कविता सङ्ग्रह दिव्यमधुमा दया, आपसी मेलमिलाप, अहिंसा, मातृपितृभक्ति, नैतिक शिक्षा, विनम्रता, विवेकको चाहना, व्यवहारशिक्षा, परोपकार, विश्वबन्धुत्व, शान्तिकामनाजस्ता भाव अभिव्यक्त भएका छन् ।

५.१.२.२.१ दया

कवि अधिकारीले कवितामा टाठा-बाठा मानिसहरू मिलेर आफूलाई दबाउँदा तिमी कस्तो अनुभूति गर्छौ ? त्यस्तै मानवजातिले अरू प्राणिहरूप्रति पनि त्यस्तै सोचेर दया गरिदिए अरू निर्धा निमुखा प्राणीहरू पनि सुखको अनुभव गर्दथे भन्ने भाव यसरी व्यक्त गरेका छन् :

तिमीभन्दा बाठा मनुज मिलि तिम्रा उपरमा,
दिई व्यर्थै बाधा तिमिकन दवाए त करमा ।
कति रोला तिम्रो मनमन विचारी लिइदिए,
दया गथ्यौं निर्धा पनि अभयको स्वाद पिउँथे ॥

- दिव्यमधु, ४, श्लोक ८

५.१.२.२.२ आपसी मेलमिलाप

केदारनाथ अधिकारीले मौरीहरू जति धेरै सङ्ख्यामा भए पनि स्वार्थीपन त्यागेर आपसी मेलमिलापको आधारमा काम गरी परिश्रमपूर्वक आर्जन गर्छन् तर त्यो निर्धाहरूको श्रम लुटेर हामी मौरीहरूलाई दुःखित तुल्याउँछौं भन्दै मौरीहरूको मेलमिलापको उदाहरण कविले दिएका छन् । उदाहरणार्थ :

जति धेरै छन् तापनि सँग रहन्छौं मिलिजुली
दयावान् निस्वार्थी समपति बनाएर असली ।
खिचातानी कत्ती नगरी समता चाल गरछौं,
तिमीले निर्धाको धन हरदछौ दिक्क परछौं ॥

- दिव्यमधु, ८, श्लोक २७

५.१.२.२.३ अहिंसा

कवि अधिकारी अहिंसाका पक्षधर देखिएका छन् । कसैको रक्षाको निम्ति हिंसा क्षम्य मानिए पनि अहिंसालाई उनले ठूलो धर्म मानेका छन् । निर्दोष निर्धाहरू सबै निर्भयतापूर्वक बाँच्न पाउनुपर्छ भन्ने धारणा उनले यसरी व्यक्त गरेका छन् :

अहिंसा हो ठूलो व्रत बुझिलिनु पर्छ कठिनै,
कसैको रक्षामा हुनसकछ हिंसा पनि कुनै ।
सिधा निर्दोषी जो छन ति निमुखा प्राणीहरूमा,
सबैले नै पाउनु अभय सब यो विश्वभरमा ॥

- दिव्यमधु, ६, श्लोक १८

५.१.२.२.४ मातृ-पितृभक्ति

संसारका विभिन्न वस्तुहरू उपलब्ध छन् तर असल मित्र दुर्लभ छन् । विचित्र संसारमा सन्तानले पनि मातापिताप्रति शत्रुवत् व्यवहार गरेका छन् । आफ्ना सन्तानका निमित्त कस्ता- कस्ता कष्ट सहेर हुर्काए बढाएका सन्तानबाट वृद्धावस्थामा ठूलो आशाभरोसा राखेका हुन्छन् । रोग लागी अशक्त हुँदा मातापिताप्रतिको आफ्नो कर्तव्य पूरा नगर्ने कसरी सन्तानमा गनिन्छ ? भन्ने प्रश्न गर्दै मातापिताको भक्त बन्नु पर्ने आशय उनले यहाँ प्रकट गरेका छन् :

चित्रै चित्र विचित्र विश्वभरिमा सन्मित्र छन् दूर्लभ,
देखें स्वात्मज शत्रु भैं बनिएका वैचित्र्यको यो भव ।
कत्रा कष्ट सहे पिता जननिले ती सन्तती खातिर,
रोगी वृद्ध अशक्तिमा रुनु परे के पुत्र भो आखिर ॥

- दिव्यमधु, ४, श्लोक २

५.१.२.२.५ नैतिक शिक्षा

केदारनाथ अधिकारीका अन्य रचनाहरूमा जस्तै यसमा पनि नैतिकताको अभिव्यक्ति भेटिएको छ । परस्त्री र परधनमा अशक्त हुनु हुँदैन । आफू बाँच्नका लागि इमान्दारीपूर्वक आर्जन गर्नुपर्दछ । तीव्र उत्साहका साथ काम गर्नुपर्दछ र प्रिय वचन प्रयोग गर्नुपर्छ भन्ने आग्रह उनले यसरी गरेका छन् :

ओम् सारा समभी परस्त्रि धनमा आशा सदा छाडन,
औचित्य स्मृति साथ काम गरूँ रे यो प्राण पुज्नाकन ।
अँ मौनस्थ हऊँ परे वखतमा प्यारो गरी बोलन,
अः कैल्ये तँ न खा हरेस बुभिले उत्साह ली रे मन ! ॥

- दिव्यमधु, पृ १५, श्लोक ४

५.१.२.२.६ विनम्रता

कविले कुनै पनि काम भर्को नमानी गर्न, समयको सदुपयोग गरी उद्यमी बन्न, सादा जीवनयापन गर्न र सबैसँग समान व्यवहार गर्दै विनयशील बन्न सबैसँग यस्तो आग्रह गरेका छन् :

भक्तो कति नमानी भङ्गट सही उद्योग गर्ने बन्,
ब्रह्माद ध्वनि सुन्नु भित्रतिरका ब्रह्माप्तिका साधन ।
ठरौं हैन सदा बनेौं मधुरता उत्साह लिईकन,
ठरौं हैन विनम्रभाव समता, सम्झी लियौं रे मन ॥

- दिव्यमधु, १५, श्लोक ७

५.१.२.२.७ विवेकको चाहना

केदारनाथ अधिकारीले अर्कालाई दुःख दिनुभन्दा आफैँ सहन, आफ्नो काम आफैँ गर्न, सत्कर्मद्वारा आर्जन गर्न, परिश्रममा रमाउन र सोझा निमुखाहरूको चित्त नदुखाई विवेकी बन्न यस्तो आग्रह गरेका छन् :

कुनैमाथी ज्यादा दुःख नदिई आफैँ सहि बरु
सबै सत् उद्योगी बनि गरिलिए आर्जनहरू ।
नच्वाई निर्दोषीहरूकन विवेकी सब बने
बनिन्थ्यो के बन्दी-गृह नरकका यातन हरे ! ॥

- दिव्यमधु, १०, श्लोक ३२

५.१.२.२.८ व्यवहारशिक्षा

केदारनाथ अधिकारीले सत् व्यवहारमा जोड दिने गरेका छन् । सामाजिक व्यवहारमा अर्कालाई धोका दिनु र अर्कासँग लिएको पैचो छिटो नतिरेर धोखा दिनु अपराध हो । अर्काको धन, श्रम र पसिनाको कमाइ खानु महापाप हो । चुक्ली सुनेर विश्वास गर्ने र अर्कालाई चुक्ली सुनाउने गर्नाले फाटो बढ्छ । अतः यस्ता खराब बानी त्यागेर व्यवहारमा अर्कालाई धोखा दिन हुन्न भन्दै कवि भन्छन् :

अर्काको धन सापटी ऋण लिई धोका कटाउन्न म
अर्काको धन खानु रक्तसरि हो भन्ने सदा ठान्छु म ।
चुक्ली केहि म लाई दिन्न अरुको चुक्ली सुनी लिन म
चुक्ली प्रेम फटाउने हरि बुझी चुक्ली रुचाउन्न म ॥

- दिव्यमधु, २१, श्लोक ४

५.१.२.२.९ परोपकार

परोपकार नै पुण्य सम्भने कवि अधिकारीको विशेषता नै हो । अतः यस कविता सङ्ग्रहमा पनि परोपकारी बन्न सबैलाई आह्वान गरेका छन् । दीन दुःखीहरूप्रति दया गर्नु पुण्य हो । क्षमाशील बन्नु मानवता हो । दया, क्षमा र परोपकारमा जोड दिँदै कविले परोपकारको भाव यसरी पोखेका छन् :

दीन दुःखीहरूमाथि दया दृष्टि दिनू सदा ।

परोपकार हो कृत्य, क्षमा गर्नु मनुष्यता ॥

- दिव्यमधु, २६, श्लोक १

५.१.२.२.१० विश्वबन्धुत्व

कविले सबैमा समभाव राख्न, अहिंसालाई मूलमन्त्र ठान्न, विवेकी न्यायप्रेमी बन्न, सदा आफ्नो कर्तव्यप्रति सचेत रहन आफ्नो राष्ट्रको माया गर्दै मानवतावादी बनी विश्वबन्धुत्वको भावना राख्नुपर्छ भन्ने सन्देश यसरी दिएका छन् :

विवेक, न्याय, समता, अहिंसा, विश्वबन्धुता ।

मानवत्व, सुकर्तव्य स्वदेश स्नेह नित्यता ॥

- दिव्यमधु, २६, श्लोक ४

५.१.२.२.११ शान्तिको कामना

कविता सङ्ग्रहको अन्त्यमा कविले संसारमा शान्ति नदेखेकाले सद्भाव, विवेक, न्याय, मौनीभाव विकास गराएर सुशान्ति विश्वमा फैलियोस् भन्ने कामना यसरी गरेका छन्:

वादैवाद छ निर्विवाद पनि लौ छन् वा कतै छैनन

भन्छन् शान्ति सबै तथापि भवमा देखिन्न शान्तीपन ।

निर्मात्सर्य, विवेक न्याय, समता, उद्योग, सद्भावना

मैत्रीभाव, सुशान्ति पुष्प भरियोस् सम्पूर्ण यो विश्वमा ॥

- दिव्यमधु, ४०, श्लोक १

५.१.२.३ चरित्रचित्रण

प्रस्तुत कविता सङ्ग्रहमा सम्बोधक कविले सम्बोध्य 'तिमी' पात्रको विधान गरी कविकथन प्रकट गरेका छन् । साथै यसमा मानवेतर मौरीलाई पात्रको रूपमा प्रयोग गरी संवादात्मकता प्रदान गरिएको छ । यसैगरी आत्मा र मनलाई प्रश्नकर्ता र उत्तरदाताको रूपमा पात्रविधान पनि गरिएको छ ।

५.१.२.४ परिवेश

दिव्यमधु कविता सङ्ग्रहमा वासन्तिक मनोरमता प्रस्तुत गरिएको छ । अन्त्यमा पनि शान्तिपुष्प शीर्षकमा प्राकृतिक मनोहरता प्रस्तुत गरिएको छ । यसरी कविताको प्रारम्भदेखि नै प्रकृतिको सौम्य रूप प्रस्तुत गरिएको छ । घरको पटाहा, मौरीको घर र घरभित्र उनीहरूको गुनगुनबाट काव्यको आरम्भ गरी विभिन्न वनपाखाहरू डुलेर मधुरस सङ्कलन गरेको परिवेश र प्रकृतिमा मौरीलगायत कीट, पशु र पन्छीहरूको समेत परिवेश समेटिएको छ ।

५.१.२.५ उद्देश्य

प्रस्तुत कृतिको प्रमुख उद्देश्य नैतिकताको संरक्षण हो । मानिसले धर्तीका सबै पशुपन्छी र मानवजातिहरूमा अहिंसा र सेवाको भाव राख्नुपर्ने कुरामा कविले जोड दिएका छन् । मानिसले प्राणीहरूमा दया गर्न सक्नुपर्दछ । मानिस विवेकशील प्राणी भएकाले सबैको हितमा तत्पर हुन कविले आग्रह गरेका छन् ।

५.१.२.६ कथनपद्धति

विश्लेष्य कविता सङ्ग्रहमा सम्बोधक कवि पात्र र सम्बोध्य 'तिमी' रहेको छ । कविले तिमी पात्रलाई सम्बोधन गरी कविकथन प्रकट गरेका छन् । कहीं आत्मा सम्बोधित बनेको छ र आफ्नै अन्तर्मनले सम्बोधन गरेर कविकथन प्रकट गरेका छन् ।

५.१.२.७ भाषाशैली

दिव्यमधु कविता सङ्ग्रहमा सङ्कलित कविताको भाषाशैली सरल छ । कवितामा छन्द मिलाउने क्रममा यदाकदा व्याकरणका मानक नियमहरूको अतिक्रमण भएको छ तर यस्तो विचलन कवितामा लयात्मकता र श्रुतिरम्यताका लागि भएको छ । यस सङ्ग्रहमा तत्सम र अनुकरणात्मक शब्दको प्रशस्त प्रयोग भएको छ । वर्णविन्यासगत ह्रस्व-दीर्घको

प्रयोग एउटै शब्दमा दुई किसिमको ह्रस्व-दीर्घको प्रयुक्ति भेटिन्छ, जस्तै : वर्णगत रूपमा ए/य, समान प्रयोग, शब्दगत रूपमा तिमी/तिमि, मौरी/मौरि, बिच/बीच दोहोरो प्रयोग र शरिर, गुणि, बढिजस्ता प्रयोग भेटिएको छ ।

५.१.२.८ लयविधान

दिव्यमधुको लयविन्यासमा वर्णमात्रिक लयको प्रयोग भएको छ । यसमा अन्त्यानुप्रास मिलेको छ । अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित र शिखरिणी छन्दको प्रयोग भएको छ । यो कृतिमा तुलनात्मक रूपमा अनुष्टुप् छन्दमा कविलाई सिद्धि मिलेको देखिएको छ । यसमा पङ्क्तिद्वयगत अन्त्यानुप्रासको एउटा उदाहरण यसप्रकार रहेको छ :

धनी बाठाटाठा अधिक बलिया छन् सुखी सधैं
सिधासाधा जो छौं धनबल नहुने दुःखि सधैं ।
कति छौं दीनार्ती भनिकन म गुन्थें मन मन
सुनें साथै मौरीहरु गरदथे जो गुनगुन ॥

- दिव्यमधु, २, श्लोक २

यस सङ्ग्रहमा सङ्गृहित कवितामा सबैभन्दा बढी प्रयोग भएको अनुष्टुप् छन्दको एउटा उदाहरण यसप्रकार रहेको छ :

दीन दुःखीहरूमाथि दया दृष्टि दिनू सदा ।
परोपकार हो पुण्य क्षमा गर्नु मनुष्यता ॥

- दिव्यमधु, २६, श्लोक १

५.१.२.९ अलङ्कारविधान

अलङ्कार कविताको शोभाकारक तत्त्व हो । कविले यस सङ्ग्रहका कविताहरूमा, वृत्यानुप्रास, उपमा र दृष्टान्त अलङ्कारको प्रयोग यसरी गरेका छन् :

५.१.२.९.१ वृत्यानुप्रास

न भोकिनु हुँदा दुःख सुख मिल्दा न भल्लिनु ।
दुःखी देख्दा भरुन् आँसु, आफ्नै भुपडि सम्भुनु ॥

- दिव्यमधु, २५, श्लोक ३

भ्रमेला भव मेला हो, भ्रनक्क भै नभोक्किनु ।
गर्नु काम नभ्रिज्जिई जगतै हरि सम्भ्रनु ॥

- दिव्यमधु, २५, श्लोक १

उपर्युक्त हरफहरूमा 'भ्र' वर्णको पटक-पटक पुनरावृत्ति भएकाले यसमा वृत्यानुप्रास अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.२.१.२ दृष्टान्त

सुकेको यौटा नै रुख डढिदिंदा डढ्दछ वनै
यदि श्रीखण्डको रुख छ त सुगन्धै सब बनै ।
सबै हुन् वा यौटै पनि यदि दयावान् भइदिए
सिको लिनथे यौटैसँग पनि दया पाठ्य गरिए ॥

- दिव्यमधु, ६, श्लोक १७

उपर्युक्त हरफमा जसरी एउटा रुख डढ्दा सबै वन डढ्छ त्यस्तै एउटा मात्र श्रीखण्डको रुख हुँदा पूरै वन सुगन्धित हुन्छ त्यस्तै थोरै मात्र पनि दयावान् भए पनि अरूले सिको लिएर दयावान् बन्न सक्छन् भन्ने भाव प्रकट गर्दा दृष्टान्त अलङ्कारको प्रयोग भएको छ ।

५.१.२.१.३ उपमा

मनन गरि सुनें जो मौरीको आर्त शब्द
माननिय छ सबै त्यो बाह्य को लेख्न सक्छ ?
मन नयन खुलाए धन्य हुन् नित्य भन्छु
शरण विनय सुन्धौ भने छौ दीनबन्धु ॥

- दिव्यमधु, १३, श्लोक ४३

उपर्युक्त तेस्रो हरफमा प्रयुक्त मन नयन शब्दले मनरूपी नयन वा मन नै नयन अन्तर्मनको नयन (भित्री अँखा) भनी मनमा नयनको आरोप गरिएकाले रूपक अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.२.१० शीर्षकविधान

केदारनाथ अधिकारीद्वारा रचित **दिव्यमधु** कविताहरूको सङ्ग्रह हो । यसमा कविका विभिन्न उपदेशात्मक पद्यहरू सङ्कलित छन् । **दिव्यमधु** मूल शीर्षक राखिएको यस कविता सङ्ग्रहमा अमृतरूपी वचनहरू मधुजस्तै मधुर रहेका छन् । यसमा मौरीको गुनासो पनि समावेश गरिएको छ । मौरीले उत्पादन गरेको मह मानिसले निष्ठुर बनेर उसलाई मारेर खोसिदिने गर्दा उनीहरूको चित्त दुखेको प्रसङ्ग छ । अमृतमय उपदेश भन्ने अर्थमा पनि **दिव्यमधु** शीर्षक उपयुक्त छ । मधु उत्पादक मौरीहरूको प्रसङ्गसमेत यसमा वर्णन गरिएकोले **दिव्यमधु** शीर्षक सामञ्जस्यपूर्ण रहेको छ ।

५.१.२.११ निष्कर्ष

प्रस्तुत कृति सनातन धर्मसंस्कृतिको संरक्षणको आह्वान गर्दै मानवता, राष्ट्रियता, दया, अहिंसा र परोपकारमा जोड दिएको कृति हो । ४० पृष्ठको लघुपुस्तिकामा १६ उपशीर्षकहरू रहेको यो कृति लघु आकारको रहेको छ । यसमा दया, आपसी मेलमिलाप, अहिंसा, मातृपितृभक्ति, नैतिक शिक्षा, विनम्रता, विवेकको चाहना, व्यवहारशिक्षा, परोपकार, विश्वबन्धुत्व, शान्तिकामनाजस्ता भाव अभिव्यक्त भएका छन् । यहाँ अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी र मालिनी छन्दलयको प्रयोग गरिएको छ । शिल्पविधानका दृष्टिले यसमा वृत्यानुप्रास, उपमा र दृष्टान्त अलङ्कार विधानको स्वाभाविक प्रयोग भेटिएको छ । यहाँ कविले सरल तत्सम, तद्भव र केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरेका छन् । छन्द मिलाउने क्रममा यदाकदा व्याकरणका मानक नियमहरूको अतिक्रमण भए पनि कवितामा लयात्मकता र श्रुतिरम्यता थपिएको छ । यसमा सम्बोधक कवि पात्र र सम्बोध्य 'तिमी' प्रयोग गरी कविकथन प्रयोग गरिएको छ । दिव्य र मधु दुई तत्सम शब्दको साङ्केतिक शीर्षकचयन उपयुक्त रहेको छ ।

५.१.३ आनन्ददीपिका

आनन्ददीपिका (२०५१) कवि केदारनाथ अधिकारीको नैतिक शिक्षामा आधारित कविता कृति हो । यो आध्यात्मिक चिन्तनको संवादात्मक प्रस्तुतिको रूपमा रहेको छ । यसमा मानव जीवनसँग सम्बन्धित नैतिक, आध्यात्मिक, व्यावहारिक र शिक्षामूलक सन्देशहरू प्रकट गरिएको छ । यहाँ यसको विषयप्रवेश, संरचना, भाव, उद्देश्य, कथनपद्धति, भाषाशैली, लयविधान, अलङ्कारविधान र शीर्षकविधानको आधारमा विश्लेषण गरिएको छ ।

५.१.३.१ संरचना

प्रस्तुत कविता कृति लघु आधारमा संरचित छ । यसमा कुनै खण्ड वा उपशीर्षकहरूको व्यवस्था गरिएको छैन । प्रश्नको रूपमा आएको प्रथम श्लोकको उत्तरमा नै बाँकी सबै श्लोकहरू केन्द्रित रहेका छन् । यसमा अन्त्यानुप्रासयुक्त वर्णमात्रिक छन्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । यसमा जम्मा श्लोक सङ्ख्या ४७ रहेको छ । अन्तिम श्लोकमा जिज्ञासु मनले आफ्नो जिज्ञासा शान्त भएको र गुरुसँग प्रशन्न भई गुरुकै सँगमा जाने अठोट गरेको प्रसङ्ग रहेको छ । यसरी मनको तर्फबाट दुई श्लोक र बुद्धिको तर्फबाट ४५ श्लोकहरू प्रस्तुत गरिएका छन् । यसमा ४५ श्लोकहरू शादूर्लविक्रीडित छन्दमा, एक श्लोक उपजाति छन्दमा र एक श्लोक मालिनी छन्दमा रहेका छन् ।

५.१.३.२ भाव

प्रस्तुत कविताकृतिको मूल भाव ब्रह्मानन्द प्राप्ति नै हो । यसैको प्राप्तिका लागि आध्यात्मिक चिन्तन, सत्य उपदेश, नैतिक, धार्मिक, व्यावहारिक शिक्षामूलक सन्देश नै हो । प्रस्तुत संग्रहका सबै कविताहरू भक्तिरसयुक्त रहेका छन् । यसै भावको परिपुष्टिका लागि यसमा संयम, परस्त्रीप्रतिको दृष्टिकोण, सन्तोष, सुकर्मको महत्त्व, सांसारिक अस्थिरता, मोक्ष, निश्चिन्ता, रोग नै नरक हो, आत्मज्ञान र कर्मयोग, समता, योगाभ्यासजस्ता मूल भावहरू रहेका छन् । यहाँ यिनै मूल भावहरूको उदाहरणसहित विश्लेषण गरिएको छ ।

५.१.३.२.१ संयम

संयमको अर्थ इन्द्रियहरू आफ्ना वशमा राख्न सक्नु हो । कविले मन अत्यन्त चञ्चल स्वभावको हुन्छ, त्यसकारण शत्रुले सजिलै दबाउन सक्छन् । काम शत्रु हो यसैले मानिस संयमित हुनुपर्दछ । यही नै प्रमुख साधना हो । संयमबाट आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त हुन्छ भन्ने धारणा कविले यसरी व्यक्त गरेका छन् :

भन्दिन्छु प्रिय साथि हे मन ! तिमी हावासरी चञ्चल
हुन्छौ ता रिपुले दबाउँछन है होऊ सदा निश्चल ।
कामादी अरि जित्नु मोक्ष भइनु छन् धेर सत्साधना
जिज्ञासा दृढ राख्नु, संयमि हुनु पैलो छ यो साधना ॥

- आनन्ददीपिका, २, श्लोक २

५.१.३.२.२ परस्त्रीप्रतिको दृष्टिकोण

सबै मानिसहरू परस्त्रीप्रति समान धारणा राख्दैनन् । परस्त्रीप्रति दुर्भावना राख्दा धेरै समस्याहरू भोग्नुपर्दछ । अतः कविले परस्त्रीलाई मातासरि सम्झनुपर्दछ, भन्ने उपदेश यसरी दिएका छन् :

सम्भे मातृसरी परस्त्रि उसमा उब्जन्न दुष्कामना
क्रोधै हो यमराज सम्भि बचियोक्रोधाग्निका तापमा ।
जान्नन् चीज सँगै कुनै भनि बुभे फँस्दै न त्यो लोभमा
अन्धो पार्दछ मोहले बुभिलिने पर्दै न मोहान्धमा ॥

- आनन्ददीपिका, २, श्लोक ३

५.१.३.२.३ सन्तोष

हामीभित्र असन्तुष्टिको भकारी छ । असन्तुष्टिको भकारी भएकाले नभरिएर हामी दुःखी र पीडित छौं । हामी कहिल्यै नभरिने भकारी भर्न दुश्चेष्टा गरिरहेका छौं । मानिस आफूसँग उपलब्ध सफलता खुशी र उपलब्धिहरूमा जबसम्म स्थिर र प्रशन्न हुन सक्दैन, तबसम्म जीवन सुखमय बन्न सक्दैन । मानिस वरपर छिमेकीहरूको उपलब्धिहरूका कारण ज्यादा बेखुशी हुने गर्छ । कविले डाह, अभिमान त्यागेर सन्तोषी बनेर बस्नु नै सुख हो भन्ने भाव यसरी प्रकट गरेका छन् :

मात्लान् के मदपानले मद ठूलो अज्ञान वा गर्व हो
यो सम्झी अभिमान छाडी समता चैतन्य भै बस्छ त्यो ।
आफ्नो लाभ र हानि होस् कि नहओस् डाहापना श्वान हो
जानी मत्सरभाव छाड्दिइ सदा सन्तोषमा बस्छ त्यो ॥

- आनन्ददीपिका, पृ.३, श्लोक ४

५.१.३.२.४ सुकर्मको महत्त्व

कवि केदानरनाथ अधिकारी सुकर्ममा जोड दिन्छन् । खराब कर्मको फल कदापि राम्रो हुँदैन । कर्म खराब गर्नाले मानिसहरू दुःखबाट पार पाउन सकेका छैनन् । दुष्कर्मको फल केवल कर्ताले मात्रै भोग्नुपर्दछ । दुष्कर्मबाट आर्जित सम्पत्ति परिवारका धेरै सदस्यले

भोग गरे पनि फल कर्ताले मात्र भोगनुपर्दछ र ऊ एकलै खाडलमा पर्दछ । यो कुरा राम्ररी बुझेर विज्ञ मानिस दुष्कर्मबाट टाढा रहन कविले यस्तो शिक्षा दिएका छन् :

भोगिन्छन् परिवारले सहित भै जो चीज अर्जिन्छन्
दुष्कर्म फल ता जहानहरुले पर्देन रे भोगन ।
कर्ता जो छ उ मात्र पर्दछ अरे दुष्कर्मका गर्तमा
यो जानीकन विज्ञवर्ग कहिल्यै लाग्दैन दुष्कर्ममा ॥

- आनन्ददीपिका, ३, श्लोक ५

५.१.३.२.५ सँसारिक अस्थिरता

परिवर्तनशील संसारको गति विचित्रको छ । जो वस्तु हिजो थिए आज छैनन् । आज भए भोलि रहँदैनन् । त्यस्तै यो धर्तीमा चाहे राजा चाहे रड्क कोही केही लिएर जन्मेका होइनन् र धर्तीबाट विदा हुँदा पनि केही लग्नेनन् । धन सम्पत्ति पनि स्थिर रहँदैन । मृत्युपछिको बाटो सम्भरेर भगवान्भक्तिमा लागौं भन्ने भाव यसरी प्रकट गरेका छन् :

भिक्षुक् भूपति जो भए जगतमा के-के लिई जन्मिए ?
कुन्-कुन् वस्तु लिई गए स्थिर छ के ? यस्तै सदा सम्भिए ।
बाटो रौरवको प्रलोभतिरमा लाग्थ्यो र कुन् मानव ?
चैतन्य स्मृति मिल्छ हे ! मन बुभ्यौ सम्भे सदा माधव ॥

- आनन्ददीपिका, ४, श्लोक ६

५.१.३.२.६ मोक्ष

कवि अधिकारीले कवितामा ब्रह्मानन्द र मोक्ष प्राप्तिलाई पनि आफ्नो लक्ष्य बनाएका छन् । साथै अरूलाई पनि मोक्षप्राप्तिको साधन बताएका छन् । जन्मनु मर्नुको सिलसिला तोडेर स्वतन्त्र हुने र बन्धनबाट मुक्त हुनका लागि कर्म नै मुख्य साधन हो । मोक्ष, स्वर्ग र नरक छान्ने नायक तिमी नै हो भन्ने भाव कविले यहाँ व्यक्त भएको छ :

कामादि रिपु नै सधाउन सके सत् मित्र नै हुन् यिनै
यस्तै बन्ध र मोक्ष कर्म फलका छन् भावना मुख्य नै ।
केही साधन निमित्तका छन् कुरा कोही पछिका छन्
जो जानेपछि सर्व विज्ञसरि भो त्यो ब्रह्म हो हे मन ! ॥

- आनन्ददीपिका, ४, श्लोक ७

५.१.३.२.७ निश्चिन्ता

कवि अधिकारीले सुखमय जीवनको प्रमुख आधार आशा वा तृष्णा नलिनु नै हो भनेका छन् । तृष्णा पार गर्न नसकिने अपार नदीसमान हो । चिन्ता बडवानलाग्निसरि भयङ्कर हुन्छ । निश्चिन्तता नै अमृत हो अतः तृष्णा, चिन्ता र आशक्ति त्यागेर जीवनलाई सुखमय बनाउन कविले यस्तो उद्गार व्यक्त गरेका छन् :

आशा दुःख निराश दुःख यि दुवै छाड्नु महानन्द हो
तृष्णा बैतरणी अपार नदि हो तृष्णा छुटोस् तर्नु हो ।
चिन्ता हो बडवानलाग्निसरि नै निश्चिन्त हो अमृत
द्वन्द्वातीत समात्म विज्ञ उसमा आशक्ति छुट्छन् स्वतः ॥

- आनन्ददीपिका, ५, श्लोक ९

५.१.३.२.८ रोग नै नरक हो

कविले मानिसहरू आफ्ना शरीरको ख्याल नगरी जिब्रोको क्षणिक स्वादका लागि कुपथ्य चीजहरू सेवन गर्दा धेरै दुःख पाउनुपर्ने र शरीरका सबै अङ्गले त्यसको पीडा भोग्नुपर्ने भनाइ प्रस्तुत गरेका छन् । उनले रोगलाई नरकसँग तुलना गरेका छन् । अतः स्वस्थ वस्तु आहारको रूपमा प्रयोग गरी सन्तोष लिनुपर्दछ भन्ने भाव कविले यहाँ प्रकट गरेका छन् :

जिह्वाका वश भै कुपथ्य चिज जो खाँदा क्षणिक स्वाद छ
भोग्नु पर्दछ दुःख धेरतक नै सर्वाङ्गले निश्चय ।
पाछ्छन् आमिष औ कुपथ्य चिजले रोगादिका नर्कमा
जानी स्वास्थ्य हविष्य खाइ बस है वैराग्य सन्तोषमा ॥

- आनन्ददीपिका, ६, श्लोक ११

५.१.३.२.९ आत्मज्ञान र कर्मयोग

कवि अधिकारीले श्रीमद्भगवद्गीताको कर्मयोगलाई पनि आफ्ना कविताको विषय बनाएका छन् । आफ्नो क्षमता आफै पहिचान गर अर्थात् आत्मबोधद्वारा असल कर्म गर

फलको आशा नगर । नित्य सुकर्म गर, काम गर्नमा तिम्रो अधिकार छ भन्ने गीतादर्शन कविले यसरी प्रकट गरेका छन् :

धेरै पुण्य गरी अनित्य सुख नै हुन् पाइने स्वर्गमा
कामार्थै पनि साधना कठिन छन् भन् अल्प छन् भोगमा ।
आत्मज्ञान सुलभ्य नित्य सुख हो आत्मज्ञ हो हे मन !
गदैं गर्नु सुकर्म किन्तु फलको आशा न राखीकन ॥

- आनन्ददीपिका, ७, श्लोक १३

५.१.३.२.१० समता

कविले मानिसलाई समभाव राख्न सल्लाह दिएका छन् । अर्काले निन्दा गर्दा दुःखी बन्ने प्रशंसा गर्दा हर्षित हुने, सानो हानी भएमा पनि चित्त दुखाउने र थोरै लाभ हुँदा पनि हौसिने अर्थात् सुख दुःखमा अनावश्यक शोक वा हर्ष मान्ने प्रवृत्ति त्यागेर समतावादी बन्न कविले उपदेश दिएका छन् :

निन्दा वा स्तुति जे गरुन् स्वजनले स्त्री पुत्र वा अन्यले
होओस् हानि कि लाभ दुःख सुख वा प्राक्कर्मका हेतुले ।
लिन्नन् शोक र हर्ष, चित्त समता आत्मज्ञले राख्छन
सत् भाग्योदय-आत्म बोध हुनु हो जानी लिनू हे मन !

- आनन्ददीपिका, ९, श्लोक १६

५.१.३.२.११ योगाभ्यास

कविले योगाभ्यासलाई समाधि सुख मानेका छन् । त्यसमध्येमा पनि ज्ञानयोग अझ महत्त्वपूर्ण छ । योगाभ्यास छुट्यो भने मानिसको चित्त अन्यत्र दिग्भ्रमित हुन पुग्दछ । ब्रह्मज्ञानीहरू नित्य आत्मलाई शान्त राख्दछन् । अतः तिम्री पनि आत्मशान्तिका निमित्त योगाभ्यासी बन्नू भन्ने उपदेश यसरी दिएका छन् :

योगाभ्यास गरी समाधि सुख जो को सक्छ त्यो तौलन ?
योग-ज्ञान दुवै विमुक्ति सुख हुन् छन् भेद जुन् ती सुन ।
योगाभ्यास छुटे प्रपञ्चतिर नै जान्छौ तिमी हे मन !
ब्रह्म-ज्ञानि समाधिवत् हरबखत् शान्तात्ममै रम्छन ॥

- आनन्ददीपिका, १७, श्लोक ३२

५.१.३.३ उद्देश्य

आनन्ददीपिकाको मूल उद्देश्य ब्रह्मानन्द प्राप्त हो । यसैको प्राप्तिका लागि आध्यात्मिक चिन्तन, सत्य उपदेश, नैतिक धार्मिक र व्यावहारिक शिक्षामूलक सन्देश दिनु नै यसको प्रमुख उद्देश्य हो ।

५.१.३.४ कथनपद्धति

कथनपद्धतिको शाब्दिक अर्थ हुन्छ । अभिव्यक्त गर्ने तरिका वा व्यक्त गर्ने प्रणाली । ज्ञान विज्ञान अन्य क्षेत्रमा जस्तै कविता विधामा पनि कथनपद्धतिको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ ।

कवि अधिकारीले आध्यात्मिक चिन्तन र जीवनका विभिन्न पक्षका सत्य उपदेशहरू प्रस्तुत गर्नका लागि मान्छेका दुई मन प्राशनक मन र प्रबोधनकारी मनलाई क्रमशः मन र बुद्धिको माध्यमबाट कविताको आरम्भ र अन्त्य गरिएको छ । मनको प्रश्नबाट कविता सुरु भएको छ र बुद्धिको जवाफबाट खुशी भएर अन्त्यमा मनले कृतज्ञता प्रकट गरेको छ । यसमा संवादात्मकता प्रदान गर्नका लागि मात्र पात्रलाई माध्यम बनाइएको छ । पात्र अरू कोही नभएर स्वयम् कवि अधिकारी हुन् । अतः यसमा कविकथन प्रकट गरिएको छ ।

५.१.३.५ भाषाशैली

यस सङ्ग्रहमा सङ्गृहित कविताको भाषिक स्रोत तत्सम र तद्भव दुवै हो । यहाँ रिपु, मोक्ष, मोह, गर्व, भूपति, तृष्णा, शव, पुण्य, नित्य, श्रद्धा, स्तुति आत्मज, मधु भ्रमर, नर, ज्योति आदि केही कठिन तत्सम शब्द परेका छन् । तर यस्ता शब्दको संख्या कमै छ र खास कठिन लाग्दैनन् । लोकभाषाबाट छानी चुनी लिएका पदावली यहाँ प्रयुक्त छन् । भाषाशैली सरल र सुबोध अवश्य छन् । सुबोधताका लागि कविले भाषाको कथ्यरूपको पनि प्रयोग गरेका छन् । नदि/नदी जननी/जननि, केहि/केही, यि/यीबाहेक संज्ञा सर्वनाममा अतिक्रमण गरिएको छैन । अव्यय शब्दको कतै कतै दुवै रूप प्रयोग गरिएको छ । तर्कुले बर्धन्नेको यत्किञ्चित् उपेक्षा यदाकदा भेटिएको छ तापनि यस्ता त्रुटिहरू कमै भएकाले परम्परा र प्रचलनको समर्थन प्राप्त यस्ता त्रुटिहरू लगभग पद्य व्याकरणको अनुमतिभित्रै पर्दछन् र यतिलाई व्याकरण मर्यादा भङ्ग गरिएको भन्न मिल्दैन । उपर्युक्तबमोजिम ह्रस्व/दीर्घमा दोहोरो प्रयोग भेटिए पनि अर्थमा फरक पार्ने प्रकृतिका शब्दहरूमा अशुद्धि भेटिएको छैन ।

५.१.३.६ लयविधान

विश्लेष्य कवितासङ्ग्रह आनन्ददीपिकामा वर्णमात्रिक लयका शार्दूलविक्रीडित, उपजाति र मालिनी छन्दको प्रयोग गरिएको छ । यसमा सङ्ग्रहित ४७ श्लोकमध्ये ४५ श्लोक शार्दूलविक्रीडित, १ श्लोक उपजाति र १ श्लोक मालिनीका रहेका छन् । यसमा कविले बोलचालको भाषामा शार्दूलविक्रीडित छन्द प्रयोगको नमुना यसप्रकार छ :

मीठो होस् कि स्वतन्त्ररितले पूजा हओस् प्राणको
राम्रो व्यर्थ छ वस्त्र होस तनमा निर्वाहको मात्रको ।
होओस् देह निरामयी यति भने चाहिन्छ है प्राक्तन,
छाडी लोभ हरि-स्वरूप समझे हुन्छौ सुखी हे मन ॥

- आनन्ददीपिका, ८, श्लोक १४

५.१.३.७ अलङ्कारविधान

प्रस्तुत कृति सचेत रूपले अलङ्कारयोजना गरिएको कृति होइन । कविको ध्यान अलङ्कारयोजनामा भन्दा आफ्ना आध्यात्मिक भावहरू पोख्नमा केन्द्रित रहेको छ । तथापि भावावेगका क्रममा कहीं-कहीं अलङ्कारको सहज प्रयोग भेटिन्छ :

५.१.३.७.१ उपमा

भन्दिन्छु प्रिय साथि हे मन ! तिमी हावासरी चञ्चल
हुन्छौ ता रिपुले दबाउँछन है होऊ सदा निश्चल ।
कामादी अरि जित्न मोक्ष भइनु छन् धेर सत्साधना
जिज्ञासा दृढ राख्नु, संयमि हुनु पैलो छ यो साधना ॥

- आनन्ददीपिका, १, श्लोक १

उपर्युक्त कवितामा मनलाई हावासँग तुलना गरिएको छ । मनलाई हावाजस्तै चञ्चल भन्ने बुझाई दुबैको सादृश्यता देखाइएको छ ।

छन् सत् शास्त्र र सद्गुरु रविसरी अज्ञान्ध संहारक
होला हे मन ! दीप के तम निशा अज्ञान्धको नाशक ।
अन्धोमा कुन काम दीप शशि औ आदर्श विद्युत् रवि ?
छन् ता नेत्र पन्यो कि केहि तिमिमा यो दीपिकाको छवि ? ॥

- आनन्ददीपिका, २२, श्लोक ४३

उपर्युक्त कवितामा गुरुलाई रविसँग तुलना गरिएको छ । गुरुले सारा अज्ञानता नाश गरी दीपले अन्धकार नाश गरेर चहकिलो प्रकाश दिएजस्तै गुरुले अज्ञानता नाश गर्दछन् भन्ने भाव प्रकट गर्न रवि र गुरुबीच सादृष्यता देखाएकाले उपमा अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.३.७.२ दृष्टान्त

भक्ति, ज्ञान बुझेर मात्र छ र के ? संलग्न हो सार्थक
प्राणीमा अभयत्व दान र सदा-स्वाचार हुन् पोषक ।
नौका होस् वहना नहोस तर पार होला नदी वा तरी ?
स्वाचारादि बिना हओस् सफल वा बीऊ शिलामा छरी ? ॥

- आनन्ददीपिका, १३, श्लोक २४

उपर्युक्त पङ्क्तिमा जसरी नाउ मात्र भएर वहनाबिना नदी पार हुन सकिदैन त्यसैगरी पत्थरमा बीउ छरी नउम्रेजस्तै शुद्ध आचारबिना मुक्ति प्राप्त हुँदैन भन्ने भाव प्रकट गर्दा दृष्टान्त अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.३.८ शीर्षकविधान

विश्लेष्य कविता सङ्ग्रहको शीर्षकका लागि कविले आनन्द र दीपिका गरी दुई नाम शब्द चयन गरेका छन् । शीर्षकको रूपमा प्रयोग गरिएको आनन्द र दीपिका दुई शब्दको शाब्दिक अर्थ नियाल्दा आनन्द शब्दले आध्यात्मिक शान्ति वा ब्रह्मानन्द र दीपिका शब्दले सानो प्रकाशमय वस्तु भन्ने अर्थ प्रकट गरेका छन् । कवितामा वर्णित भाव र विषयवस्तु अध्ययन गर्दा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्य, तृष्णा र चिन्तालाई दबाएर सुकर्मी, निरामयी बन्न आग्रह गरिएको छ । सत्कर्म, सद्भाव र ईश्वरभक्तिको भावनाद्वारा आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त गर्न सकिने भाव व्यक्त गर्दै मानवजीवन चहकिलो बनाउने दीपको रूपमा प्रस्तुत गरिएका हुँदा शीर्षक र कथ्यका बीच सङ्गति मिलेकाले यसको शीर्षकचयन सङ्गतियुक्त देखिएको छ ।

५.१.३.९ निष्कर्ष

आध्यात्मिक चिन्तनसँग सम्बन्धित विषयवस्तुमा आधारित संवादात्मक प्रस्तुति रहेको आनन्ददीपिका ३६ पृष्ठ सङ्ख्यामा संरचित छ । यसका जम्मा ४७ श्लोकमध्ये ४५ श्लोक अन्त्यानुप्रासयुक्त शार्दूलविक्रीडित छन्दलयका रहेका छन् । कविकै प्राश्निक मन र

प्रबोधनकारी मनलाई क्रमशः मन र बुद्धि पात्र कल्पना गरी विषयवस्तु प्रस्तुत गरिएको छ । एउटा श्लोकमा सोधिएको प्रश्नको उत्तरका रूपमा सत्योपदेश, नैतिक, धार्मिक र व्यावहारिक सन्देश प्रदान गर्नका लागि संयम, परस्त्रीप्रतिको दृष्टिकोण, सन्तोष, सुकर्मको महत्त्व, सांसारिक अस्थिरता, मोक्ष, निश्चिन्ता, रोग नै नरक हो, आत्मज्ञान र कर्मयोग, समता, योगाभ्यासजस्ता मूल भावहरू रहेका छन् । कविले यसमा सरल बोलचालको भाषा प्रयोग गरेका छन् । तत्सम र तद्भव शब्दहरूको सरल प्रयोगबाट कवितालाई श्रुतिमधुर र गेय तुल्याइएको छ । सुबोधताका लागि कविले भाषाको कथ्य रूपको प्रयोग गरेका छन् । उपमा र दृष्टान्त अलङ्कारको प्रयोग कवितामा भेटिएको छ । शीर्षक र केन्द्रीय कथ्यबीच राम्ररी तालमेल मिलेको छ ।

५.१.४ संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ

संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ (२०५८) कवि केदारनाथ अधिकारीको वैराग्यको भाव अभिव्यञ्जित गर्ने खण्डकाव्य कृति हो । यहाँ यसको विषयप्रवेश, संरचना, कथावस्तु, भावविधान, चरित्रचित्रण, परिवेश, उद्देश्य, कथनपद्धति, भाषाशैली, लयविधान, अलङ्कारविधान र शीर्षकविधानको विश्लेषण गरिएको छ ।

५.१.४.१ संरचना

प्रस्तुत कृति ४० पृष्ठसङ्ख्यामा विस्तारित छ । यसमा कृतिको उठानमा मङ्गलाचरणको विधान छ । मङ्गलाचरणसमेत शालिनी छन्दका १५९ श्लोकको सङ्ख्यागत संरचनामा यो पूर्ण भएको छ । परिशेषमा छुट्टै एउटा मङ्गलकामनाको श्लोक राखिएको छ । यसमा खण्डयोजना देखिदैन । कृतिको मूल शीर्षकबाहेक अन्य शीर्षक वा उपशीर्षकको व्यवस्था छैन । यसरी प्रस्तुत कृतिले एउटा पूर्ण आकारको स्वरूप ग्रहण गरेको छ ।

५.१.४.२ कथावस्तु

कविले मनोज पात्रलाई माध्यम बनाएर मनोजले गुरुलाई सोधनी गरेको शैलीमा काव्य वा कथ्यको उठान गरिएको छ । सोधनीको विषय जन्म-मृत्युका बीच उराठ वा वैराग्यका स्थिति के हुन् वा हुन सक्छन् भन्ने रहेको छ । आत्मकेन्द्री अन्तश्चेतना वा ज्ञान (संज्ञान) नै यहाँ गुरु बनेको छ । त्यसैले यहाँ सम्बोधक र सम्बोध्य दुबै पात्र विचार सम्बाहक वा सम्प्रेषकका रूपमा प्रस्तुत भएका हुँदा प्रस्तुत काव्य विचारकाव्यका रूपमा

देखिन आएको छ । यसको कथ्य वा विचार सन्दर्भअन्तर्गत जन्म हुनुपूर्व गर्भावस्थादेखि जीवन र मृत्यु वा जन्मान्तरसम्मका कुराहरू रहेका छन् ।

विश्लेष्य कृति **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ**मा आख्यानयुक्त कथावस्तु नदेखिए पनि यसमा गर्भावस्था, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, यौवनावस्था र वृद्धावस्थासम्मको चिन्तन छ । मानिसको आत्मिक चेतनाले भोग्नु परेका पीडा, गर्भावस्थामा आमाले सहनु परेका व्यथा र बालापनको चञ्चलताको स्मरण गर्दै संसारदेखि नै वितृष्णा उत्पन्न भएको कुरालाई उठाइएको छ । युवावस्थामा प्रवेश गरेपछि चोरी, हिंसा, मद्यपान, जुवा र विश्वासघातजस्ता विकृतिहरूको सामना गर्नुपरेको र त्यसबाट भन्नु विरक्त हुनु परेको प्रसङ्ग जोडिएको छ । सामाजिक संरचनामा सरकार, मन्त्री र कर्मचारीमा देखिएको मनपरी एवं स्वार्थी प्रवृत्तिले अबै उराठ तुल्याएको तथा समाजमा देखा परेका हिंसा, लुटपाट देखा निर्धा निमुखाहरूको बाँच्ने आधार नै नभएको पाउँदा भन्नु वितृष्णा बढ्दै गएको कुरा यसमा अभिव्यक्त छ । समाजमा देखिएका प्राणीहत्यामा उद्यत, आचारहीनता अर्कालाई नीच ठानी घृणाको दृष्टि राख्ने स्वभाव, रूखो वचन, जालभेल, चुक्ली, फरेव, बेइमानी, महिलाहिंसा र बेचबिखन, तस्करी, कालाबजारीजस्ता कुप्रवृत्ति हावी हुँदै गएको देख्न र भोग्न पर्दा वितृष्णाको परकाष्ठा नाघेर फेरि संसारमा फर्कन नपरे हुन्थ्यो भन्नेसम्मको चिन्तन यहाँ व्यक्त भएको छ । अन्यायले धन जम्मा गर्ने, निर्धा निमुखाले न्याय नपाएको अवस्था र डाह, ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य बढ्दै गएकोले सत्गुणी, परोपकारी, मानवतावादी भावना भएका व्यक्तिहरू घट्टै गएको र आफू पनि वृद्धावस्थामा प्रवेश गरिसकेकाले जन्मँदाजस्तै पीडा मर्ने बेलामा पनि भोग्नु पर्ने, यौवनमै वैधव्य ब्यहोर्नु पर्ने, विधुर बन्न पर्ने जस्ता पीडाहरूलाई सम्भेर चिन्तित बनेको र अन्त्यमा सदाचारी, गुणग्राही, निर्लोभी, परोपकारी बन्न सबैमा आग्रह गरिएको छ ।

५.१.४.३ भावविधान

विषयवस्तु, भाव, विचार, कथ्यविषय, आदि जे नाम दिए पनि यो कविताको अनिवार्य तत्त्व हो । कविलाई जुन विचार वा अनुभूतिले कविता लेख्नका लागि उत्प्रेरित गर्दछ वा उत्साहित गर्दछ, त्यो उत्प्रेरक वस्तु नै विषयवस्तु हो । सांसारिकता, पूर्वजन्म, परजन्म काव्यका विषय हुन् । यिनै विषयलाई माध्यम बनाएर यस खण्डकाव्यमा प्रमुख रूपमा सांसारिक वितृष्णा, पूर्वजन्मप्रति विश्वास, ईश्वरभक्ति, नीति शिक्षा, आचारदीक्षा,

व्यवहारदीक्षा, सामाजिक असङ्गति, आमाको सहनशीलता, गहनाप्रति विमोह, आन्तरिक स्वभाव, शुद्ध आहारको महत्त्व, कर्मचारी प्रशासनमा सुधार, समाजको उत्थान, ज्ञान र विज्ञानको समन्वय, मानवीय सेवा, छोराछोरीमा विभेद र सामाजिक न्यायको भाव व्यक्त गर्दै सदाचारी बन्न आग्रह गरेका छन् ।

५.१.४.३.१ सांसारिक वितृष्णा

काव्यमा प्रौढावस्थासम्म पत्नी, पुत्र र धनको लोभमा भुल्दा ज्यादै दुःख, कष्ट सहनु परेकोमा पश्चाताप गर्दै सांसारिकताबाटै वितृष्णा उत्पन्न भएको भाव यसरी व्यक्त भएको छ :

प्रौढावस्था पुत्र नारी धनादि
मात्रै खोजी भोगियो दुःख ज्यादी ।
आफ्नो आत्मोद्धार हुन्नन् यिबाट
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, २८, श्लोक ११६

५.१.४.३.२ पूर्वजन्मप्रति विश्वास

कविले पहिले कुन-कुन जुनीहरू पार गर्दै मानवजीवन सम्भव भयो होला भन्ने जिज्ञासा राख्दै पूर्वजन्म र परजन्मप्रति विश्वास व्यक्त गरेका छन् :

पैल्यै मेरो जन्म केको हुँदो हो
के-के हारी गर्भ बस्नु प्यो हो ?
के फर्कन्थे फेरि संसारमा त
संसार देखी सारै लाग्छ उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, २, श्लोक २

५.१.४.३.३ ईश्वरभक्ति

जवानी र उमेर रहँदासम्म ईश्वरभक्ति, भजन नगर्नेहरूलाई अध्यात्मवादी आचरण बनाउनु पर्ने कविको धारणा छ । कवि अधिकारी ईश्वरभक्तिका लागि विदेशका तीर्थ र

मन्दिर धाउनुपर्छ भन्ने ठान्दैनन् । ज्ञान भयो भने देश नै स्वर्ग हुन्छ भन्ने भाव उनले व्यक्त गरेका छन् (अर्याल, २०६३: ३४) :

स्नानै मात्रै तीर्थमा हैन काम

सत्-शिक्षाले देश होस् पुण्य धाम ।

सार्थक हुन्थ्यो तीर्थ यो कामबाट

संसार देखी सारै लाग्छ उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, ३१, श्लोक १३३

५.१.४.३.४ नीतिशिक्षा

हिंसा, चोरी, मद्यपान, जुवा र परस्त्रीमा आसक्त हुनेहरू आगोले तृणहरू डढाएजस्तै ध्वस्त हुन्छन् । अतः यी सबै दुष्कर्म हुन् भन्दै उनले नीति शिक्षामा यसरी जोड दिएका छन् :

हिंसा, चोरी, मद्य, जुवा, परस्त्री

खोज्ने जान्छन् मात्र दुष्कर्म रोजी ।

सारा डढ्छन् अग्निले भैं यिबाट

संसार देखी सारै लाग्छ उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १०, श्लोक ३८

५.१.४.३.५ आचारदीक्षा

शास्त्रोक्त आचारको पूर्ण रूपमा पालन गरी शुद्ध आहार गर्नु नै अध्यात्मबोध हो र समय खेर फालेर अर्काको खोट मात्र देखाउन नहुने कुरा यसरी व्यक्त गरेका छन् :

सत्-शास्त्रोक्ताचार आहार शुद्ध

गर्नु यै हो हेतु अध्यात्मबोध ।

व्यर्थै अर्काको न खदेल्लु खोट

संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, ३६, श्लोक १५२

५.१.४.३.६ व्यवहारदीक्षा

मीठा वचन र सत्य व्यवहारले पराइ पनि मित्र बन्ने र टर्दा रूखा वचनले शत्रु मात्र बढ्ने यथार्थ प्रकट गर्दै चाकरी नगर्ने र घोंचपेच गरेर नबोल्ने मानिस व्यावहारिक जीवनमा सफल हुन सक्छन् भन्ने धारणा यसरी व्यक्त गरेका छन् :

टर्दा रूखो बातले शत्रु बढ्छन्
मीठो प्यारो सत्यले मित्र हुन्छन् ।
चाप्लुसे वा गर्दछन् छेडछाड
संसार देखी सारै लाग्छ उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १८, श्लोक ७३

५.१.४.३.७ सामाजिक असङ्गति

धनको लोभमा परी अर्काको वा आफ्नै पनि छोरी/श्रीमती बेचनसम्म पछि नपर्ने जस्ता घृणित कार्यको निन्दा यसरी गरेका छन् :

अर्काकी औ आफ्नी पत्नी र पुत्री
बेच्छन् दुङ्गाभैँ गराएर छाती ।
सुन्दा यस्तो राक्षसी काम दुष्ट
संसार देखी सारै लाग्छ उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, श्लोक ८७ पृ. २१

५.१.४.३.८ आमाको सहनशीलता

कविले बालक जन्मने बेलाको प्रसव पीडालगायत सन्तानको स्याहार सुसारमा कति घृणा र भर्को नमानी तल्लीन हुने स्वभावको वर्णन गरेका छन् । यस्तै बाल्यवस्थामा आमाले धेरै सेवा गरे पनि आफूबाट आमाको सेवा कार्यको बदलामा केही गर्न नसकेको भाव कविले यसरी व्यक्त गरेका छन् :

मैला विष्ठा क्यै घृणा नै न मानी
सेवा गर्नुभो सधै हर्ष मानी ।
साटो पूरा तीरिएनन् मबाट
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, ५, श्लोक १३

५.१.४.३.९ गहनाप्रति विमोह

महिला र पुरुषहरूले आफना नाक कान छेडेर गहना लगाउने गरेको काम कविले राम्रो मानेका छैनन् । उनले गहनालाई चोरको नासो भन्दै ज्यान जोखिममा पार्ने साधन मानेका छन् । बालालाई हत्कडीको संज्ञा दिँदै उनले महिला र पुरुषहरूले बढ्ता गहना लगाउने बानीले उराठ मान्दै यसो भनेका छन् :

आफै राम्रो नाक औ कान छेँडी
चोरको नासो ठोक्दछन् व्यर्थ टेंडी ।
बाला भिर्छन् हत्कडी हर्षसाथ
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, ८, श्लोक २९

५.१.४.३.१० आन्तरिक स्वभाव

मानिसको बाहिरी आवरण राम्रो देखिँदैमा राम्रो मान्न सकिँदैन । विभिन्न भेषभूषा, गरगहना र शृङ्गारसामग्री प्रयोगबाट राम्रो देखिएर केही लाभ छैन । यसको विपरीत असल स्वभाव, विद्याअध्ययन र सुशीलता मानिसमा अति आवश्यक भएको कुरा कविले यसरी व्यक्त गरेका छन् :

राम्रो के हो ? शील, विद्या, स्वभाव
छाला पोती मात्र के होस लाभ ?
यै भन् बढ्दो भेष नाना रवाफ
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, ९, श्लोक ३०

५.१.४.३.११ शुद्ध आहारको महत्त्व

हाम्रो खानपानमा शुद्धता आवश्यक छ । यसको लागि सफा र स्वस्थकर खाद्य वस्तु मात्र प्रयोग गर्नु पर्दछ । मानिसहरूले स्वास्थ्यको वास्ता नगरी अस्वस्थकर, अखाद्य वस्तुको प्रयोग गर्ने गरेको कुराबाट कवि व्यथित बनेका छन् :

कस्तै आपत्मा पनी शुद्ध चीज
सफ्फा ताजा स्वास्थ्यकर खानु पछ्छ ।
कोहीमा त स्वास्थ्यकै छैन याद
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १०, श्लोक ३५

५.१.४.३.१२ प्रशासनमा सुधारको अपेक्षा

कर्मचारी भनेका राष्ट्रका आँखा हुन् । तिनीहरूमा घुस लिने र दिने प्रवृत्ति र व्यभिचारमा सुधार आवश्यक छ । यसको सुधारकार्य कसले कहिले गर्ला भन्ने भनाइ यसरी अगि सारेका छन् :

आँखा नै हुन् राष्ट्रका कर्मचारी
उत्कोची क्वै अन्ध छन् बेविचारी ।
कैले कस्ले गर्छ यस्को सुधार ?
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १२, श्लोक ४५

५.१.४.३.१३ समाज उत्थानको चाहना

एकतामा बल हुन्छ । सबै एक भए मात्र समाजको विकास हुन सक्छ । यो तथ्य भुलेर केही स्वार्थीहरूले एकतामा आघात पुग्ने र निजी स्वार्थले प्रेरित भएर काम गर्न खोज्दछन् । यस्तो स्वार्थी प्रवृत्ति त्यागेर सबै एक भएर समाजको उत्थान गर्न कविले यस्तो आग्रह गरेका छन्:

भन्छन् सारा एकता हौं भनेर
क्वै स्वार्थीले काम गर्छन् लुकेर ।
के गर्दा उत्थान होला समाज
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १३, श्लोक ४८

५.१.४.३.१४ ज्ञान र विज्ञानको समन्वय

हाम्रो भौतिक शरीर पञ्चतत्वको मेलबाट निर्मित छ । यो देहमा सुख, शान्ति र समृद्धिका लागि ज्ञान र विज्ञान दुवै आवश्यक छ । अतः हामीले पूर्वीय आध्यात्मिक ज्ञान र आधुनिक भौतिक विज्ञान दुवैको समन्वय गराउन सक्नुपरेको छ । यसो हुन नसके सुख र शान्ति पनि सम्भव छैन भन्दै कवि भन्छन् :

आत्मा भौतिक् द्वन्द्वकै जीवनी हो
ज्ञानी विज्ञानी मिले उन्नती भो ।
मिल्दैनन् ता शान्तिकै छैन बास
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १७, श्लोक ६९

५.१.४.३.१५ मानवीय सेवा

सेवा नै धर्म हो । ज्ञानी मानिसले आफूले सकेको सेवा गर्दछन् । रोगी, वृद्ध र बालबालिका अशक्त हुनाले फोहरी हुन्छन् । जो ज्ञानी छ ऊ मात्र सेवामा तत्पर हुन्छ । यसको विपरीत यस्ता दीन र असहायहरूलाई सेवा गर्नुको साटो घृणा गर्ने मानिस समाजमा भएकाले कवि उराठ मान्दै यसो भन्छन् :

रोगी, बूढो, बाल फोहोरि हुन्छन्
यिन्को सेवा गर्दिने ज्ञानवान् हुन् ।
कोही हेर्छन् भन् घृणा दृष्टिबाट
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १८, श्लोक ७१

५.१.४.३.१६ छोराछोरीमा विभेद

हाम्रो समाजमा छोरा र छोरीमा विभेद गर्ने चलन अभिसम्म कायमै रहेको छ । छोरालाई बढी स्नेह गर्ने शिक्षा दिने कुरामा पनि फरक दृष्टिले हेर्ने यस्तो पक्षपातपूर्ण व्यवहार उजागर गर्दै कवि भन्छन् :

छोरा मात्रैमा अति-स्नेह गर्ने
छोरीलाई कति माया न गर्ने ।
क्वैमा यस्तो देखदा पक्षपात
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, २०, श्लोक ८२

५.१.४.३.१७ सामाजिक न्याय

हाम्रो समाजमा ठूलाबडा र निर्धानिमुखाहरूले समान रूपमा न्याय पाउन सकेका छैनन् । सम दृष्टिले न्याय गर्ने सत्य बोल्ने मानिसको कमी छ हाम्रो समाजमा । सबै कुरामा प्रमाण मात्र खोज्ने र साक्षीको कुरा मात्र सुन्दा पनि सामाजिक न्याय हुन सक्दैन भन्ने भाव कविले यसरी प्रकट गरेका छन् :

ठग्छन् एकलै पारि त्यो तिर्नु पर्दा
भन्छन् साक्षी वा लिखत् के छ ? देखा ।
न्यायी मान्छे छैन पर्याप्तमा त
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, २३, श्लोक ९५

५.१.४.४ चरित्रविधान

आफूभित्रको जिज्ञासु मन, चेतना र बुद्धिको माध्यम अन्तश्चेतना बनेको छ र त्यो आत्मदेवको रूपमा प्रस्तुत भएको छ । आत्मदेव ब्रह्मज्ञानी छ र त्यसले जिज्ञासु मनोजलाई प्रबोधन गरेको छ । अध्यात्मचेतनाद्वारा सम्बोधी मान्छेका दुई मन - १) जिज्ञासु अर्थात् प्राश्निक मन २) प्रबोधनकारी/चेतना वा मन । यी दुई मनलाई क्रमशः मनोज र गुरु पात्रविधानका माध्यमबाट काव्यलाई आरम्भ र अन्त्य गरिएको छ । मनोज (जिज्ञासु मन)ले काव्यको आरम्भमा गुरु (प्रबोधनकारी अन्तश्चेतना) सँग जिज्ञासा प्रकट गरेको छ र सुरुदेखि काव्यको लगभग समापनसम्म गुरुद्वारा प्रबोधन गरिएको छ । काव्यमा कवि अधिकारीले कथ्य प्रकटनका निम्ति पात्रलाई माध्यम मात्र बनाएका छन् । अर्थात् गुरुका माध्यमबाट कविकथन गरिएको छ ।

५.१.४.५ परिवेश

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा एउटा व्यक्तिले गर्भावस्थादेखि मृत्युपर्यन्त देखेभोगेका विविध अवस्था र परिवेशको चित्रण गरिएको छ । राज्य, राज्यको प्रशासनतन्त्र समाज र सामाजिक व्यवहार पनि परिवेशका रूपमा आएका छन् ।

५.१.४.६ उद्देश्य

विश्लेष्य काव्यको मूल उद्देश्य व्यक्तिभिन्न रहेका गलत व्यवहारहरू हटाउँदै समाज सुधारको अपेक्षा, आध्यात्मिक शान्तिको चाहनाका साथै नैतिक र व्यावहारिक शिक्षा प्रदान गर्नु रहेको छ ।

५.१.४.७ कथनपद्धति

विश्लेष्य खण्डकाव्यमा आत्मदेव र मनोजलाई पात्रको रूपमा प्रयोग गरिए तापनि कविनिबद्ध प्रौढोक्ति कथनपद्धतिको प्रयोग गरिएको छ ।

५.१.४.८ भाषाशैली

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा प्रयुक्त भाषा बोधगम्य र सम्प्रेषणीय छ । यसमा कोमल पदावलीहरूको प्रयोग र भाषिक सरलताका कारण अभिव्यक्ति सहज बनेको छ । यसमा प्रशस्त तत्सम र आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग छ । जस्तै चक्षु, पुष्प, अग्नि, उष्ण, माता, घृणा, चर्म, ललाट, नाद, नीति, द्रव्य, पुत्र, शान्तिजस्ता तत्सम शब्दहरू र तलास, रवाफ, बिल्ली, पाउडर, गुडवाय आदि आगन्तुक शब्दहरू प्रयोग भएका छन् । यसमा च्याँहाँ-च्याँहाँ, च्याट्टजस्ता अनुकरणात्मक शब्दहरू पनि प्रयोग भएका छन् । छन्द मिलाउने क्रममा कतै-कतै वर्णविन्यासमा भाषाको लेख्य रूपभन्दा कथ्यरूपको प्रयोग भएको छ । जस्तै : क्वै, अैले, अइले, सर्कार, सप्फा आदि ।

५.१.४.९ लयविधान

लय कविताको व्यतिरेकी तत्त्व/लय विशेषका कारण कविता अरू विधाबाट छुट्टिन्छ । कवितामा लय दुई प्रकारको हुन्छ मुक्तलय र बद्धलय । शास्त्रीय लयमा आधारित कविता बद्ध लयात्मक हुन्छ । प्रस्तुत संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ शालिनी लयमा लेखिएको छ । यसको लयविधान म(९९९).त(९९९).त(९९९).गु(९).गु(९) लय संरचनामा बाँधिएको छ । कविले

सुरूदेखि अन्त्यसम्म एउटै लयको प्रयोग गरेका छन् । प्रत्येक श्लोकमा अन्त्यानुप्रासको राम्रो निर्वाह भएको छ, जस्तै :

आशा तृष्णा खोज्दछन् बस्नु बास
गदैं नै छू ती निकाल्ने प्रयास ।
हे सर्वात्मन् ! धैर्य होस् भित्रबाट
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, २९, श्लोक १२२

५.१.४.१० अलङ्कारविधान

कविताको रूपतात्त्विक विधानमा अलङ्कारविधान पर्दछ । भावलाई गहन र प्रभावयुक्त बनाउन कवितामा शब्दालङ्कार र अर्थालङ्कारको प्रयोग हुन्छ । विश्लेष्य खण्डकाव्यमा रूपक, उपमा, दृष्टान्त र लोकोक्ति अलङ्कारहरूको प्रयोग भएको छ ।

५.१.४.१०.१ रूपक

आँखा नै हुन् राष्ट्रका कर्मचारी
उत्कोची ब्वै अन्ध छन् बेविचारी ।
कैले कस्ले गर्छ यस्को सुधार ?
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १२, श्लोक ४५

उपर्युक्त श्लोकमा राष्ट्रका कर्मचारीवर्गलाई आँखासँग अभेद आरोप गरेकाले रूपक अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.४.१०.२ उपमा

द्रोणाचार्यभैं कृतघ्नी न होऊ
विश्वासघाती द्रोणीजस्तो न होऊ ।
डर् मान्दोछू दुष्कणिक् नीतिबाट
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, ११, श्लोक ४१

उपर्युक्त श्लोकमा समाजका कृतघनी र विश्वासघाती व्यक्तिहरूसँग द्रोणाचार्य र द्रोणिको उपमा दिएकाले उपमा अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.४.१०.३ दृष्टान्त

माछौं सास्ती धेर न ख्वाइ मार
मूसोलाई विल्लीले भैं न मार ।
मूसोको त्यो देखदा मृत्युकष्ट
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १३, श्लोक ५२

उपर्युक्त श्लोकमा समाजका अगुवा हुँ भन्नेहरूले निर्धा निमुखाहरूप्रति गर्ने व्यवहार प्रष्ट पार्न बिराला र मूसोको प्रसङ्ग उल्लेख गरेकाले दृष्टान्त अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.४.१०.४ लोकोक्ति

‘ठट्टा कल्को बीउ’ भन्ने उखान् छ
ठट्टा गर्दा नाश नै पार्न सक्छ ।
ठट्टा गर्छन् होश न राखेर व्यर्थ
संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, १९, श्लोक ७५

उपर्युक्त श्लोकमा व्यङ्ग्यार्थक भनाइको अर्थ र आशय राम्ररी नबुझी ठट्टा गर्दा त्यसैको कारणले नोक्सानी र भगडा हुन सक्ने तथ्य प्रकट गर्न ठट्टा कल्को बिउ भन्ने लोकोक्तिको प्रयोग भएकाले लोकोक्ति अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.४.११ शीर्षकविधान

शीर्षक काव्यकृतिको नामकरण मात्र नभएर यसले कविताभिन्न आएको भाव, विचार र कल्पना आदिको उद्घाटनसमेत गर्दछ । साथै कृतिको मूल्य र रूपपक्षसँग पनि शीर्षक सम्बन्धित देखा पर्दछ । शीर्षक विशेषीकृत भएमा यसले कृतिको अन्तरबाह्य संरचना र भाषाशैलीले बहन गरेको समग्र विषयवस्तुको केन्द्रीय कथ्यलाई जाहेर गर्दछ । शीर्षक र केन्द्रीय कथ्यबीच सङ्गति हुन सकेन भने त्यस्तो कृति कमजोर बन्न पुग्छ (त्रिपाठी र अन्य

२०४९: १७) । प्रस्तुत कृतिको शीर्षक **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ**ले केन्द्रीय कथ्यलाई उद्बोधन गरेको छ । सुरूदेखि अन्त्यसम्म नै काव्यका प्रत्येक श्लोकहरूको चौथो पाउमा संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ भन्ने पद्यांश यसरी राखिएको छ :

प्रारब्धैले गर्भमा बस्नुपर्दा

रोएँ सारै दुःख त्यो भोग्नु पर्दा ।

मूर्च्छा पर्थे पेटका अग्निबाट

संसार देखी लाग्छ सारै उराठ ॥

- संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, पृ.२, श्लोक १

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा अभिव्यक्त वैराग्यभावलाई 'उराठ' शब्दले बहन गरेको हुनाले र प्रत्येक श्लोकमा 'उराठ' शब्दको प्रयोगले, सांसारिक विकृतिबाट उत्पन्न उराठ भावना, देवी देवताको नाउँमा काटमार गर्ने मानिसमा बह्दै गएको दानवीय प्रवृत्ति, असमानता, विभेद आदि देखेर उराठ भएको मनको समेत यसमा अभिव्यक्ति छ । यसबाट कविले आध्यात्मिक सचेतता जगाउँदै ज्ञानार्जन गर्न आह्वान गरेका छन् र सांसारिकताप्रति वैराग्यको भावना व्यक्त गरेको हुँदा काव्यको शीर्षक **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ** सार्थक छ ।

५.१.४.१२ निष्कर्ष

कवि केदारनाथ अधिकारी अध्यात्मवादी चिन्तन र भक्तिभाव धाराका कवि हुन् । पूर्वीय अध्यात्मचिन्तनमा आधारित उनका थुप्रै फुटकर तथा पुस्तकाकार कृतिहरू प्रकाशित छन् । प्रकाशित पुस्तकहरूमध्ये **संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ** कृति वैराग्यभावमा आधारित छ । यसमा जन्मदेखि मृत्यु र जन्मान्तरसम्मका कुराहरू रहेका छन् । सांसारिक विकृतिहरूबाट कविको मन वैरागी बनेको छ । सांसारिक भ्रमेलाबाट विरक्त बनेका कविको प्रस्तुत कृतिमा सांसारिक वितृष्णा, पूर्वजन्मप्रति विश्वास, ईश्वरभक्ति, नीतिशिक्षा, आचारदीक्षा, व्यवहारदीक्षा, सामाजिक असङ्गति, आमाको सहनशीलता, गहनाप्रति विमोह, आन्तरिक स्वभाव, शुद्ध आहारको महत्त्व, प्रशासनमा सुधारको अपेक्षा, समाजको उत्थान, ज्ञान र विज्ञानको समन्वय, मानवीय सेवा, छोराछोरीमा विभेद र सामाजिक न्यायका भावहरू अभिव्यक्त छन् । शालिनी छन्द, समस्यापूर्तिको ढाँचा, समस्यापूर्तिका रूपमा गुरुका माध्यमबाट कविकथन यसको शैली संरचनागत विशेषताहरू हुन् । यसमा रूपक, उपमा, दृष्टान्त र लोकोक्ति अलङ्कारको प्रयोग भएको छ । सरल भाषा-शैलीको प्रयोग भएको छ ।

कविनिबद्ध प्रौढोक्ति उक्तिविधानको प्रयोग गरिएको छ । समाज सुधारको अपेक्षा आध्यात्मिक शान्तिको चाहनाका साथै नैतिक र व्यावहारिक शिक्षा दिनु यसको प्रमुख उद्देश्य रहेको छ । कवितामा केन्द्रीय कथ्य र शीर्षकबीच सामञ्जस्य रहेको छ ।

५.१.५ सुदामाको कनिका

सुदामाको कनिका (२०६८) कवि केदारनाथ अधिकारीको अन्तिम तथा भगवान्भक्तिमा आधारित कविता कृत हो । अध्यात्मवादी कवि अधिकारीको भक्ति, ज्ञान र वैराग्य मिश्रित पूर्वीय दर्शनको सारसङ्क्षेपको रूपमा यो रहेको छ । यो श्रीमद्भागवतमा वर्णित श्रीकृष्ण र सुदामा भेटको प्रसङ्गमा आधारित छ । महाभारतमा उल्लिखित कुरुक्षेत्रको १८ दिनको युद्ध र अश्वत्थामाको चरित्रवर्णन पनि यसको विषय हो । यसमा महाभारतमा वर्णन गरिएको कुरुक्षेत्रको युद्धसँग सम्बन्धित विषय प्रसङ्गहरूलाई कविताको कथावस्तुका रूपमा लिइएको छ । यसमा आध्यात्मिक चिन्तनसँग सम्बन्धित कर्म, ज्ञान, उपासना, नैतिक शिक्षा आदि विविध विषयहरू पनि समेटिएका छन् । यसमा विश्लेष्य कृतिको विषयप्रवेश, संरचना, विषयवस्तु, भाव, चरित्रविधान, परिवेश, उद्देश्य, कथनपद्धति, भाषाशैली, लयविधान, अलङ्कारविधान र शीर्षकविधानको आधारमा विश्लेषण गरिएको छ ।

५.१.५.१ संरचना

सुदामाको कनिका ९६ पृष्ठ सङ्ख्यामा संरचित छ । यसको विषयसूचीमा चौबीस विषयशीर्षकहरू रहेका छन् । चौबीस विषयशीर्षकहरूमध्ये पहिलो सुदामाचरित्र रहेको छ, यसमा शिखरिणी छन्दका १६ श्लोक र अनुष्टुप् छन्दका ९६ श्लोक, उपजाति छन्दका १२, वसन्ततिलका छन्दका २, शार्दूलविक्रीडित छन्दका २१ गरी जम्मा १४६ श्लोकहरू रहेका छन् ।

दोस्रो उपशीर्षक अश्वत्थामाचरित्र रहेको छ । यसमा जम्मा ७७ श्लोकहरू रहेका छन् । यीमध्ये ७६ अनुष्टुप् छन्द र १ श्लोक उपजाति छन्दको रहेको छ । तेस्रो उपशीर्षकका ११ श्लोकहरूमध्ये १० शार्दूलविक्रीडित र १ उपजाति छन्दको रहेको छ । चौथो लक्ष्य चिन्तन १२ श्लोक शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रहेका छन् । पाँचौं गर्न नहुने केही कुराहरू शार्दूलविक्रीडित छन्दमा रचिएको छ । मद्य, मांसभक्ष दोष शार्दूलविक्रीडित छन्दमा ८ श्लोक, वसन्ततिलका छन्दमा २ श्लोक, अनुष्टुप् छन्दमा २ श्लोक र भगवतप्रार्थना, शरणाष्टक, मनबुद्धि प्रश्नोत्तरी आदि शीर्षकहरूमा गरी जम्मा ४८० श्लोक रहेका छन् ।

५.१.५.२ विषयवस्तु/कथावस्तु

सुदामाको कनिका कविता सङ्ग्रहको प्रमुख विषय धार्मिक रहेको छ । पौराणिक पात्र सुदामाको चरित्रवर्णन गर्दै सानो पापका कारणले पनि कस्तो फल भोग्नु पर्दछ ? भगवान्भक्तिले कस्तो फलको प्राप्ति हुन्छ ? मित्र कस्तो हुनुपर्दछ ? भन्ने विषयवर्णन गरेर भगवान्प्रति भक्ति प्रकट गर्नु नै यसको मूल विषय हो । यस्तै यसमा समावेश भएको दोस्रो विषय अश्वत्थामाचरित्र रहेको छ । यसमा महाभारतका पात्र अश्वत्थामाको वर्णन गरेर कृतघ्नी हुँदा कस्तो फल भोग्नुपर्दछ भन्ने देखाउन द्रुपद, पाण्डव र अश्वत्थामाको चरित्रवर्णन गर्दै मानिस सन्मार्गी र सत्कर्मी बन्नुपर्ने कुरामा जोड दिनु अर्को विषय रहेको छ ।

पोरवन्दर गाउँका निवासी श्रीकृष्णका बालसखा सुदामा गरिब तर ब्रह्मवेत्ता थिए । उनकी पत्नी कुचैलाले श्रीकृष्णबाट केही प्राप्त गर्ने अभिलाषाले सुदामालाई आफ्ना मित्र श्रीकृष्णसँग भेट गर्न उत्प्रेरित गरिन् ।

यसमा देवकीको आठौँ गर्भबाट कंसको मृत्यु हुने भयले उसले आफ्नी बहिनी देवकीलाई मार्न तत्पर हुँदा जन्मेको शिशु तिमिसमक्ष ल्याई बुझाउँछौँ भनेपछि छाडिएकोमा देवकीको आठौँ सन्तानको रूपमा कृष्ण जन्मेका थिए । जन्मनासाथ वसुदेवले कृष्णलाई गोकुल पुऱ्याएको, त्यो बेला जेलका पालेहरू निदाएका, ढोकाहरू आफैँ खुलेका र यमुना नदीले पनि बाटो छाडिदिएको प्रसङ्ग बयान गरिएको छ । यसरी गोकुलबाट योगमायालाई ल्याई कंसलाई सुम्पँदा योगमाया फुत्केर कंसलाई चेतावनी दिएका प्रसङ्ग पनि उल्लेख गरिएको छ ।

कंसले कृष्णलाई मार्न पुतना नामकी राक्षसी पठाउँदा उल्टै कृष्णले उसको प्राण चुसेको र उत्कच, तृणावर्त, यमलार्जुन, वकासुर, कंस आदिलाई मुक्त गरिदिएको र गोवर्द्धन पर्वत उचालेको प्रसङ्गहरू रहेका छन् । कृष्ण ५ वर्षको हुँदा गोपिनीहरूसँग लीला गर्दै गौसेवामा लागेको चर्चा छ । उज्जैनमा सान्दिपिनीका घरमा श्रीकृष्ण र सुदामासँगै विद्याध्ययन गरेको चर्चा रहेको छ । यो सबै चर्चा सुनेपछि भिक्षाटन गरेर ल्याएको चार मुठी कनिकाको कुटुरो कोखिलामा च्यापेर लौरो टेकेका, भुत्रा कपडा लगाएका सुदामा द्वारकातिर हिँडे । उता श्रीकृष्णले सुदामा आएको थाहा पाएर गरुडलाई लिन पठाउनु भयो । गरुडले तुरुन्तै द्वारका पुऱ्यायो । त्यहाँ पुग्दा द्वारपालेहरू पनि उनको भेषभूषा देखेर दङ्ग परेका थिए ।

श्रीकृष्णले तीन ठोका पार गर्नेबित्तिकै आँसु खसाल्दै बडो खातिरका साथ भित्र लगी राम्रा वस्त्रहरू पहिराई सिंहासनमा राखेर सुखदुःखका कुराहरू गर्न लागे । के ल्याएका भनी कृष्णले सोध्दा सुदामाले शङ्कोच मान्दै कनिका टर्क्याए । कृष्णले प्रेमपूर्वक एकमुठी खाएपछि सुदामासँग उज्जैनमा सँगै पढ्न बस्दाका कुराहरू र समिधा लिन गएका बखत एक रात एकलाएकलै विताउन पर्दा बाध्यताका कारणले सबैको भाग खाजा सुदामाले एकलै खाएका कुराहरू पनि भए । अन्तमा श्रीकृष्णले आदरसाथ सुदामालाई बिदाइ गरे ।

सुदामा घरमा आइपुग्दा आफ्नो घरको परिवर्तित अवस्था देखेर आश्चर्यमा परे । हीरा, सुन आदि मणिहरू जडित घरमा बगैँचा, नोकरचाकर, जलाशय, दूधालु गाईहरू रहेको अवस्था देखे । पत्नीले उनलाई भित्र लगिन् । दुवैले कृष्णभक्तिको महिमा वर्णन गरे । अन्त्यमा सुदामाले आफ्नो पत्नीसँग आफूले लामो समयसम्म गरिबीमा बिताउन पर्नाको मुख्य कारण सान्दिपिनी गुरुकहाँ बस्दा सबै साथीहरूको भागको खाजासमेत एकलै खाएकोले हो भन्ने गोप्य कुरा बताए । गल्ती सानै भए पनि ठूलो पाप भोग्नुपर्ने र सत्य कर्म र भक्ति थोरै मात्र गर्दा पनि धेरै फल पाइने कुरा व्यक्त गरे ।

दोस्रो शीर्षकमा अश्वत्थामा चरित्र दिग्दर्शन रहेको छ । यसमा महाभारत युद्धको संक्षिप्त वर्णन छ । अठारौँ दिनमा कुरुक्षेत्रको युद्ध समाप्तपछि पाण्डवहरू आराम गरिरहेको अवस्थामा द्रौपदीका साथ रहेका पाँच पाण्डवपुत्रको हत्या द्रोणिले गरे । श्रीकृष्ण र अर्जुनले द्रोणिलाई पक्रेर द्रौपदीका पासमा ल्याई बध गर्ने कुरा गर्दा द्रोण बाँचिरहून् भनी क्षमा दिदा कृष्णले ज्युँदै मरेसरि बनाउने निर्णय गरे । यसै सन्दर्भमा द्रोणको र द्रुपद राजाको वैमनस्यको पूर्व प्रसङ्ग र त्यस समयमा पाण्डवहरूले द्रुपदलाई पक्रेर ल्याई लज्जित गराएको र द्रुपदको आधा राज्य द्रोणलाई दिलाएर भिक्षुक द्रोणलाई वैभवपूर्ण बनाएको महाभारतको कथावस्तुको संक्षिप्त वर्णन छ । पछि गएर द्रोणले गुणको बदला गुण गर्नुपर्नेमा पाण्डवहरूको घात गर्ने कुरामा मात्र सदा सक्रिय रहे । त्यति मात्र नभई उनी अत्यन्त र विश्वासघाती, अन्यायी तथा कृतघ्न बन्दै गए । द्रोणले कौरवपक्षसँग मिलेर निःशस्त्र अभिमन्युको हत्या गरे । यस्ता अश्वत्थामाका कुकृत्यहरूका बावजूद पनि द्रौपदीका दयाले बाँच्न त पाए तर टुपी, जनै काटी अर्धमुण्डन गराएर छाडिदिएको घटनाको वर्णन गरिएको छ । यसरी लज्जित भएर डुलेका अश्वत्थामाले जनै, टुपी काटेर मोक्ष भइन्छ भन्ने कुराको प्रचारप्रसार गर्दै हिंड्न थाले । अतः विशिष्ट मानिसको गल्तीले धेरैलाई नराम्रो असर पार्दछ, भन्ने कुरा देखाउँदै कृतघ्न, विश्वासघाती र अन्यायी नबन्न सन्देश दिएका छन् । यही श्राप

र सजाय पाएपछि पनि उनको मति अभै सुधिएन । अभिमन्युकी पत्नी उत्तराको गर्भस्थ शिशुहत्या गर्ने उद्देश्यले ब्रह्मास्त्र प्रयोग गर्न पुगे । श्रीकृष्णका प्रयासबाट उत्तरा सकुशल रहिन्, परीक्षित् जन्मे र पाण्डवको वंशरक्षा सम्भव भयो ।

५.१.५.३ भावविधान

सुदामाको कनिका कविता सङ्ग्रहको विषयवस्तु भगवान्भक्ति र सत्चरित्रता हो । यो भावलाई प्रकट गर्नका लागि सुदामाको चरित्र प्रस्तुत गरिएको छ । यसको पृष्ठपोषक भावमा हरिभक्ति, दर्शनभेटमा शिष्टाचार, मैत्रीप्रेम, साक्षापनको भावना, श्रद्धाभाव, क्षमाशीलता, सत्मार्ग उन्मुखता, आचारमहिमा, सत्भक्ति, सत्य र प्रियवादिता, अहिंसा, दयाभाव, मोक्षप्राप्ति, दुष्प्रवृत्तिप्रति नकारात्मक भाव, रिसप्रति वितृष्णा, अस्तित्व रक्षा, भविष्य चिन्तन, मनको शुद्धता, परोपकार, श्रमप्रति सम्मान, आत्माको शुद्धता, सुकर्मको महत्त्व, कर्मको महानता, वैराग्य, सन्तोष, बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार, पुण्य, शत्रुता पहिचान, सुसाधना, सत्मार्ग महिमा, धीरता, महात्माको अनुशरण, समन्वयवादी चिन्तनका भावहरू प्रकट भएका छन् ।

५.१.५.३.१ हरिभक्ति

सुदामा र उनकी पत्नीको संवादमा उनीहरूको गरिब भए पनि भगवान् कृष्णप्रति असीम श्रद्धा र भक्ति गर्थे । कुनै चिन्ता लिदैनथे । पत्नीको आग्रह स्वीकार गर्दै हरिको दर्शनले पनि जन्मजन्मको पाप छुट्छन् भन्ने सम्भेर हरिदर्शनको लागि जान तत्पर भएका सुदामा हरिभक्तिको भाव यसरी प्रकट गरेका छन् :

सके केही मिला नहिं त दरशन् हुन्छ हरिको
उहाँका दर्शनले सकल दुःख छुट्छन् जनमको ।
यती जुत्ती बुद्धी गरिकन पनी केही नभए
यताको दुःख सम्झी भजन गरूँला पो म त हरे ! ॥

- सुदामाको कनिका, २, श्लोक ९

५.१.५.३.२ दर्शनभेटमा शिष्टाचार

सुदामाचरित्रको कथावस्तुअनुसार सुदामा श्रीकृष्णलाई भेट्न जाने कुरा त निश्चित भयो तर लिएर जाने चीज उनीसँग केही थिएन । यसै प्रसङ्गमा मातापिता, गुरु अनि भला मानिसकहाँ जाँदा खाली हात जानु हुँदैन भन्ने शास्त्रहरूका प्रमाणसहित कवि भन्छन् :

पिता, माता, द्यौता, गुरु अनि भला मानिसकहाँ
नजानू खाली हात् भनि लिखित छन् शास्त्रहरूमा ।
लगौं सौगात् केही मन बहुत चङ्गा गरिकनै
म जान्छु द्वारीका हरिसँगमहाँ बात गरनै ॥

- सुदामाको कनिका, १६, श्लोक ११५

५.१.५.३.३ मैत्रीप्रेम

आफ्ना बालसखा सुदामा श्रीकृष्णकहाँ पुग्दा भुत्रा कपडा लगाएका दीन अवस्थाका मित्रलाई राम्रा कपडाहरू लगाइदिएर राम्रा आसनमा राख्दै पाउ मुसारनुभयो । रुक्मिणीले पनि पङ्खा हाँकेर स्वागत गर्दै मित्रप्रेम दर्साएको प्रसङ्ग यसरी व्यक्त गरिएको छ :

साष्टाङ्गादि प्रणाम सादर गरी श्रीकृष्णजीले अनि
राम्रा वस्त्रहरू लगाइदिइ फेरु सिंहासनैमा लगी ।
राखी ब्राह्मणको मुसारनु भयो पाऊ खुसी भैकन
पङ्खा हाँकिदभइन् ती रुक्मिणिजिले सत्-मित्र मानीकन ॥

- सुदामाको कनिका, १७, श्लोक १२१

५.१.५.३.४ साभ्नापनको भावना

श्रीकृष्ण सुदामा अध्ययनका लागि गुरुकहाँ बस्दा सबै साथीहरू मिलेर समिधा लिन जाने क्रममा सबैको खाजा सुदामाका साथमा रहेको र ठूलो पानीका कारणले सबै भिन्न-भिन्न भएर त्यो रात बिताउनु पर्दा आफ्ना साथमा रहेको सबैको भाग खाजा सुदामाले एकलै खाँदा आफू गरिव भएर रहनु परेको प्रसङ्ग उल्लेख गर्दै साभ्ना चीज आफू खुशीले एकलै कहिल्यै प्रयोग गर्न हुँदैन भन्ने प्रसङ्गमा कवि भन्छन् :

भन्छु सत्य र गोप्य बात बुभिल्यौ प्यारी कुचैली तिमि
साभा चीज नखानु आफुखुसिले एकलै कहिल्यै कहिं ।
सानै गलित भए पनी फल ठूलो पर्ने सबै भोग्नु नै
थोरै होस् मन कर्म सत्य गरिए फल् पाइने धेर नै ॥

- सुदामाको कनिका, २२, श्लोक १४३

५.१.५.३.५ श्रद्धाभाव

सुदामा-कृष्ण भेटको प्रसङ्गमा भगवान्लाई खुशी पार्ने केही महत्त्वपूर्ण उपहार थिएन । खाली हात जान हुँदैन भनेर केवल ४ मुठी कनिका मात्र लिएको थियो तर अत्यन्त श्रद्धाका साथ लिएकाले कृष्णले के ल्यायो ? भनी खोसेर खाइदिनुभयो र कृष्ण प्रसन्न भएर गरिब सुदामालाई वैभवपूर्ण तुल्याई दिनु भयो भन्ने भाव यसरी यहाँ प्रकट भएको छ :

भक्तिथ्यो अरु क्यै थिएन लगियो ठुटे कनिका हरे
च्याप्येँ काखिमहाँ म ता सरमले खोस्नुभयो कृष्णले ।
एक् फाँक् खानुभयो अती खुसी हुँदै धेरै बयान् के गरुँ
भक्ति-प्रेम-फलस्वरूप बुभिक यो सम्पूर्ण वैभवहरू ॥

- सुदामाको कनिका, २२, श्लोक १४५

५.१.५.३.६ क्षमाशीलता

पाँच पाण्डवपुत्रहरूको हत्याको अभियोगमा श्रीकृष्णले द्रोणिलाई पक्रेर ल्याई उसको बध गर्ने कुरा गर्दा द्रोपदीले अब यिनको बध गरेर पनि मेरा पुत्रहरू बाँच्दैनन् । वरु यिनी बाँचिरहून् यिनकी मातालाई नरुवाऊँ भन्ने क्षमाभाव व्यक्त गरेको प्रसङ्गमा कवि भन्छन् :

हाम्रा पुत्र त बाँच्दैनन् द्रौणि बाँचिरहून् वरु ।
द्रौणि मार्दा त यिनकी माता रोलिन् धुरू-धुरू ॥

- सुदामाको कनिका, २६, श्लोक १७

५.१.५.३.७ सन्मार्ग उन्मुखता

कवि अधिकारीले सन्मार्गमा जोड दिदै आएका छन् । सत्पथ लिने र दुष्पथ त्याग्ने गर्नुपर्दछ । उपनिषद्हरूले राम्रो मार्ग रोज्न सत्शिक्षा दिएका छन् भन्ने कुरा कविले यसरी व्यक्त गरेका छन् :

राम्रा सत्पथ पालनु दुष्पथ छन् त छाडनु ।
उपनिषदले भन्छन् पर्छ है मार्ग रोजनु ॥

- सुदामाको कनिका, ३०, श्लोक ६८

५.१.५.३.८ आचारमहिमा

कवि अधिकारीले धार्मिक कार्यहरू गर्दा कर्ता र पुरोहित दुवैले निष्ठापूर्वक आचारको पालन गरेर कार्य सम्पन्न गर्नुपर्दछ । आचारबिनाको कार्य निष्फल हुन्छ । आचारहीनताले दिती र नलले ठूलो कष्ट सहनु परेको उदाहरण दिदै शुद्ध आचारको महत्त्व कविले यहाँ व्यक्त गरेका छन् :

कर्ता होस् कि पुरोहितादि बनियोस् आचार गर्दै न जो
लाग्छन् पाप दुवैथरीकन भनी पक्का कुरा सम्भ्र यो ।
भङ्गै भो दितिको महान् व्रत सबै आचारकै गलितले
पायो दुःख कलिले कुबद्धि नलको आचारकै हीनले ।
हुन्छन् पूर्ण सु-सङ्ग शास्त्र विधिले आचार सद्भक्तिले ॥

- सुदामाको कनिका, ३३, श्लोक ६

५.१.५.३.९ सद्भक्ति

कविले जप, ध्यान, पाठ, यज्ञ र दान गर्दा भक्तिपूर्वक गर्नुपर्दछ । यज्ञको कार्य र विधि सफा र शुद्ध हुनुपर्दछ । दान गर्दा सुपात्रहरूमा दिनुपर्दछ । शुद्ध रीतले सद्भक्तिपूर्वक गरेको कामबाट मात्र उत्तम फल प्राप्त हुन्छ भन्ने भाव यसरी व्यक्त भएको छ :

उठ्नु ब्रह्ममुहूर्तमा त परमात्मा ध्यान गछौं भने
गर्नु पाठ परन्तु नाम हरिको गाइन्छ जस्मा भने ।
गर्नु यज्ञ सफा र शुद्ध रितले सद्भक्ति लिन्छौं भने
देऊ दान सुपात्र दीनहरूमा पौचन्छ सेवा भने ॥

- सुदामाको कनिका, ३५, श्लोक २

५.१.५.३.१० सत्य र प्रियवादिता

कविले सत्शास्त्रहरूको अध्ययन गरी मनमा उब्जने शङ्का र भ्रमहरू निवारण गर्न सल्लाह दिँदै इन्द्रियहरू आफ्ना अधीनमा राख्न आग्रह गरेका छन् । यसैगरी कविले सत्य तथ्य कुरा अर्कालाई नबिभूने गरी बोलौं भन्ने सत्उपदेश यसरी दिएका छन् :

हेर्नु शास्त्र अनेक सत्यपथमा उब्जन्न शङ्का भने
बोल्नु तथ्य कुरा परन्तु अरुमा घोचिन्न केही भने ।
बस्नु रे उपवास इन्द्रियहरू उन्मत्त नै छन् भने
घुम्नु तीर्थ बलिष्ठ देह धनको छन् राशि धेरै भने ॥

- सुदामाको कनिका, ३५, श्लोक ४

५.१.५.३.११ अहिंसा

कवि अहिंसा नै परमधर्म हो भन्ने कुरामा विश्वस्त छन् । मानिसको राग द्वेषहरू शुद्ध जलद्वारा पखाल्नुपर्दछ । माछाले भैं नुहाएर मात्र पुण्य प्राप्त हुँदैन । दयालु नबनी हिंसा गरिएमा सबै पुण्यहरू नाश हुन्छन् । अतः अहिंसा ठूलो धर्म हो भन्ने प्रष्ट पार्न कविले यस्तो उद्गार व्यक्त गरेका छन् :

राग-द्वेषहरू पखाल्नु मनको गङ्गाम्बु पानादिले
साथै श्रीपरमात्म नाम जपनु तीर्थार्थ हुन्छौ भने ।
माछाकै सरि न्वाहि तीर्थ फल के ? सद्भक्त हुन्नौ भने
भाग्छन् पुण्य सबै दयालु नबनी हिंसा गरिन्छन् भने ॥

- सुदामाको कनिका, ३६, श्लोक ७

५.१.५.३.१२ दयाभाव

कवि अधिकारीले मानवको मुख्य गहना दया नै हो भनेका छन् । मानव मात्रमा नभई सबै प्राणीहरूमा दया गर्नुपर्दछ । सत्कर्म भनेकै मातापिताको सेवा हो । रोगी वृद्ध र गरिबहरूमा दया गर्नु नै सन्मार्गको अवलम्बन गर्नु हो भन्ने भावको अभिव्यक्ति यसरी भएको छ :

जाऊ धेर समाजमा कहिँ कतै, सत्-सङ्ग मिल्छन् भने
देऊ ज्ञान भवाब्धि पार तरने जिज्ञासु मिल्छन् भने ।
बैहो मूक समान भै बसनु रे ! गर्छन् उपेक्षा भने
साम्यात्मा परमात्ममा स्थित हऊ, सत्-लक्ष्य लिन्छौ भने ॥

- सुदामाको कनिका, ३६, श्लोक ८

५.१.५.३.१३ मोक्षप्राप्ति

धर्मको अन्तिम लक्ष्य ब्रह्मबोध र मोक्षप्राप्ति हो । मुमुक्षु बन्न चाहनेले ॐ नाम स्मृति गर्नुपर्दछ । यसका साथै शुद्ध, सत्य र समभाव राखी आचारवान् भएर नित्य हरिस्मरण गरेमा मोक्ष प्राप्त गर्न सकिन्छ, भन्दै कविले मोक्षको मार्ग यसरी बताएका छन् :

कल्याण-प्रद साधना बहुत छन् नाम स्मृती मुख्य रे
छन् श्री नाम असङ्ख्य उत्तम सबै सर्वोच्च ॐ नाम रे ।
शुद्धान्तकरणस्थ सत्य समता आचारवान् भै रहे
सर्वात्मा हरि सम्भ्र मोक्ष मिलने गर्छौ त इच्छा भने ॥

- सुदामाको कनिका, ३७, श्लोक ११

५.१.५.३.१४ दुष्प्रवृत्तिप्रति नकारात्मक भाव

कविले गर्न नहुने केही कुराहरू शीर्षकमा प्रश्नोत्तरको शैलीमा गर्न नहुने कुराहरू के-के हुन् भन्ने प्रश्नको उत्तरमा चुक्ली लगाउने, लोभ गर्ने, भुठो बोल्ने, कृतघ्नी बन्ने, खुनी, कपटी र विश्वासघाती नबनौं भन्ने आग्रह यसरी गरिएको छ :

कुन् ? कुन् ? गर्न हुँदैन मित्रवर हे ! भन्नोस बस्छू सुनी
कुन् कुन् गर्नुहुँदैन छोटेकरिमहाँ भन्दछु हे मित्रजी !
चुक्ली लाउन हुन्न, लोभ नलियो, भुठो नबोलौं अनि
कैल्यै नै नबनौं कृतघ्न कपटी, विश्वासघाती खुनी ॥

- सुदामाको कनिका, ३८, श्लोक १

५.१.५.३.१५ रिसप्रति वितृष्णा

कवि अधिकारीले गर्न नहुने कुराहरू बताउने सिलसिलामा चिन्ता लिनु नहुने, अपराध गर्न नहुने, आशा मार्न नहुने, मौका टार्न नहुने, गोप्यता भङ्ग गर्न नहुने, तमासा हेर्न नहुने, इज्जत फाल्न नहुने, गोप्यता भङ्ग गर्न नहुने, अरूको निन्दा गर्न नहुने आदि सद्ब्यवहारहरूको बयान गर्दै रिसले आफैलाई समाप्त पार्ने हुँदा रिसलाई पाल्न नहुने कुरामा यसरी जोड दिएका छन् :

चिन्ता हो नलिने, नगर्नु अपराध् आशा नमार्नु अरे
मौका टार्नु हुँदैन हेर्न नहुने जे होस् तमासा छ रे ।
कैल्यै फाल्नु हुँदैन इज्जत कहीं पाल्नै नहुने रिस
खोल्नै हुन्न नि गोप्यता नभननु, निन्दा हुने बात त ॥

- सुदामाको कनिका, ३८, श्लोक २

५.१.५.३.१६ अस्तित्व रक्षा

सन्मार्ग पहिल्याउनका लागि गर्न नहुने कुराहरूमा उद्यत हुनुहुँदैन भन्ने कुरामा कविले विशेष जोड दिएका छन् । यस्तै सत्य कहिल्यै नलुकाउन, आफ्नो अस्तित्व नगुमाउन, खराब काम नगर्न, मर्मकाटा नबन्न, जुवा नखेल्न र मद्यपान नगर्न आह्वान यसरी गरेका छन् :

कैल्यै नै नलुकाउँ सत्य, नगुमोस् अस्तित्व आफ्नोपन
कैल्यै नै नगरौं घमण्ड, नहुनु बद्मास नामाङ्कन ।
कैल्यै काट्नु हुँदैन मर्म जनले जूआ नखेल्नु कसै
कैल्यै प्युनु हुँदैन मद्य विष हो नासिन्छ यस्ले सबै ॥

- सुदामाको कनिका, ३८, श्लोक ३

५.१.५.३.१७ भविष्यचिन्तन

कविले विगतमा भएका कमजोरीहरूको बारेमा पश्चाताप लिएर भविष्य विगार्न नहुने कुरामा विशेष जोड दिएका छन् । यसैगरी उद्योग छाड्न नहुने, दुष्कर्ममा लाग्न नहुने, कसैलाई धोखा दिन नहुने सत्शिक्षा यसप्रकार दिएका छन् :

पश्चाताप नमान्नु, छाड्नु नहुने उद्योग-सत्कामको
मान्ने हुन्न हरेस, हिंङ्गन नहुने दुष्कर्मको मार्ग हो ।
खान्ने हुन्न कदापि मांस शव ता यो राक्षसी काम हो
जैले होस कदापि कत्ति नदिनू धोका कसैमा पनि
कैल्यै नै नसुनौं असत्य पथका अश्लील वार्ता पनि ॥

- सुदामाको कनिका, ३८, श्लोक ४

५.१.५.३.१८ मनको शुद्धता

कविले आत्मपरात्म एकै सम्भन आग्रह गरेका छन् । दुष्टको सङ्गत गर्न हुँदैन ।
दुष्टहरूको सङ्गतले मानिसको चिन्तनलाई दुषित पार्दछ । मन, वचन र कर्मले अरूको
कुभलो चिताउन हुँदैन भन्दै यस्तो आग्रह गरेका छन् :

कैल्यै बिसन्नु हुन्न आत्म-परमात्मा-ब्रह्मको चिन्तन
कैल्यै सोच्नु हुँदैन हानि अरूको दुषित् नपारौं मन ।
कैल्यै बस्नु हुँदैन दुष्टसँगमा व्यर्थै नहाँस्ने गर
मर्यादा र चरित्रहीनहरूको फोटो नटाँसौं घर ॥

- सुदामाको कनिका, ३९, श्लोक ५

५.१.५.३.१९ परोपकार

कवि अधिकारी परोपकार नै पुण्य हो भन्ने कुरामा दृढ रहेका छन् । परोपकार
मानिसको मूल धर्म हो । अरू व्रत, यज्ञादि गर्न नसके पनि प्राणीको हिंसा नगरी आफूले
सक्दो उपकार कार्यमा लाग्नुपर्दछ । दीन-दुःखीको अपहेलना नगरेमा ईश्वर प्रसन्न हुन्छन्
भन्ने भाव यसरी व्यक्त गरेका छन् :

स्वार्थ बेपहिचानसङ्ग कहिल्यै पर्दै नपर्नु भर
दुःखीमा अपहेलना नगरनु हुन्छन् खुसी शङ्कर ।
आफ्नो इन्द्रिय-पूर्ति निम्ति कहिल्यै हिंसा नगर्नु कुनै
प्राणी निर्-अपराधिको वधसरी छैनन् अरू पाप नै ।
प्राणीको उपकारका सरि अरू छैनन् कुनै पुण्य नै ॥

- सुदामाको कनिका, ३९, श्लोक ६

५.१.५.३.२० श्रमप्रति सम्मान

यसमा कवि अधिकारीले निद्रा र आलस्यको कारणले मानिस समृद्ध बन्न सक्दैन भनेका छन् । अरूको विश्वास नगर्ने र अबुझ मानिसलाई उपदेश दिनु व्यर्थ छ । आफूले प्रगति गर्न नखोज्ने, अल्छी गर्ने, आफूले राम्रो गर्न नसकेकोमा भन्दा अर्कोको डाहले आफैलाई खतम पार्ने तथ्य कविले यसरी औल्याएका छन् :

पाछ्छन् हानि अनेक कामदारहरुको निद्रा र अल्छ्यायीले
तस्मात् धेरै नसुत्नु अल्छि नहुनु सम्बृद्धि जिज्ञासुले ।
बुझ् पेल्ले जनलाई अर्ति नदिनु विश्वास मान्दैन रे
अर्काको हितदेखि डाह नलिनु मात्सर्यता छोड्नु रे ॥

- सुदामाको कनिका, ३९, श्लोक ८

५.१.५.३.२१ सुकर्मको महत्त्व

कविले हिंसाद्वारा प्राण धान्नुभन्दा बरु प्राण त्यागौं । भुठो बोलुको सट्टा हरिभजन गरौं । परस्त्रीमा इच्छा राख्नुभन्दा नपुंसक बनौं । यस्तै अर्काको धन हरेर खानुभन्दा भिक्षार्थी बन्नु श्रेयस्कर छ भन्ने बोध गराउन कवि भन्छन् :

बरु प्राणै जाओस् तर पनि त हिंसा नगरनु
नबोल्नु भुट्टा बात् बरु हरि भजी मौन रहनु ।
परस्त्रीमा इच्छा नगरनु नपुंसक् बरु हुनु
नहर्नु अर्काको धन त बरु भिक्षार्थी बननु ॥

- सुदामाको कनिका, ५२ श्लोक २

५.१.५.३.२२ कर्मको महानता

कवि अधिकारीले दान, होम, व्रत, यज्ञवाट मात्रै पुण्य प्राप्त हुन्छ भन्ने कुरामा विश्वास गर्दैनन् । मानिसलगायत सबै प्राणीको भलो गर्नु नै पुण्य कर्म हो । मानव शरीर नै ईश्वरको मन्दिर हो । परआत्माको सेवा गर्नु महान् पुण्य हो । सत्कर्म नै पूजा हो यसैमा ईश्वर खुशी हुन्छन् भन्ने प्रष्ट पार्न कविले यस्तो आग्रह गरेको छन् :

आत्मन् हे शिव ! सत्-मते गिरिसुते ! यो देह भो मन्दिर
पूजा होस् विषयादि भोग रचना सुत्नू समाधि स्थिर ।
दास-प्राण र वाक्य हुन् स्तुतिसरी प्रदक्षिणा हींङ्नु
जे-जे काम म गर्दछु शिव ! हरे ! पूजा भनी ली दिनु ॥

- सुदामाको कनिका, ५५ श्लोक १६

५.१.५.३.२३ वैराग्य

चिन्तनले नै मानिसको व्यवहार बन्दछ । जीवन दुई दिनको घामछाँया हो भन्ने कुरालाई प्रतिफल स्मरण गरौं । वैराग्यको अर्थ सांसारिक विषयप्रति अति मोह नराखी तिनलाई परमार्थ र कल्याणको काममा लगाउनु हो । अतः खेत, बारी, घर, नारी, पुत्र, पशु धनलगायत आफ्नो शरीरसम्म पनि आफ्ना साथमा जाने होइनन् भन्ने कुरा बुझेर वैराग्यलाई बुझ्ने प्रयास गर्नुपर्छ । अति आशक्ति त्यागेर जीवन शान्त र सुखमय बनाउन सकिन्छ भन्ने धारणा यसरी अगि सारेका छन् :

खेत बारी, घर, नारि, पुत्र, पशु, धन सव् इष्टहरू अनि
छाड्नु पर्छ शरीरतक् पनि कसै जाँदैन साथमा भनी ।
आसक्ती विषयादिमा त नरहोस् वैराग्य आओस् सदा
हे नाथ् ! यो स्मृति पाउनु पनि त हो केवल प्रभूकै दया ॥

- सुदामाको कनिका, ६३ श्लोक १

५.१.५.३.२४ सन्तोष

कविको विचारमा तृष्णा पार पाइनसकिने वैतरणी नदी समान छ । तृष्णाकै कारणले जति धन सम्पत्ति हुँदा पनि मानिसलाई पुगेको छैन । यो जति बढ्यो उति मन बढ्दै जाने यसको स्वभाव रहेकोले तृष्णालाई त्यागी हामी सन्तोषी बनौं । कविले हामीभित्रको तृष्णारूपी दुर्मति भागोस् र सद्बुद्धि फिरोस् भन्दै यस्तो कामना गरेका छन् :

सारा यो धन-धान्य आदि भवको जत्ती कमायो उती
तृष्णा भन् बढने अहो ! प्रभु हरे ! सन्तोष नभै क्यै रति ।
तृष्णा वैतरणी छ उग्रतर यो वैराग्य सत्सङ्गति
भक्ती ज्ञान मिलोस् प्रभो ! हर बखत् भाग्ने छ यो दुर्मति ॥

- सुदामाको कनिका, ६३ श्लोक ३

५.१.५.३.२५ बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार

कविको विचारमा स्वर्ग र नरकको भोग मानिसले अहिल्यै यहीं गरिरहेका छन् । ज्ञानी मानिसका लागि ब्रह्मलोक यही हो । पहिल्यै सोचनु धीर हो, बितिसकेपछि सोच्ने मूर्ख हो । यस्तै पश्चात्ताप लिइरहने मानिस महामूर्ख हो । अतः कुनै पनि काम गर्नु अगि राम्ररी सोचेर काम गरी धीर र सुखी बन्न सकिन्छ भन्दै धर्तीमा स्वर्गीय सुखभोग गर्न उनले यस्तो आग्रह गरेका छन् :

यै हो स्वर्ग धनीहरूकन, यही हो नर्क दुःखीकन
ज्ञानीको यहि ब्रह्मलोकहरु हुन्, यै कल्प-भू. रे मन !
पैल्यै सोचनु धीर हो, बितिसकी सोच्ने उही मूर्ख रे !
पश्चात्ताप सदा लिइरहनु जो त्यो हो महामूर्ख रे ॥

- सुदामाको कनिका, ७४ श्लोक २

५.१.५.३.२६ पुण्य

यो धरातल जहाँ हामी रहेका छौं, सुख र दुःख दुबै मिश्रित छन् । यहाँ प्रत्येक व्यक्ति सुख र दुःखको द्वन्द्वले युक्त छन् । स्वर्गले आनन्द सफलता र सुखको प्रतिनिधित्व गरेको हुन्छ भने नरकले दुःख असफलता, कष्ट, पीडा र तनावको प्रतिनिधित्व गरेको हुन्छ । अतः मानिसले काल्पनिक स्वर्गमा भविष्यमा नभई वर्तमानमा नै विविध प्रकारका नरक भोगिरहेका छन् । हाम्रै मनभित्रका असल भावनाहरूले स्वर्गीय अनुभव यहीं गरिरहन सक्छौं भन्ने भाव कविद्वारा यसरी अभिव्यक्त भएको छ :

जुन् होस् अङ्ग-अपाङ्ग भो नरक हो (१), हो नर्क रोगी हुनु (२)
ठूलो नर्क त नेत्रहीन हुनु हो (३) यस्तै परे के भनूँ ? ।
गर्भे बात दुईजना जब सुनें इच्छा भयो लेखन
यौटा नेत्र दिए त पुण्य यहि हो भन्ने भयो यो मन ॥

- सुदामाको कनिका, ६७ श्लोक २

५.१.५.३.२७ शत्रुता पहिचान

कवि केदारनाथ अधिकारीले हाम्रा शरीरका नौ द्वारहरू (नाक, मुख, आँखा कान) रहेका छन् । तीमध्ये पनि जिह्वा र मूत्रेन्द्रियलाई अझ बढी संयमित राख्न सल्लाह दिएका छन् । यस्तै काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद र मात्सर्य गरी यी छ प्रकारका हाम्रा शत्रुहरू हामीसँगै हरबखत रहेका छन् । यिनै शत्रुमाथि विजय प्राप्त गरी राग, द्वेष पखालेर आत्मा शुद्ध राख्न सके संसारसागर पार गर्न सकिन्छ भन्ने भाव यसप्रकार व्यक्त गरेका छन् :

ढोका नौ छन मुख्य संयम गरी जिह्वा र मूत्रेन्द्रिय
प्राणीमा समतात्म भाव गरियोस् यै मार्ग हो निर्भय ।
राग-द्वेषहरू पखाल्नु जितनू कामादि षट् छन् अरी
शुद्धात्मा भई बस्नु मित्रजि ! सदा हो मुख्य अन्तिम् कुरा ॥

- सुदामाको कनिका, ६९ श्लोक ११

५.१.५.३.२८ सुसाधना

कवि अधिकारीले सत्कर्ममा जोड दिएका छन् । सत्कर्ममा यदाकदा मात्र नभई निरन्तर साधनारत हुन आवश्यक छ । अन्य कुरामा लोभ गर्नु हुँदैन तर सुकर्म साधनामा लोभ गर्नुपर्दछ र अरू बेलामा क्रोध शत्रु हो तर आलस्यले प्रभावित पारेका बेला क्रोध भिकेर आलस्य त्याग्न उचित छ । कुकर्ममा द्वेष राखौं । सत्लक्ष्यमा मत्सरभाव राखौं । ब्रह्मत्व ज्ञान रूपी मद ग्रहण गरौं । यस्ता साधनामा निरन्तर लागि रहौं भन्ने आग्रह कविले यसरी गरेका छन् :

सत्मा लाउनु काम, आलश हुँदा भिक्नू भलो क्रोध रे,
गर्नु लोभ सुसाधना गरनुमा ज्ञानात्ममै मोह रे ।
राखू द्वेष कुकर्ममा, बननु रे सत्-लक्ष्यमा मत्सर
ब्रह्मात्मज्ञ सुशान्त दिव्य मद जो मौन-स्व-संवेद्य छ ॥

- सुदामाको कनिका, ७८ श्लोक ८

५.१.५.३.२९ सन्मार्ग महिमा

सबै मानिस र प्राणीहरू सुखी बन्ने चाहना राख्दछन् । सन्मार्ग पहिल्याउन नसक्दा वा प्रमादका कारणले कुमार्गतिर लाग्दछन् । अभागीले सन्मार्गमा रहन दुःख मान्दछ, जो सौभाग्यवान् छ, त्यसले मात्र सन्मार्गरूपी सोपान प्राप्त गर्दछ । अनि मात्र ब्रह्मानन्द प्राप्त गर्न सक्षम हुन्छ, भन्ने भाव कविले यसप्रकार व्यक्त गरेका छन् :

प्राणी मात्र सबै सदा सुखी हुने इच्छा त गर्छन् तर
चिन्दैनन् पथ वा प्रमादवश भै लाग्छन् कुमार्गतिर ।
दौर्भागी छ त दुःख मान्छ पहिल्यै सोपान सत्-मार्गको
श्रद्धा, भाग्य जुट्यो त लिन्छ उसले बाटो महानन्दको ॥

- सुदामाको कनिका, ८० श्लोक १८

५.१.५.३.३० धीरता

कवि केदारनाथ अधिकारी मानिसको पहिचान दुःखमा हुन्छ भन्ने कुरामा विश्वास गर्दछन् । दुःखमा धैर्य गर्नसक्ने मानिस महान् हो । सुख र दुःखको चक्र हामीबीच घुमिरहन्छ । मानिस कुनै बेला परतन्त्र बन्न पुग्दछ । कुनै समय प्राण नै गुम्न सक्ने खतरा आइपर्दछ । त्यस्ता बखतमा जो धीर छ, उसले सन्तोषका साथ कठिनाइको सामना गर्दछ । अतः धैर्य गरौं यो नै ठूलो बल हो भन्ने भाव कविले यसरी व्यक्त गरेका छन् :

दौर्भाग्यात् परतन्त्रले यदि परोस् प्रार्णार्चना नै तर
वाणी देह पराधिनै यदि हओस् मान्दैन भित्री पिर ।
जो आत्मज्ञ छ त्यो स्वतन्त्रसरि नै सन्तोष शान्तात्मले
भोग्छन् सञ्चित ती महात्म जन हुन् चिन्दैन अल्पज्ञले ॥

- सुदामाको कनिका, ८० श्लोक १५

५.१.५.३.३१ महात्माको अनुशरण

भक्ति, ज्ञान, समता, दया, विवेक आदि सत्शिक्षा हामीलाई आवश्यक छ । शिक्षाले हामीमा ज्ञानगुणको विकास हुन्छ, अनि मात्र हामी सक्षम बन्न सक्छौं । शिक्षा लिन महान् व्यक्तिहरूको जीवनीको अध्ययन आवश्यक छ । अतः सत्चरित्र विकास गर्न अष्टचिरञ्जीवी

मानिएका महान् व्यक्तिहरूको जीवनी अध्ययन गरी सत्चरित्रवान् बनौं भन्ने आग्रह कविले यसरी गरेका छन् :

मार्कण्डेय, विभीषण, कृप, बली, प्रह्लाद औ व्यासको
श्रीलोमश, हनुमान औ अरु पनि ज्ञानी गुणीवर्गको ।
भक्ति-ज्ञान दया विवेक समता शिक्षा लिऔं सद्गुण
द्रोणीका सरि राक्षसी मन नहौं आविश्वका हे मन ! ॥

- सुदामाको कनिका, ८४ श्लोक ३५

५.१.५.३.३२ समन्वयवादी चिन्तन

कवि केदारनाथ अधिकारी आध्यात्मवादी व्यक्ति हुन् । तथापि उनले भौतिकवादलाई नकारेका छैनन् । अध्यात्म र भौतिकवादले हाम्रो जीवन अगि बढेको छ । यहाँ आध्यात्मिक मात्र होइन भौतिकवादले पनि नवीनतम विकासात्मक कार्यहरू गरेको छ । अतः मानवजीवन सुखमय बनाउन दुबै वादका अनुशरण गर्न उनले यस्तो आग्रह गरेका छन् :

विकास आध्यात्मिकि भौतिकी छन
अध्यात्म भौतिक् मिलि जीवने छन ।
यहाँ त आध्यात्मिकी भो प्रसङ्ग
मिलने छ नित्य सुख जो लिनुहोस् सुमार्ग ॥

- सुदामाको कनिका, ४२ श्लोक ९

५.१.५.४ चरित्रविधान

सुदामाको कनिका कविता सङ्ग्रहमा श्रीमद्भागवत र महाभारतको कथावस्तु समावेश गरिएको छ । यसमा श्रीकृष्ण, सुदामा, कुचैला, रुक्मिणी प्रमुख पात्रका रूपमा रहेका छन् । वसुदेव, देवकी, कंस, गरुड, द्वारपालहरू, पुतना, पाण्डवहरू, द्रौपदी, द्रोण, द्रोणि, द्रुपद, योगमाया सहायक पात्रका रूपमा रहेका छन् । तृणावर्त, उत्कच, यमलार्जुन, गोपिनीहरू, सान्दिपिनी, अभिमन्यु, उत्तराहरू गौण पात्रका रूपमा रहेका छन् ।

५.१.५.५ परिवेश

प्रस्तुत कृति पौराणिक कथामा आधारित रहेकाले द्वापरयुगमा घटित घटनाको वर्णन रहेको छ । यसमा कुरुक्षेत्रको युद्ध, पोरबन्दर, हस्तिनापुर, द्वारका, गोकुल, मथुरा आदि स्थानहरूको वर्णन गरिएको छ । यसअन्तरगत पनि साँझ विहान र रातको समय भ्यालखान, वनविहार, जन्ममृत्यु, जलाशय, बागवगैँचा, नदीको भेलको व्यापक परिवेश चित्रण गरिएको छ ।

५.१.५.६ उद्देश्य

सुदामाको कनिकाको उद्देश्य सानो गल्लीले गर्दा सुदामाले लामो समयसम्म गरिब भएर रहनु परेको देखाई भगवान्भक्तिबाट अति सजिलै सम्पन्नता प्राप्त गरेको कुरा बोध गराउनु रहेको छ । यस्तै अश्वत्थामा चरित्रको उद्देश्य कृतघ्न हुन नहुने सत्कर्म र सन्मार्गमा लाग्नु पर्ने सन्देश दिनु नै यसको प्रमुख उद्देश्य रहेको छ ।

५.१.५.७ कथनपद्धति

विश्लेष्य कविता सङ्ग्रहमा रहेका कविताहरूमा प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको कवि प्रौढोक्तिसिद्ध उक्तिविधान रहेको छ । केही शीर्षकहरूमा भने संवादात्मक प्रस्तुति रहेकाले आफैँभित्रको दुई मनलाई प्रश्नकर्ता र उत्तरदाताको रूपमा प्रयोग गर्दा 'तिमी' सर्वनाम प्रयोग गरिए पनि कविनिबद्ध प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग भएको छ ।

५.१.५.८ भाषाशैली

भाषा अनुभूतिको अभिव्यक्तिका लागि आवश्यक माध्यम हो भने त्यही अभिव्यक्तिको तरिका वा पद्धतिलाई शैली भनिन्छ । कविता अनुभूतिको भाषिक सौन्दर्य भएकाले यसका लागि सुललित, रागात्मक भाषाको चयन हुनु आवश्यक छ (आचार्य, सन् २००६: १४) ।

विश्लेष्य सङ्ग्रहको भाषिक स्रोत तत्सम र तद्भव नै रहेको छ । क्षुधा, द्विज, मुमुक्षु, भीषण, तण्डुल, सम्यक्, सोपान, मार्जार, कुठार, निशी जस्ता आठ दश केही कठिन प्रकृतिका तत्सम शब्दहरूको प्रयोग भेटिए पनि उपदेश, प्रणाम, सुत, स्मृति, सुशील, भक्ति, दीन, जगत, नयन, सकल, उत्तम, हर्षाश्रु, निरञ्जन, देव, अष्टम, सत्य, नाश, चर्तुवाहु, शोक, भय, माता, क्रोध, शीघ्र, शुभ, लज्जा, स्नान, सन्ध्या, गौशाला, नित्य, यज्ञसूत्र, मार्ग, सुपात्र,

बलिष्ठ, देह, सोपान, शिशु, स्मशान, द्रव्य, तट, ताम्बुल, संशय, अमृत, पूर्णानन्द, मिष्ठान, मौन, तृप्त आदि नेपाली जनजिब्रोमा राम्ररी बानी परिसकेका तत्सम शब्दहरूको प्रयोगले कृतिलाई दुर्बोध्य बनाएको छैन । यस्तै भाषिक दृष्टिले यिनका कवितामा कतिपय पङ्क्तिहरू प्राथमिककालीन कवितासँग तुलनीय देखिन्छन् :

महलविच बहुतै सम्पती खूब् रह्याको
 घर वरिपरिमा छन् चाकरैले भन्याको ।
 असल रड-विरड्का चीज धेरै रह्याको
 मणि जडित हुनाले ज्योति भक्मक् भयाको ॥

- सुदामाको कनिका, २१, श्लोक १३९

शैलीलाई सहजता प्रदान गर्न भुलुक्क, सुटुक्क जस्ता एक-दुई अनुकरणात्मक शब्दहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । यस्तै फाटक, पेन्ट, फगत जस्ता केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । नाम पदका गुरु/गुरू, नारि/नारी, कनिका/कनीका विशेषण पदका गरिब/गरीब, यति/यती तथा संयोजक पदका पनि/पनी, अनि/अनी पदहरूमा ऽस्व दीर्घको दोहोरो प्रयोग भटिएको छ । समग्रमा यो बैदर्भी रीति र प्रसाद गुण राम्ररी खुलेको श्रुतिमधुर सरल तत्सम शब्दबहुल कृति बन्न पुगेको छ ।

५.१.५.९ लयविधान

सुदामाको कनिका पद्यलयमा रचिएको कविता कृति हो । यसमा वर्णमात्रिक लयका उपजाति, वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शिखरिणी र शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग गरिएको छ । उनले यसमा अनुष्टुप् छन्दको बढी प्रयोग गरेका छन् । उपजाति, वसन्ततिलका, छन्दको तुलनामा क्रमशः शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित र अनुष्टुप् छन्दको उनले बढी प्रयोग गरेका छन् । उपर्युक्त छन्दहरूमध्ये यस कृतिमा उनलाई अनुष्टुप् छन्दमा बढी सिद्धि प्राप्त भएको छ । अनुष्टुप् छन्दको एउटा नमुना यस्तो रहेको छ :

देवकीवाट जन्मिई यशोदा नन्दका घर ।
 बसी बाल-लीला साथै गर्नु भो दैत्यका वध ॥

- सुदामाको कनिका, ५ श्लोक २५

भन्डै तीन सय श्लोक सङ्ख्यामा रहेको अनुष्टुप् छन्दमा एकाध ठाउँमा छन्दभङ्ग पनि भेटिएको छ । एउटा नमुना यस्तो छ :

कृष्णलाई माछु भनी हात्मा तवार्समेत् लियो ।
कालरूपी कृष्णलाई मार्न ता किन सक्दथ्यो ?

- सुदामाको कनिका, १३ श्लोक ९५

शार्दूलविक्रीडित छन्दलयमा छन्द भङ्गको उदाहरण यस्तो रहेको छ :

खाऊ शुद्ध र पच्छ चीज जुन त्यो गर्देन बाधा भने
निलोबाहेक वस्त्र लाउ जुन होस् बहूदैन ढाँचा भने ।
जपु मन्त्र अमोघ किन्तु मन यो नाचदैन अन्तै भने
लोभ-क्रोध छ जित्नु शान्ति पदको स्वानन्द भोग्छौ भने ॥

- सुदामाको कनिका, ३५, श्लोक ३

वर्णमात्रिक छन्दमा चार पाउको एक श्लोक हुन्छ । कवि अधिकारीले एक दुई ठाउँमा उक्त मान्यता विपरीत पाँच पाउमा १ श्लोकको गणना गरेका छन् । हुन त एउटा श्लोकमा प्रकट गर्नुपर्ने भाव सोही श्लोकमा पूरा गर्नका निम्ति उनले यहाँ पाँच पाउको १ श्लोक गणना गरेका छन् । तथापि यस्तो प्रयोग पद्यलयमा नौलो भएकाले एउटा उदाहरण प्रस्तुत गरिएको छ :

पथे दङ्ग शहरभरी जनहरू ति द्वारपाले पनि
यस्ताले हरि-मित्र हूँ भनदछन् आश्चर्य हो यो भनी ।
मैन्हा पौषको पूर्णिमा तिथिमहाँ दर्बार् समीपै पुगे
तीन् ढोका गरि पार केहि अडिए देख्नुभयो कृष्णले
भट्टै पाल्नुभई लिई हिंडनुभो आँसू खसे हर्षले ॥

- सुदामाको कनिका, १७, श्लोक १२०

प्रस्तुत कृति सुदामाको कनिकामा अन्त्यानुप्रासको प्रयोगमा सचेतता देखिएको छ । यसले गर्दा कविताको लय सन्धानमा स्वाभाविक गतिशीलता देखिएको छ । सकेसम्म चारै पाउमा अन्त्यानुप्रास मिलाउने कविको प्रयास रहेको छ :

अनाथका नाथ ईश्वर अनि हजुरका मित्र अधिका
भन्याको यो सुन्छु अब हजुर पाल्नुस् प्रभुजिका ।
शरण् पर्नुस् हे नाथ ! हजुरकनदेखी प्रभु पनि
दया गर्नुहोला भगत अति दुःखी छन भनी ॥

- सुदामाको कनिका, २, श्लोक ६

जहाँ जान्छु ताहाँ दिदि-बहिनिका काम करले
उ आई माग्छे यो भनि मकन हेप्छन् सकलले ।
नयन् भाषा बूभी खुरुखुरु म हिँड्छु सरमले
कसोरी निर्वाहा गरनु मइले यो करमले ॥

- सुदामाको कनिका, २ श्लोक ८

लयसन्धानमा छिटफुट व्याकरणिक मर्यादा अतिक्रमण भए पनि समग्रमा प्रस्तुत कृतिमा गति, यति र विश्राम मिलेको छ । अनुप्रासको संयोजन भएकाले लयमा स्वाभाविक प्रवाहशीलता रहेको छ ।

५.१.५.१० अलङ्कारविधान

अलम् भनको भूषण हो । अलङ्कार शास्त्रमा जसले भूषित गर्दछ वा सिर्गादछ, त्यसैलाई अलङ्कार भनिन्छ । अर्को शब्दमा भूषित गर्ने उपादान नै अलङ्कार हो । वैयाकरणहरूको विचारानुसार कसैको पनि शोभा बढाउनेलाई अलङ्कार भनिन्छ । (थापा, २०३६: २६०,) सुदामाको कनिका अलङ्कार साधनासापेक्ष कृति होइन । यसमा भावसाधना कविको मूल उद्देश्य हो । तथापि अलङ्कारचेतनाको स्पर्श भने भेटिएको छ । यसमा शब्दालङ्कारको वृत्यानुप्रासको एउटा नमुना यस्तो रहेको छ :

५.१.५.१०.१ वृत्यानुप्रास

मार्न आज्ञा दिने, मार्ने, किन्ने, बेच्ने, पकाउनी ।
बाँड्ने, भाग् लाउने, खाने, आठै घातकि हुन् यिनी ॥

- सुदामाको कनिका, ४४, श्लोक ५

उपर्युक्त कवितामा धेरै पटक एउटै क्रममा 'न' वर्णको पुनरावृत्ति भएकाले वृत्यानुप्रास पर्न गएको छ । अर्थालङ्कारका उपमा रूपक पूर्ण विकसित रूपमा छैनन् । अर्ध विकसित अल्पविकसित ध्वनित प्रतीत रूपमा छन् । यसमा अर्थालङ्कारका स्वभावोक्ति र दृष्टान्त अलङ्कारको प्रयोग यसरी भएको छ ।

५.१.५.१०.२ स्वभावोक्ति

धोती जीर्ण थियो, रुमाल पनि थ्यो थोत्रो कठै कँधमा
लौरो एक छ हातमा र कनिका पोको थियो काखिमा ।
हड्डी चर्म फगत् छ मांस नभई जर्जर शरीरका तर
तेजस्वी मुखका थिए ती तपले ब्रम्हात्ममा निर्भर

- सुदामाको कनिका, १७, श्लोक ११८

उपर्युक्त श्लोकमा गरिब र शारीरिक रूपमा कमजोर भए तापनि ब्रम्हत्वमा निर्भर सुदामाको वर्णन र स्वाभाविक गुणलाई चित्रण गरिएकाले स्वाभावोक्ति अलङ्कार पर्न गएको छ ।

५.१.५.१०.३ दृष्टान्त

पात्रैका अनुसार जल् जलधिको भर्नुसरी हे प्रभो !
पिउँछन् रस स्वाभिरुचिअनुसार वेदादि सत्-शास्त्रको ।
हे सर्वेश्वर ! हे अनन्त ! कसले अन्त्यै लिई सकछ र ?
केही जान्दिन तत्व केवल शरण् पर्छु हे विश्वम्भर ॥

- सुदामाको कनिका, ६४, श्लोक ६

उपर्युक्त श्लोकमा पहिलो पङ्क्तिमा पात्रअनुसार जलधिवाट जल प्राप्त हुन्छ भन्ने भनाइको दृष्टान्त दिएर दोस्रोमा मानिसले स्वरुचिअनुसार नै श्रुतिरसपान गर्न सकछ भन्ने पुष्टि गर्न खोज्दा दृष्टान्त अलङ्कार परेको छ ।

५.१.५.११ शीर्षकविधान

कविले विश्लेष्य कविता सङ्ग्रहको शीर्षक सुदामाको कनिका राखेका छन् । पौराणिक विषयवस्तुमा आधारित प्रतीकात्मक रूपमा रहेको शीर्षक यस सङ्ग्रहको मूलभाव

भक्तिसँग सङ्गति मिलेको छ । यसमा भएका चौबीस विषयशीर्षकहरूमध्ये धेरै बयान सुदामाकै भएकोले त्यसै विषयसँग मिल्दाजुल्दा पृष्ठपोषक भावका रूपमा अन्य विषयहरू समावेश गरिए पनि प्रस्तुत शीर्षकसँग यो कृतिको केन्द्रीय कथ्यको अन्तःसङ्गति देखिएकाले र सुदामाको कनिका भक्तिको प्रतीक भएकाले शीर्षक सुहाउँदो रहेको छ ।

५.१.५.१२ निष्कर्ष

सुदामाको कनिकामा आध्यात्मिक चिन्तन र भक्तिभावसँग सम्बन्धित विषयहरू समेटिएको कविता कृति हो । यसमा हरिभक्ति, दर्शनभेटमा शिष्टाचार, मैत्रीप्रेम, साक्षात्पनको भावना, श्रद्धाभाव, क्षमाशीलता, सत्मार्ग उन्मुखता, आचारमहिमा, सत्भक्ति, सत्य र प्रियवादिता, अहिंसा, दयाभाव, मोक्षप्राप्ति, दुष्प्रवृत्तिप्रति नकारात्मक भाव, रिसप्रति वितृष्णा, अस्तित्व रक्षा, भविष्य चिन्तन, मनको शुद्धता, परोपकार, श्रमप्रति सम्मान, आत्माको शुद्धता, सुकर्मको महत्त्व, कर्मको महानता, वैराग्य, सन्तोष, बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार, पुण्य, शत्रुता पहिचान, सुसाधना, सन्मार्ग महिमा, धीरता, महात्माको अनुशरण, समन्वयवादी चिन्तनका भावहरू प्रकट भएका छन् । यहाँ प्रशस्त तत्सम र तद्भव शब्द र पदावलीहरूको प्रयोग छ । वर्णमात्रिक लयका उपजाति, शिखरिणी, वसन्ततिलका र शार्दूलविक्रीडित छन्दको प्रयोग गरिएको छ । श्रुत्यानुप्रास, वृत्यानुप्रासजस्ता शब्दालङ्कार र उपमा, रूपक, स्वभावोक्ति, दृष्टान्तजस्ता अर्थालङ्कारहरूको प्रयोग भएको छ । सिङ्गो कृतिको केन्द्रीय कथ्य र शीर्षकका बीचमा सामञ्जस्य रहेको छ ।

परिच्छेद : छ

उपसंहार

६.१ सारांश

यस परिच्छेदमा प्रस्तुत शोधपत्रको परिच्छेदगत सारांश, कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको समग्र मूल्याङ्कन र निस्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ । प्रस्तुत शोधपत्रको पहिलो परिच्छेद **शोधपरिचय**सित सम्बन्धित छ ।

यसमा शोधशीर्षक, शोधप्रयोजन, विषयपरिचय, समस्याकथन, शोधकार्यका उद्देश्यहरू, पूर्वकार्यको विवरण र समीक्षा, प्रबन्धकल्पना, शोधकार्यको औचित्य र महत्त्व, शोधकार्यको सीमाङ्कन, सैद्धान्तिक ढाँचा र शोधपत्रको रूपरेखा प्रस्तुत गरिएको छ ।

दोस्रो परिच्छेद **कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनवृत्त**सित सम्बन्धित छ । केदारनाथ अधिकारीको जन्म लुम्बिनी अञ्चल, नवलपरासी जिल्ला, रकुवा गा.वि.स.को ओटाड गाउँमा भएको थियो । छविलाल अधिकारी र पद्मप्रभा अधिकारीका प्रथम सन्तानका रूपमा वि.सं. १९९१ साल ज्येष्ठ ४ गते जन्मिएका यिनको बाल्यकाल ओटाडमा नै बित्यो । यिनले कास्कीको विन्ध्यवासिनी संस्कृत पाठशाला र तनहुँको किहुँमा शिक्षाआर्जन गरेका थिए । वि.सं. २०१८ सालमा पद्मकुमारीसँग यिनको विवाह भएको हो । यिनी वि.सं. २०२० सालबाट साहित्यसिर्जनामा प्रवृत्त भएका हुन् ।

तेस्रो परिच्छेद **केदारनाथ अधिकारीको व्यक्तित्व**सित सम्बन्धित छ । यसमा यिनको आन्तरिक तथा बाह्य व्यक्तित्व र स्वभावको चर्चा गरिएको छ । केदारनाथ अधिकारी शान्त र सरल स्वभावका व्यक्ति हुन् । एकान्त वातावरण रुचाउने केदारनाथले कृष्णागण्डकी किनारमा तपसीको रूपमा बसेर अध्यात्मसाधना गरेका थिए । यिनले सादा खानपिन र सादा पोसाक मन पराउँछन् । बाटोघाटो, सिंचाइ, खानेपानी आदि सामाजिक विकासकार्यमा अगुवाइ गरेकाले यिनी सामाजिक व्यक्तित्वका रूपमा समेत चिनिएका छन् । विद्यालय स्थापनाका निम्ति आफ्नो जग्गा प्रदान गर्ने र गाउँमा परिचालन कार्यमा सक्रियता देखाएका यिनमा समाजप्रतिको चासो देखिन्छ । मातृभाषा नेपालीका अतिरिक्त संस्कृत, मगर भाषाहरूका पनि ज्ञाता भएकाले यिनी बहुभाषिक व्यक्तित्वका रूपमा चिनिएका छन् ।

चौथो परिच्छेद **केदारनाथ अधिकारीको साहित्यलेखनको यात्रा र चरण विभाजन**सित सम्बन्धित छ । वि.सं. २०२० सालदेखि लेखनयात्रा प्रारम्भ गरेका केदारनाथ अधिकारीले कविता, टिप्पणीमूलक संवाद, विवेचना, अनुवाद आदि क्षेत्रमा कलम चलाएका छन् । लगभग ५० वर्षको लेखनयात्रामा यिनका १२ ओटा पुस्तककार कृतिहरू प्रकाशित भएका छन् । प्रकाशित १२ ओटा कृतिहरूमध्ये ५ ओटा साहित्यिक र ७ ओटा साहित्येतर रहेका छन् । यिनको समग्र साहित्यिक यात्रालाई ३ चरणमा विभाजन गरिएको छ । पहिलो चरण आभ्यासिक चरण भएकाले यिनी पहिलो चरणमा साहित्यिकभन्दा साहित्येतर विषयमा बढी केन्द्रित भएका देखिन्छन् । पहिलो चरणका सापेक्षतामा दोस्रो चरणका यिनका कृतिहरूले साहित्यिक उचाइ प्राप्त गरेका छन् । तेस्रो चरणका कृतिहरू अघिल्ला दुई चरणका कृतिहरूका तुलनामा बढी परिष्कृत छन् ।

पाँचौं परिच्छेद **केदारनाथ अधिकारीको कृतित्वको अध्ययन**सित सम्बन्धित छ । यसमा यिनका ५ ओटा साहित्यिक कृतिहरूको कालक्रमिक कृतिगत अध्ययन, विश्लेषण र मूल्याङ्कन गरिएको छ । **कर्तव्यदर्पण** (२०४७) धार्मिक चेतनासित सम्बन्धित छ । यसमा वेद, उपनिषद् र श्रीमद्भगवद्गीताको अध्ययनबाट प्राप्त धार्मिक चेतना प्रस्तुत गरिएको छ । **दिव्यमधु** (२०४८) मानवतावादी प्रवृत्तिको कविताकृति हो । यसमा मौरीहरूको वेदना वर्णन गर्दै मानिसलाई मानवतावादी बन्न आग्रह गरिएको छ । **आनन्ददीपिका** (२०५१) नैतिक शिक्षासित सम्बन्धित कविताकृति हो । यसमा मानव जीवनसँग सम्बन्धित नैतिक, आध्यात्मिक र व्यावहारिक शिक्षाको भाव अभिव्यञ्जित भएको छ । **संसारदेखि सारै लाग्छ उराठ** (२०५८) वैराग्य भाव अभिव्यक्त गर्ने खण्डकाव्य कृति हो । यसमा मानवजीवनमा देखिएका असङ्गति र विरोधाभाषपूर्ण व्यवहारप्रति असन्तुष्टि व्यक्त गरिएको छ । **सुदामाको कनिका** (२०६८) भागवत्भक्तिमा केन्द्रित कविताकृति हो । यसमा कविले भक्ति, ज्ञान र वैराग्य मिश्रित पूर्वीय दर्शनको सारसङ्क्षेप प्रस्तुत गरेका छन् । यसमा आध्यात्मिक चिन्तनसित सम्बन्धित कर्म, ज्ञान र उपसानाका साथै नैतिक शिक्षाका विषयहरू पनि समेटिएका छन् ।

छौठौं परिच्छेद **उपसंहार**सित सम्बन्धित छ । यसमा शोधपत्रका परिच्छेदहरूको सारांश, कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको समग्र मूल्याङ्कन र शोधको निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ ।

६.२ समग्र मूल्याङ्कन

वि.सं. १९९१ साल ज्येष्ठ ४ गते नवलपरासी जिल्लाको रकुवा गा.वि.स वडा नं. ५ ओटाडमा जन्मेका केदारनाथ अधिकारी स्व.पं. छविलाल अधिकारी र स्व. पद्मप्रभा अधिकारीका ज्येष्ठ सुपुत्र हुन् । पाँच वर्षको उमेरमा अक्षरारम्भ गरेका केदारनाथ अधिकारीको बाल्यकाल ओटाडमा नै बित्यो । पण्डित पिता छविलाल अधिकारीको प्रेरणा र प्रभावले संस्कृत शिक्षातर्फ आकर्षित भएका केदारनाथ अधिकारीले नौ वर्षदेखि एघार वर्षको उमेरमा कास्की पोखराको विन्ध्यवासिनी स्थित संस्कृतपाठशालामा र तेह्र वर्षको उमेरमा तनहुँको किहुँमा गुरुहरूको सम्पर्कमा रहेर अनौपचारिक अध्ययन गरे । भानुभक्तको रामायण, लेखनाथ पौड्यालका काव्यकृतिहरू, महाभारत, स्मृतिग्रन्थ, गीता तथा अन्य धार्मिक पौराणिक ग्रन्थहरूको अध्ययन-मननबाट यिनी लेखन र सिर्जनातर्फ अभिप्रेरित भएको देखिन्छ । चौध वर्षको उमेरमा यिनको विवाह पद्मकुमारीसँग भएको हो । कृषि पेशा अँगालेका यिनको पैतृक सम्पत्ति पाँच भाइमा भाग लगाउनु पर्दा सुरूको आर्थिक अवस्था मध्यम खालको रहेको थियो । हाल उनको आर्थिक अवस्था राम्रो र पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक रहेको छ । स्वाध्यायन, मनन र समाजसेवामा रुचि राख्ने शाकाहारी र सात्त्विक प्रकृतिका अधिकारीको स्वभाव शान्त, सौम्य र मिलनसार छ । वि.सं. २०२० सालदेखि साहित्यसिर्जनामा लागेका यिनका गद्य, पद्य, अनुवाद, संवाद र विवेचना गरी १२ ओटा पुस्तकाकार कृतिहरू प्रकाशित छन् ।

केदारनाथ अधिकारीमा बहुमुखी व्यक्तित्व देखा पर्दछ । शान्त र सरल स्वभावका यिनी विचार र चेतनाका दृष्टिले अध्यात्मवादी रहेका छन् । एकान्तमा धार्मिक सुख, शान्ति र सन्तोष प्राप्त हुन्छ भन्ने कुरामा यिनी विश्वास राख्दछन् । समाजसेवाका विविध क्षेत्रमा काम गरेकाले यिनी सामाजिक व्यक्तित्व पनि हुन् । यी संस्कृत र मगर भाषाका समेत ज्ञाता छन् । केदारनाथ अधिकारी अनुवादक, भाषा संशोधक/परिवर्द्धक, वाङ्मय रक्षक, भजनगीतका रचयिता आदि व्यक्तित्वका रूपमा समेत चिनिने कवि अधिकारी मूलतः कवि हुन् ।

केदारनाथ अधिकारीले वि.सं. २०२० सालदेखि कविता क्षेत्रमा कलम चलाएका हुन् । यस अवधिमा यिनका बाह्रओटा कृतिहरू प्रकाशित छन् । यिनका कृतिहरूलाई साहित्यिक र साहित्येतर गरी दुई वर्गमा छुट्टयाउन सकिन्छ । विषयवस्तु, प्रस्तुति र अभिव्यक्तिका दृष्टिले

कर्तव्य दर्पण (२०४७), दिव्यमधु (२०४८), आनन्ददीपिका (२०५१), संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ (२०५८) र सुदामाको कनिका (२०६८) लाई साहित्यिक वर्गमा राख्न सकिन्छ । भन्डै ५० वर्षको यिनको लेखनयात्राका प्रमुख तीन चरणहरू विभाजित छन् । वि.सं. २०२० सालदेखि वि.सं. २०४६ सालसम्म २७ वर्षको अवधि यिनको लेखनयात्राको पहिलो चरण हो । लेखनयात्राको प्रथम चरण आभ्यासिक चरण भएकाले यिनी साहित्यिकभन्दा साहित्येतर विषयमा नै बढी केन्द्रित भएका देखिन्छन् । त्यसैले यस चरणमा सिर्जनात्मक उचाइ र परिष्कारको न्यूनता छ । वि.सं. २०४७ देखि वि.सं. २०५७ सालको समयावधिलाई यिनको कवितालेखनको दोस्रो चरण हो । यो चरणमा कर्तव्य दर्पण (२०४७), दिव्यमधु (२०४८) र आनन्ददीपिका (२०५१) प्रकाशित छन् । यस चरणका कविताकृतिहरू प्रथम चरणको तुलनामा परिष्कृत छन् । दोस्रो चरणका कृतिहरूमा ज्ञान, कर्म र उपासनाका भावहरू अभिव्यक्त छन् । धार्मिक चेतना, अहिंसा, सेवाभाव, नैतिक शिक्षा आदि यस चरणको मुख्य प्रवृत्तिहरू हुन् ।

वि.सं. २०५८ देखि २०६८ सम्म एघार वर्षको अवधि यिनको कवितायात्राको तेस्रो र अन्तिम चरण हो । यस चरणमा संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ (२०५८) र सुदामाको कनिका (२०६८) दुईओटा कृतिहरू प्रकाशित छन् । यो चरण यिनको कवित्वको उत्कर्ष चरण हो । यो चरण खण्डकाव्य रचनाको समेत चरण हो । सामाजिक असङ्गति, वैराग्य र ईश्वरभक्ति यस चरणका मुख्य प्रवृत्ति हुन् । यस अवधिमा यिनले आफ्ना कविताकृतिमा विविध वर्णमात्रिक छन्द र अलङ्कारहरूको प्रयोग गरेका छन् ।

६.३ निष्कर्ष

जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययनका आधारमा कवि केदारनाथ अधिकारी मानवता, समाजसेवा, धार्मिक/नैतिक चेतना, आध्यात्मिक भाव, वैराग्य र ईश्वरभक्ति भएका कविका रूपमा देखा पर्दछन् । यिनको मुख्य वा केन्द्रीय प्रवृत्ति भक्तिभाव नै हो । जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वमा आधारित यस अध्ययनले आध्यात्मिक चेतना भएका भक्तिवादी कविका रूपमा कवि केदारनाथ अधिकारीको जीवनी, व्यक्तित्व र यिनका कृतित्वको अध्ययन र तिनका विशेषता र प्राप्तिहरूलाई अगाडि ल्याउन र प्रकाश पार्न महत्त्वपूर्ण योगदान पुऱ्याउने देखिन्छ ।

परिशिष्ट

खण्ड 'क'

यस खण्डमा कविका साहित्येतर कृतिहरू हिंसक कृषक तुलना, ब्रह्मकर्म, श्राद्धपद्धति, अष्टवक्रगीता, तिलक रहस्य दर्पण, आयुर्वेद सार दर्पण, चतुर्विंशति-रत्न-दीपिकाको कालक्रमिक परिचय दिइएको छ।

१. हिंसक कृषक तुलना

प्रकाशनको दृष्टिले पछाडि देखिए तापनि कवि अधिकारीको पहिलो कृति हिंसक कृषक तुलना वि.सं.(२०२०) हो। ओमप्रकाश अधिकारीको सम्पादनमा श्री दुर्गा साहित्य भण्डार, वाराणसीबाट वि.सं. २०५१ मा यसको प्रकाशन भएको हो। १०३ पृष्ठको आयाममा विस्तारित यो कृति धार्मिक विचार र आचरण अर्थात् व्यवहारका बीच देखिएको असङ्गति, विरोधाभासप्रति असन्तुष्टि देखाई अध्यात्मवादी कोणबाट गरिएको टिप्पणीमूलक संवादात्मक कृति हो। यसमा ९ खण्डहरू रहेका छन्। खण्ड विभाजनका लागि १, २ अङ्कबाट सङ्केत गरिएको छ। यसको मूल विषय हिंसक र कृषकबीचको तुलना नै हो, अर्थात् मासु र हलोबीचको तुलना हो। यसमा गद्य र पद्य मिश्रित संवादात्मक प्रस्तुति रहेको छ। पहिले देखिनै ब्राह्मणले हलो जोत्न हुँदैन भन्ने मान्यता रही आएकोमा वि.सं. २००७ सालको राजनीतिक परिवर्तनपछि फाटफुट ब्राह्मणले हलो जोत्न सुरु गरेका थिए, तर त्यसरी हलो समाउने ब्राह्मणलाई निकै घृणा गर्ने, ब्राह्मण समाजबाट निष्कासित गर्ने चलन थियो। यस्तो अवस्थामा समाजको रूपान्तरण गरी सामाजिक जागृति ल्याउन विभिन्न शास्त्रहरूको प्रमाण दिई मांसभक्षण गर्नुभन्दा हलो जोत्न हुन्छ भन्ने तर्कहरू दिई पुष्टि गर्नु नै यस कृतिको मूल उद्देश्य हो।

यसमा जम्मा ९ भाग रहेका छन्। खण्ड विभाजनका लागि १,२, अंक दिएर छुट्याइएको मात्र छ। कुनै छाल, सर्ग वा विश्राम भन्ने नाम दिइएको छैन। प्रथम खण्डमा मनचन्द्र र प्रज्ञाचन्द्रको संवाद रहेको छ। संवादको विषय ज्ञानचन्द्रले आफ्नो कृषिकार्य हेतु हलो आफैले जोत्ने गरेकोमा यिनका ससुरा श्रुतिपुष्पले हेय दृष्टिले हेरेकोमा ससुराली जान छाडेको तर अन्य अभक्ष सेवन नगरी गोरु राँगाहरूलाई राम्ररी खुवाएर आफ्नो काम आफै गरेको प्रसङ्गमा यसो गर्नु उत्तम छ भन्ने रहेको छ। दोस्रो खण्डमा पनि माथिकै संवाद

अगाडि बढाइएको छ । विषय प्रसङ्ग चाहिँ सप्ताह यज्ञको रहेको छ । यसमा सप्ताह यज्ञमा श्रीमद्भागवत श्रवण गर्न जानेहरू पनि लसुन, प्याज राखेको तरकारी चटनीसँग खाना खाएर जाने, अर्काकी श्रीमती जारी गरेर ल्याउनेहरू निकै सज्जन ठहरिने, नित्य स्नान र जप ध्यान नगर्ने ब्राह्मणहरू उच्चकोटिको मानिने, मांसाहारीहरूलाई कसैले घृणा नगर्ने, मदिरा सेवन गरेर यज्ञमा जानलाई कसैले केही भन्न नसक्ने तर हलो जोत्ने ज्ञानप्रसादलाई भान्सामा जान नदिने आदि प्रसङ्ग ल्याएर समाजको व्यवहारप्रति व्यङ्ग्य भाव पोखिएको छ ।

भाग ३ मा पनि माथिकै संवादलाई निरन्तरता दिइएको छ तर विषय प्रसङ्गचाहिँ सफा र शुद्धको रहेको छ । भौतिक विज्ञानले सफा मात्रलाई मान्दछ भने अध्यात्म विज्ञानले सफा र शुद्ध दुवै अनिवार्य मान्दछ भन्ने सारांश रहेको छ ।

चौथो भागमा कर्तव्यको प्रसङ्ग छ । यसमा विषय प्रसङ्ग प्रष्ट पार्नका लागि गद्य/पद्य मिश्रित भाषाको प्रयोग छ । यस भागमा गद्यको तुलनामा पद्यात्मक प्रस्तुति बढी छ । अनुष्टुप् र शार्दूलविक्रीडित छन्दका ३८ श्लोकहरू रहेका छन् । नमूनाका लागि :

गुण गाउनु शत्रुको पनि गुण भए यदि ।

भन्न हुन्छ गुरुकै होस् यदि दोष भएहुँदो ॥

- हिंसक कृषक तुलना पृ. ४२

शत्रुको भए पनि उचित मूल्याङ्कन गर्न सक्नुपर्छ । राम्रो कामको प्रशंसा गर्न पछि पर्न हुँदैन । यदि दोष छ भने गुरुको पनि देखाउन सक्नुपर्दछ ।

वाणी कर्म र चित्तका करम छन् कल्याणका साधन

सकदैनन् यदि कर्मवाणि मनले सत्को गरुन् चिन्तन ।

छाडी सत्य कुरा परस्त्रि, मदिरा, हिंसा, जुवा, मांसमा

दिन्छन् चित्त भने त राक्षस तिनै मानिन्छ सत्शास्त्रमा ॥

- हिंसक कृषक तुलना पृ. ४५

मानिसको कर्म, वाणी र चित्तद्वारा सबैको कल्याण हुन्छ । यदि कर्म र वाणीद्वारा अर्काको कल्याण गर्न नसकेमा सत्य कुरा छाड्न हुँदैन । सत्य त्यागेर परस्त्री, मांस, मदिरा, हिंसा, आदिमा चित्त लगाउँछन् भने ती वास्तवमा राक्षस हुन् भन्ने भाव कविले यहाँ व्यक्त गरेका छन् :

हिंसाको सरि पाप छैन अरु क्यै त्यस्तै दयाको सम
छैनन् पुण्य कुनै भनिकन सबै सत्शास्त्रले भन्छन ।
मांसाशीहरुमा दया कसरि होस् प्रत्यक्ष नै सिद्ध छ
जस्मा छैन दया उ मानवमहाँ गन्नै पनी व्यर्थ छ ॥

- हिंसक कृषक तुलना पृ. ५८

दया नै धर्म हो, हिंसा नै पाप हो । मांसाहारीहरुबाट दया प्राप्त हुन सक्दैन । दया नै मानवताको गहना भएकाले दयाहीनलाई मानव भन्न पनि व्यर्थ छ ।

पाँचौं खण्डमा पनि संवादको निरन्तरता छ । यसमा बाखा, कुखुरा, परेवा, माछा पालेर बेच्ने, कटाएर मासु बेच्न, बध गर्न आज्ञा दिने, पकाउने, भाग लगाउने सबै हिंसकमा गनिन्छन् भन्ने प्रसङ्गको वर्णन छ । यस्तै उपर्युक्त हिंसाका प्रकारबाहेक, अन्याय, अत्याचार, अनादर, भ्रष्टाचार, दमन, अविवेक, पनि हिंसा नै हुन् । अतः यस्ता वृत्ति त्यागी सदाचारी विवेकी र सन्मार्गी बनेमा सुख शान्ति मिल्दछ भनिएको छ ।

छैठौं भागमा ब्राह्मणले हलो जोतेमा यस्तो पाप भोग्नु पर्दछ भन्ने प्रमाण केही नभेटिएको प्रसङ्ग उल्लेख गर्दै, हिंसा तीन प्रकारका छन्: मनले, वचनले र कर्मले कसैमा निन्दा गर्नु पनि हिंसा नै हो । अतः यहाँ भक्ष्याभक्ष्य र कर्तव्याकर्तव्य राम्ररी बुझी समुचित मार्ग अवलम्बन गर्न आह्वान गरिएको छ ।

सातौंमा परोपकार सर्वकल्याणकारक छ । सत्कर्मले ब्राह्मण बन्न सकिन्छ । मानवजन्म अमूल्य छ । सत्कर्म गरिएन भने जीवन मूल्यहीन बन्दछ भनिएको छ । साथै कसैले द्वैताद्वैतवादी मार्ग अवलम्बन गर्दछन् तर हामी द्वैताद्वैत विवर्जित समतत्त्व, ब्रह्मविज्ञ हुनुपर्दछ भनिएको छ ।

आठौं र नवौं भागमा कृतघ्न र विश्वासघात महापाप हो भन्ने चर्चा छ । नवौं भागमा संवादका अतिरिक्त केही पद्यात्मक भनाइहरू पनि छन्, जो यसप्रकार रहेका छन् :

मोक्षको लक्ष्य लीऔं

हाम्रा छन् पुरुषार्थ चार तर सखे ! लक्ष्यै लियौं मोक्षकै
धेरै छन साधन मोक्षका सबमा ति पैलो छ जुन् भन्छ त्यै ।
हिंसा, आमिष, मादकादि चिज औ जुवा पराईधन
जो छन् अन्य कुकर्म छाड्दिइ सदा सत्मा लगाऊँ मन ॥

- हिंसक कृषक तुलना पृ. ६०

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पुरुषार्थमध्ये अभै मोक्षको लक्ष्य लियौं । मोक्ष प्राप्त गर्ने साधनहरू धेरै छन् । तीमध्ये प्रमुख हिंसा त्याग्न, आमिष र मादक पदार्थ सेवन नगर्न, परस्त्री र परधनमा लीन नहुन यस्तै अन्य कुकर्मतिर नलागी सत्मा मन लगाए मोक्ष प्राप्त हुन्छ भन्ने कुरा प्रस्तुत पुस्तकमा उल्लेख गरिएको छ ।

२. ब्रह्मकर्म

वि.सं. २०३३ सालमा प्रकाशित स्वयम् प्रकाशक रहेको ब्रह्मकर्म १४६ पृष्ठमा संरचित रहेको छ । वेदादि सारा शास्त्रको सारांश भिकी सन्ध्योपासना, पञ्चमहायज्ञदि नित्यकर्म विधि, विविध सूक्ति उपदेश, हवन, स्वस्तिवाचन, गायत्रीमन्त्र एवम् रहस्यहरूको सङ्ग्रहको रूपमा यो पुस्तक तयार भएको छ ।

यसमा १२ सोपान (भाग) हरू रहेका छन् :

पहिलो : भगवत् वन्दना, शौच स्नानविधि

दोस्रो : सन्ध्या उपासनादिको पूर्वाङ्गविधि

तेस्रो : मानसिक पूजन, हवन र स्वस्तिवाचन

चौथो : आचमन, गायत्री, जपविधि एवम् ईश्वरवन्दना

पाँचौं : गायत्री जपाङ्ग तर्पण

छैठौं : ब्रह्मयज्ञ

सातौं : देव, भूत, पितृ र मनुष्ययज्ञ

आठौं : भोजन विधि

नवौं : कुश, पञ्चगव्य र यज्ञोपवित सम्बन्धमा विवेचना

दशौं : गायत्री मन्त्र एवं रहस्य

एघारौं : तिलक रहस्य

बाह्रौं : पञ्चदेव पूजन रहस्य

परिशिष्टभागमा, अभक्ष्य, अकर्तव्य अनाचार दिग्दर्शन विषयसँग सम्बन्धित अनुष्टुप् छन्दका २७ श्लोक र शरणाष्टक शीर्षकमा शार्दूलविक्रीडित छन्दका ८ श्लोक गरी जम्मा ३५ श्लोकहरू मौलिक र साहित्यिक रहेका छन् । प्रकाशनका दृष्टिले कविको पहिलो र छन्दमा आधारित मौलिक कविता मानिएको छ ।

कविले ब्रह्मकर्ममा विशेष गरी ब्राह्मणले गर्नुपर्ने कर्ममा जोड दिएका छन्, ब्राह्मणले आजीवन अभक्ष्य सेवन गर्नुहुँदैन भन्ने भनाइ यसप्रकार व्यक्त गरेका छन् :

शुद्धाशुद्ध अभक्ष्यादि हुन्छन् चीज थरीथरी ।

हुन्न खान अभक्ष्यादि ब्राह्मणले जीवनैभरि ॥

- ब्रह्मकर्म, १३८, श्लोक १

कविले कर्तव्याकर्तव्यको उपदेश दिने उद्देश्यले परस्त्री कस्ता हुन्छन् भन्ने बताउन परस्त्रीलाई लाग्ने छुरीसँग तुलना गरेका छन् । छुरीका दुई धार भनी दुवै लोक बताएका छन्, जता छोयो उतै काट्छन् त्यसकारण यी त्याज्य छन् भन्ने भाव यसरी व्यक्त भएको छ :

परस्त्री लाग्ने छुरी हुन् दुई धार जाननु ।

जता छोयो उतै काट्छन् तस्मात् यिन्कन त्यागनु ॥

- ब्रह्मकर्म, १४०, श्लोक १५

३. श्राद्धपद्धति

(नेपाली भाषा टीकासहित)

वि.सं. २०४९ सालमा बाबू माधवप्रसाद शर्मा, दुधविनायक, वाराणसीद्वारा प्रकाशित तथा ओमप्रकाश अधिकारीद्वारा सम्पादित श्राद्धपद्धति केदारनाथ अधिकारीको लेखनयात्राको दोस्रो चरणको एउटा कृति हो ।

यो जम्मा १६२ पृष्ठ सङ्ख्यामा सङ्कलित रहेको छ । नेपाली भाषा टीकासहित तर्पण, एकोद्दिष्ट एकपार्वण, गयाश्राद्ध र पितृस्तोत्रसमेत समावेश गरिएको यो कर्मकाण्डसँग सम्बन्धित कृति हो । संस्कृतका अल्पज्ञ र कर्मकाण्ड-श्राद्ध आदि गराउन नसक्ने-नजान्नेले पनि यो पुस्तकबाट सजिलै श्राद्ध गराउन सकून् भन्ने सद्दुद्देश्यका साथ यो पुस्तक तयार पारिएको छ ।

४. अष्टावक्रगीता

(नेपाली पद्यानुवाद)

ओमप्रकाश अधिकारीद्वारा सम्पादित श्री दुर्गा साहित्य भण्डार, वाराणसीद्वारा वि.सं. २०५० सालमा प्रकाशित ९६ पृष्ठ सङ्ख्याको **अष्टावक्रगीता** कविको संस्कृतको अष्टावक्रद्वारा लिखित मूलरूपको नेपाली पद्यानुवाद हो । यस कृतिका आधारमा केदारनाथ अधिकारी रचनात्मक मात्र नभई अनुवादात्मक व्यक्तित्वसमेत रहेको प्रमाणित हुन्छ । आत्मज्ञान सजिलै प्राप्त गर्न सकिने आत्मबोधक ग्रन्थको रूपमा यसलाई लिइएको छ । यसमा जम्मा एक्काइस प्रकरणहरूमा तीन सय बीस श्लोक रहेका छन् ।

राजा जनकले एक पटक आफूलाई ब्रह्मज्ञानद्वारा चित्त बुझाउन सक्ने व्यक्तिलाई एक हजार गाई र भूमिदान गर्ने कुराको घोषणा गर्दा अष्टावक्रले त्यहाँ गएर राजसभालाई आश्चर्यचकित तुल्याएका थिए । अनि जनकले अष्टावक्रको चरणमा पर्दै आत्मज्ञानको अनुरोध गर्दा दिएको आत्मज्ञानको उपदेश नै अष्टावक्रगीता हो । यसमा संस्कृतको श्लोकलाई सोही छन्दमा यसरी अनुवाद गरिएको छ :

संस्कृतको श्लोक :

कथं ज्ञानमवाप्नोति कथं मुक्तिर्भविष्यति ।

वैराग्यं च कथं प्राप्तमेतद् ब्रूहि मम प्रभो ॥

नेपाली पद्य अनुवाद :

कसरी ज्ञान पाइन्छ ? कसरी मुक्ति मिल्दछ ?

वैराग्य कसरी हुन्छ ? गुरो ! भन्दिनुहोस् सब ॥

- अष्टावक्र गीता, १९, श्लोक १)

५. तिलक रहस्य दर्पण

वि.सं. २०६० सालमा प्रकाशित १२० पृष्ठ सङ्ख्याको **तिलक रहस्य दर्पण** सात प्रसङ्गमा विभक्त रहेको छ । सात प्रसङ्गमा १५१ विषयहरू प्रस्तुत गरिएका छन् । यसमा तिलक सम्बन्धमा किन ? कसरी धारण गरिन्छ भनी विशद चर्चा गरिएको छ । वैदिक र सनातन परम्परामा परमात्माको स्मृतिसूचक त्रिपुण्ड्र र उर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारणका साथै

कर्तव्याकर्तव्यको बोध गराउने यसको उद्देश्य रहेको छ । यसको उत्तर खण्डमा केही मौलिक र साहित्यिक विषय पनि समावेश भएको छ । प्रस्तुत पुस्तकमा तिलकलाई मूल विषय बनाई कृत्याकृत्यको विवेचना पनि गरिएको छ । यसमा ५७ श्लोकहरू साहित्यिक र मौलिक रहेका छन् । यीमध्ये केही नमुना यस्ता रहेका छन् :

कस्ताले शिक्षा लिदैनन् ?

जसमा विनय छैन, अरूप्रति मर्यादा गर्दैन र अचारहीन छ, दया विवेक छैन, अहङ्कार छ, क्रोधी, अल्ल्छी, असंयमी छ त्यस्ताले शिक्षा लिन सक्दैन भन्ने भाव यसरी व्यक्त भएको छ ।

मर्यादा विनयादि छैन जसमा आचारले हीन छ

छैनन् शील, दया, विवेक समता जस्मा अहंकार छ ।

क्रोधी अल्ल्छ असंयमी छ जुन त्यो शिक्षा कहाँ लिन्छ र ?

हो त्यो दुष्ट पशु अचेत मनको नारी हओस् वा नर ॥

- तिलक रहस्य दर्पण, पृ. ८७

कर्मको शुद्धता

शरीर शुद्ध नभएमा मन शुद्ध हुँदैन । अशुद्ध भोजनबाट शरीर शुद्ध हुन सक्दैन । पात्र शुद्ध नभैकन अन्न पनि शुद्ध हुँदैन र आहारविहारबाट नै मनलाई शुद्ध राख्न सकिन्छ भन्ने धारणा यसरी व्यक्त गरेका छन् :

मन शुद्ध हुँदैहुन्न देह शुद्ध नभैकन ।

देह शुद्ध हुँदैहुन्न गरे अशुद्ध भोजन ॥

-तिलक रहस्य दर्पण, ८८, श्लोक १

अन्न शुद्ध हुँदैहुन्न पात्र शुद्ध नभैकन ।

शुद्ध आहार विहारादि गर्नुछ शुद्ध हे मन ! ॥

- तिलक रहस्य दर्पण, ८८, श्लोक २

ब्रह्ममन्दिर

आत्म नै मन्दिर हो भनी शीर्षकमै आत्म र मन्दिरको अभेद आरोप गरी ब्रह्मरूपी मन्दिरमा एउटा द्वार छ, त्योमाथि ६ ओटा भ्यालहरू छन्, वायुरूपी वृहद्भानु छन् । निकासका निम्ति २ द्वार छन् । टुपी, शिखारूपी, गजुर भएको आत्म भएको शरीर नै मन्दिर हो भन्ने भाव यसरी व्यक्त गरेका छन् :

यौटा द्वार छ भित्र वस्तु लगने त्योमाथि षट्भ्याल छन्

भित्रैमा पुनपाक आदि गरने वायू वृहद्भानु छन् ।

पेल्लै त्यो मलको निकास गरने छन् द्वार दुईतिर

टुपी ब्रह्मशिखा महान् गजुर हो ब्रह्मस्थ त्यो मन्दिर ॥

- तिलक रहस्य दर्पण, ६१, श्लोक १

६. आयुर्वेद सार दर्पण

(घरेलु वैद्य)

वि.सं. १८९१ सालमा आफ्ना पिता छविलालद्वारा लेखिएको जीर्ण अवस्थामा लोप हुन लागेको प्राचीन आयुर्वेद उपचारसम्बन्धी उल्लेख भएको घरेलु उपचार विधिको ग्रन्थलाई केदारनाथ अधिकारीले सङ्कलन गरी वि.सं. २०४६ सालमा जीर्णोद्धार गरेका छन् । **आयुर्वेद सार दर्पण** उनको घरेलु उपचार विधिसँग सम्बन्धित कृति वि.सं. २०५६ सालमा पुरानो प्रारूपलाई प्रथम खण्डका ४५ पृष्ठमा, उत्तर खण्डमा आफै सङ्कलन गरेका विभिन्न शारीरिक अङ्ग र रोगसँग सम्बन्धित उपचार विधिका ३५९ पृष्ठ र परिशिष्टभागमा स्वानुभव शीर्षकमा ८ पृष्ठ गरी जम्मा ४१२ पृष्ठ सङ्ख्यामा ओमप्रकाश अधिकारीको सम्पादनमा श्री दुर्गा साहित्य भण्डार वाराणसीबाट प्रकाशित भएको छ ।

प्रस्तुत ग्रन्थबाट नेपाली वाङ्मयको विकासमा उपचार पद्धतिका प्राचीन **ज्वरोत्पत्ति चिकित्सा, अजीर्ण मञ्जरी, बाज परीक्षा** आदिले तत्कालीन भाषिक स्वरूपको चिनारी दिएभैं १९औं शताब्दीको भाषिक स्वरूपको पनि जानकारी दिएको छ ।

घाउ लाग्याको उपाइ

जसकन घाउ लाग्या, बहत रगत आवत, विष लाग मूच्छा परत गायको नवनी (नौनी), दूध खानु रगत थामिय ।

अथवा- फल्याको चावल अलुवा (भर्खर-नयाँ कुटेको चामल) मुठि १, खयर भाग ३, दारिमका छाला (बोक्रा) भाग ३ पिसी वस्त्र गलित गरी थुकले मुछी घाउमा लावनु रगत रह ।

अथवा- दिनमा ३ पटक तेलसँगको लावनु घाउ पुरिय ।

अथवा- सेतो बरुवा, भालुको बोसो, सिउँडीको दुध मिसी बासी गरी लावनु घाउ पुरिय ।

अथवा- अमला, मूत (गाईको ?) सँग लागनु, घाउ पुरिय ।

अथवा- सिमालीका पात, सापको रगत, मिसी लावनु, घाउ पुरिय । चोकटा भया बहिराव (भिन्न विकृत वा खाल्टो परेको भए पानी पुरिन्छ भन्ने तात्पर्य हो) ।

अथवा- अरेंडको जरो लावनु घाउ पुरिय ।

आयुर्वेद सार दर्पण, पृ. १४

| <u>पुरानो रूप</u> | <u>नयाँ रूप</u> |
|-------------------|-----------------|
| जसकन | जसलाई |
| नवनी | नौनी |
| थामिय | थामिन्छ |
| अलुवा | आलो |
| छाला | बोक्रा |
| गलित गर्नु | छान्नु |
| लावन | लगाउनु |
| पुरिय | पुरिन्छ |
| रह | रोकिन्छ |
| फल्याको | फलेको |

उपर्युक्तबमोजिम त्यस समयको भाषामा क्रियापदको प्रयोगमा हालको जस्तो छ को प्रयोग नभई थमिय, पुरिय र रहको प्रयोग भेटिएको छ ।

कवि अधिकारीले यसको परिशिष्ट भागमा छन्दोबद्ध रूपमा घरेलु उपचारसँग सम्बन्धित उपदेशात्मक सुन्दर पद्यरचनालाई पनि स्थान दिएका छन् । केही नमुना यस्तो रहेको छ :

चिन्ताग्निमा न पोलिऔँ -

चिन्ताले जिउँदै जलाउँछ कुनै पागल्सरी बन्दछन्
कोहीमा उपचार नै विफल भै आपत्तिमा पर्दछन् ।
तस्मात् दुःख र पीर जेजति परोस् चिन्ता न लिईकन
उत्साहा शुभकाम धैर्य लिउँ रे सास्तिक्य सद्भावना ॥

- आयुर्वेदसार दर्पण, ४१०, श्लोक २५

बाल रोग (बालबेथा) -

छेर्ने, पेट् फुलने, ज्वरांश, अरुची, खाना न पच्ने हुँदा
यस्ता बालक बालरोगि भनछन् बूढाबुढी सोधदा ।
आकाश्वेलि, अजम्मरी, सिमलिका रस् आधि चंचा निले
लामा धामि र वैद्य डाक्टर कुनै चाहिन्न रे यत्तिले ॥

- आयुर्वेदसार दर्पण, ४११, श्लोक २६

कसले के भन्छन् ?

भन्छन् वैद्य त वायु पित्त कफ नै हुन् रोगका कारण
ज्योतिर्विद् ग्रहदोष, भूत पुजने राख्छन् भुतै धारण ।
प्रारब्धै भनि भन्दछन् मुनिहरू, होलान् सबै जे हउन्
दुष्पथ्यादि म मान्छु रोग हुनमा पैलो यही संझिउन् ॥

- आयुर्वेदसार दर्पण, ४११, श्लोक २७

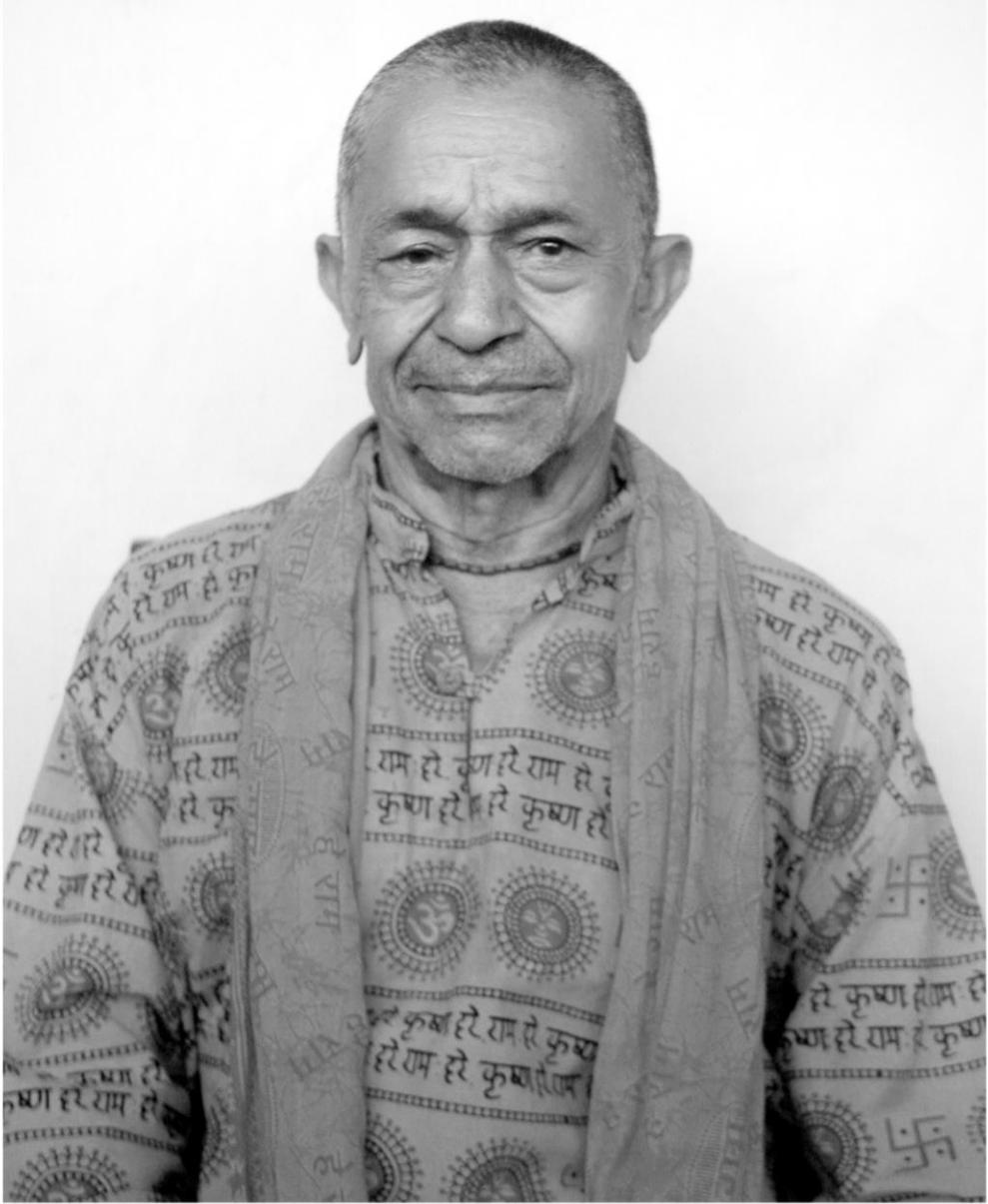
७. चतुर्विंशति-रत्न-दीपिका

वि.सं. २०६८ सालमा बाबू माधवप्रसाद शर्मा, वाराणसीद्वारा प्रकाशित तथा ओमप्रकाश अधिकारीद्वारा सम्पादित **चतुर्विंशति-रत्न-दीपिका** कविको तेस्रो चरणमा पर्ने ११० पृष्ठ सङ्ख्याको कृति हो । कर्मकाण्डसँग सम्बन्धित विविध विषयहरूको समीक्षा, विवेचना गरिएको यो कृति मूलतः कर्म, उपासना र ज्ञानसँग सम्बन्धित रहेको छ । प्रस्तुत कृति पूर्व खण्ड, उत्तर खण्ड र परिशिष्ट गरी तीन खण्डमा विभाजित छ । यसको प्रथम र द्वितीय खण्डमा २४/२४ उपशीर्षकहरू रहेका छन् । तीमध्ये मङ्गलचौथी, मासिक श्राद्धविधि, गायत्रीको रहस्य आदि प्रमुख उपशीर्षकहरू रहेका छन् । मूलतः यो कर्मकाण्डसँग सम्बन्धित रहेको छ । यसमा विभिन्न पूजाविधि, मालासंस्कारका विधिहरू रहेका छन् । नेपाली भाषाटीकासहितको प्रस्तुत कृतिमा संस्कृत र नेपाली भाषाको मिश्रित रूप प्रयोग गरिएको छ । गायत्रीको अक्षर र गायत्री शिरको नौपद गरी पुस्तकको शीर्षकचयन गरिएको छ ।

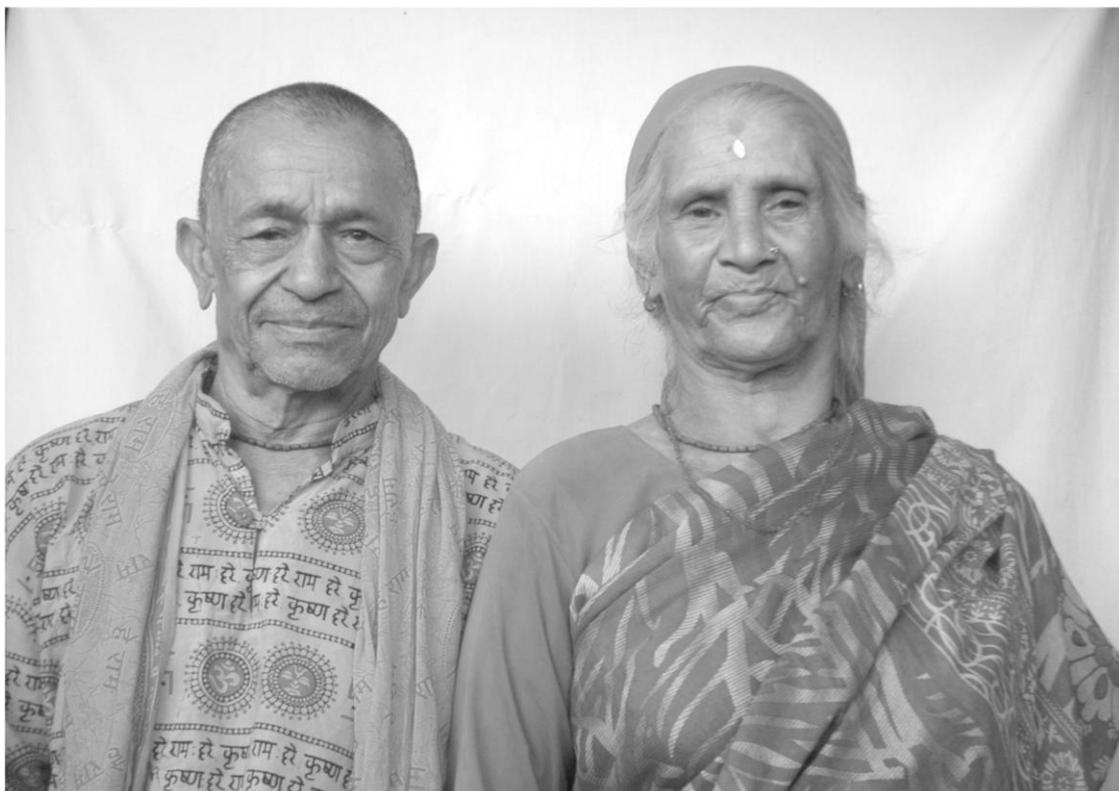
खण्ड 'ख'

तस्वीरहरूमा केदारनाथ अधिकारी

१) एकल छयाँचित्र : केदारनाथ अधिकारी



२) धर्मपत्नीका साथ केदारनाथ अधिकारी



३) परिवारजनका साथ केदारनाथ अधिकारी



४) केदारनाथ अधिकारीको तपसी अवस्थाको छयाँचित्र



खण्ड 'ग'

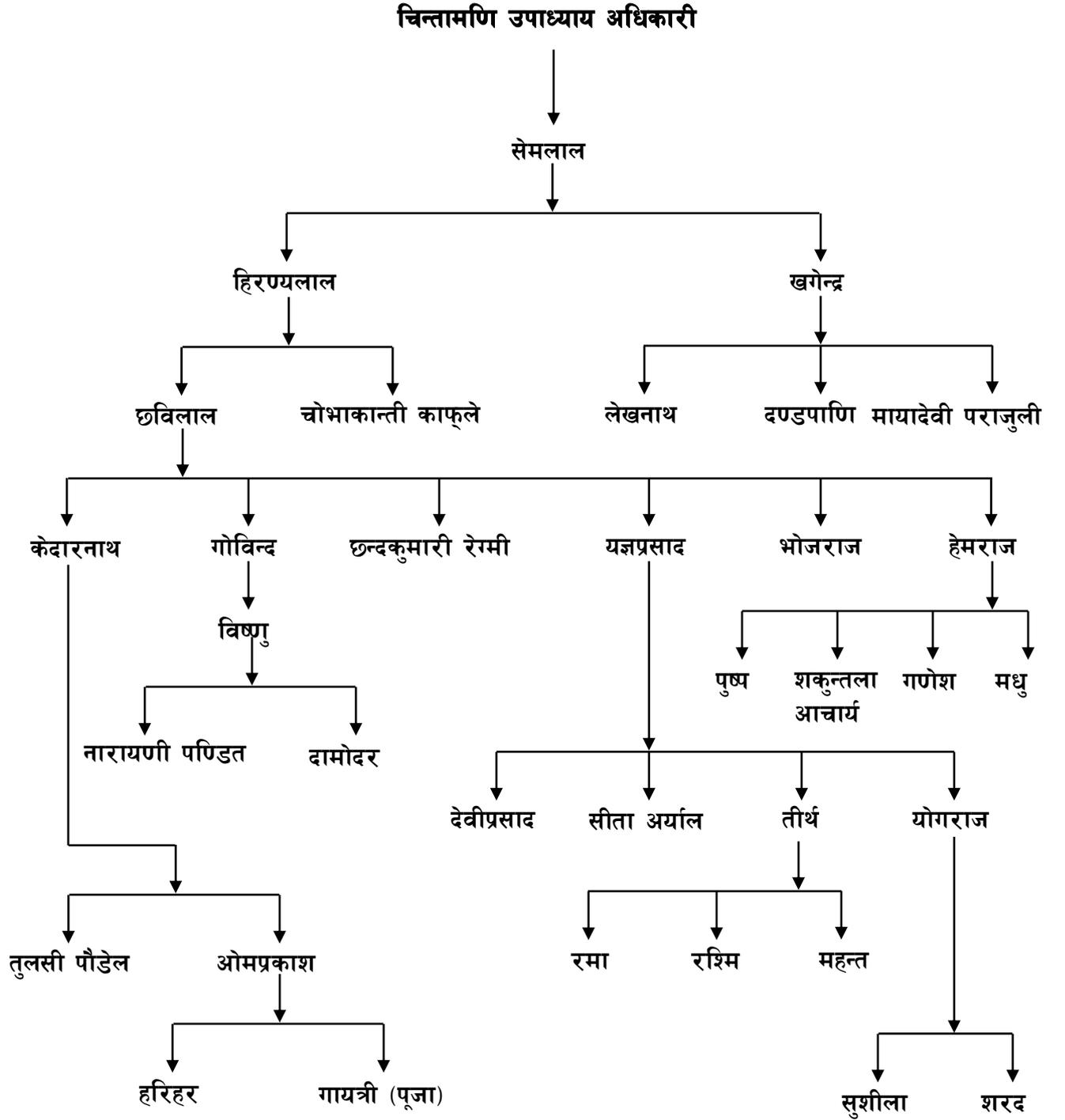
१) केदारनाथ अधिकारीको जन्मकुण्डली

श्रीव

श्रीगणेशाय नमः आदिरपाद्या गक्षा सर्वे सप्त
 क्षेत्रस्य रक्षयः सर्वान् कामान् पूयच्छुभं पश्ये
 पञ्चम पत्रिका ॥ श्रीविक्रमादित्य सभवा
 १९९१ साल श्रीशाके १८ पूछ ततोभासे
 २ शुक्रपक्षे चैथि तिथौ पुनर्वसु नक्षत्र
 भुक्तघटि घा० योगे ९ करशो ७ ज्येष्ठ
 मासेदिने ४ गते विहिवार शनिगाद्युठिका
 ९।१७ पक्षा सु. अ. नवपरासे जिला रकुवगा.
 विश पू ओटा रु. वस्तावां धविला अधिकारी
 पद्म प्रभाकोपगव केदारनाथ दोर्धाथुभया
 लगे ०१२३।५०।०

| | | | | |
|---------|--|-------|----|----|
| ८००।० | | पिं ३ | ३० | ७४ |
| शं २३।४ | | धां ५ | ४१ | ७७ |
| कु ३४।० | | भा ६ | ४५ | ७९ |
| के ३९।४ | | भ १४ | ५० | ८३ |
| शु ५२।० | | उ २० | ५६ | ९२ |
| आ ५६।० | | सि २९ | ६३ | |
| चं ६३।४ | | शं ३५ | ७१ | |
| मो ६७।० | | मं ३६ | ७२ | |
| श ७०।० | | | | |

२) केदारनाथ अधिकारीको वंशक्रम^१



१. स्रोत: अधिकारी ओमप्रकाश : कश्यप/काश्यप गोत्रीय अधिकारी: एक सङ्क्षिप्त परिचय तथा कुलपूजा विधि, (२०६७)

३) हस्तलिखित रचनाको नमुना

श्रीपरमात्मने नमः
श्रीमदष्टावक्रमुनिविरचिता -
अष्टावक्रगीताको पूर्व प्रसङ्ग -

अष्टावक्रजि पात्नुभो जनकका दर्वा रमा एकदिन
हांस्यो ब्रह्मसभा मुनीश्वरजिको आज्ञा भयो हे जन !
क्षमा हे छैन न्यर्मकार हुसले आत्मा त जा नैन न
देख्यो दृश्य शरीरयो कुरूपको आत्मा छ कस्तो मत ॥
बाझो हुन्छ नदी परन्तु रस ता बाझो कहाँ हुन्छ र ?
टोढो नै उँसु होस् तथापि रस ता टोढो कहाँ हुन्छ र ?
यस्तो वाक्य सुने जसै जनकजी श्रीजादमा शिर्धारि
गर्छन् विन्ति मुमुक्षु भै कसरि यो जाइन्छ संसारति ॥

शिक्षा कस्तोले हिनै दैनन् ?
भर्यादा विनयादि छैन जसमा आचार हो हीन छ
छैनन् शील दया धिक्केक समता जसमा अक्रुद्ध र छ ।
आल्छे क्रोधि असंयमी छ जुन त्यो शिक्षा कहाँ होन्छ र ?
हो त्यो दुष्ट पशू अचेत मनको नरि हुओस् वा नर ॥

- केदारनाथ अधिकारी

खण्ड 'घ'

कवि केदारनाथ अधिकारीलाई प्राप्त भएको सम्मानपत्रको प्रतिलिपि

सरस्वत्यास्तत्त्वं कविसहृदयाख्यं विजयतात्

त्रिवेणी साहित्य परिषद्, नवलपरासी

स्था: २०८७

कृष्णजङ्ग-डम्बरजङ्ग पुरस्कार

सम्मान-पत्र

साहित्यकार श्री केदारनाथ अधिकारीज्यू,
अर्ग्यौली, नवलपरासी

नवलपरासी जिल्लामा रही नेपाली भाषा-साहित्यको समुत्थानमा विगत लामो समयदेखि निरवच्छिन्न रूपमा सेवारत
यहाँले विशेषतः नेपाली भक्ति कविता काव्यका क्षेत्रमा पुऱ्याउनुभएको उल्लेखनीय योगदानको कदर गर्दै २०६४ को
कृष्णजङ्ग-डम्बरजङ्ग पुरस्कार राशि ५००१/- सहित यो **सम्मान-पत्र** समर्पण गरिएको छ ।

यहाँको सु-स्वास्थ्य, दीर्घायु, उत्तरोत्तर प्रगति र यशोभिवृद्धिका लागि हार्दिक शुभकामना !

संस्थापक
(प्रा. डा. नारायण कुँवर)

अध्यक्ष
(प्रा. डा. नारायणप्रसाद खनाल)

२२ औं स्थापना दिवस १५ आषाढ २०६८

खण्ड 'ड'

स्रोत व्यक्तिहरूको परिचय

| क्र.सं. | नाम, थर | नाता/सम्बन्ध | हालको ठेगाना |
|---------|----------------------|--------------------------------|--------------------------------|
| १. | यज्ञप्रसाद अधिकारी | साहिंला भाइ | रकुवा गा.वि.स.-२, नवलपरासी |
| २. | यज्ञप्रसाद सिग्देल | जेठा मावली भाइ | सुर्खेत न.पा.-१०, सुर्खेत |
| ३. | रामप्रसाद सिग्देल | काहिंला मावली भाइ | मंगलपुर गा.वि.स.-१, चितवन |
| ४. | चन्द्रप्रसाद सिग्देल | कान्छा मावली भाइ | भ.न.पा. १२, चितवन |
| ५. | खुशीलाल पाण्डे | पहाडघरका छिमेकी तथा सहकर्मी | शिवमन्दिर गा.वि.स.-३, नवलपरासी |
| ६. | धर्मराज पङ्गेनी | पहाडघरका छिमेकी तथा सहकर्मी | कोल्हुवा गा.वि.स.-४, नवलपरासी |
| ७. | ऋषिराम पराजुली | जेठान तथा सहकर्मी | शिवमन्दिर गा.वि.स.-३, नवलपरासी |
| ८. | ओमप्रकाश अधिकारी | छोरा | अग्यौली गा.वि.स.-९, नवलपरासी |

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

(क) प्रमुख सन्दर्भसूची

- अधिकारी, केदारनाथ, अष्टावक्रगीता, वाराणसी: श्री दुर्गा साहित्य भण्डार, २०५० ।
_____, आनन्ददीपिका, नवलपरासी: पद्मकुमारी उपाध्याय, २०५१ ।
_____, आयुर्वेद सार दर्पण, वाराणसी: श्री दुर्गा साहित्य भण्डार, २०५६ ।
_____, कर्तव्य दर्पण, वाराणसी: गोर्खा पुस्तक एजेन्सी, २०४७ ।
_____, चतुर्विंशति-रत्न-दीपिका, वाराणसी: बाबू माधवप्रसाद शर्मा, २०६८ ।
_____, तिलक रहस्य दर्पण, वाराणसी: बाबू माधवप्रसाद शर्मा, २०६० ।
_____, दिव्यमधु, वाराणसी: बाबू माधवप्रसाद शर्मा, २०४८ ।
_____, ब्रह्मकर्म, नवलपरासी: लेखक स्वयम्, २०३३ ।
_____, श्राद्धपद्धति, वाराणसी: बाबू माधवप्रसाद शर्मा, २०४९ ।
_____, सुदामाको कनिका, वाराणसी: बाबू माधवप्रसाद शर्मा, २०६८ ।
_____, संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ, वाराणसी: बाबू माधवप्रसाद शर्मा, २०५८ ।
_____, हिंसक कृषक तुलना, वाराणसी: श्री दुर्गा साहित्य भण्डार, २०२० ।

(ख) सहायक सन्दर्भसूची

- अधिकारी, ओमप्रकाश, कश्यप/काश्यप गोत्रीय अधिकारी एक सङ्क्षिप्त परिचय तथा
कुलपूजा विधि, वाराणसी: दुर्गा साहित्य भण्डार, २०६७ ।
_____, स्तोत्र पुष्पाञ्जली, वाराणसी: दुर्गा साहित्य भण्डार, २०६८ ।
अधिकारी, हेमाङ्गराज, प्रयोगात्मक नेपाली शब्दकोश, काठमाण्डौ: विद्यार्थी प्रकाशन प्रा.लि.,
२०६१ ।

अर्याल, भगवती (पाण्डे), **नवलपरासीको साहित्यिक गतिविधि**, नवलपरासी: त्रिवेणी साहित्य परिषद् र अन्य, २०६३ ।

आचार्य, भागवत, **नेपाली कविता र कविता सिद्धान्त**, काठमाण्डौ: नवीन प्रकाशन, इ.स. २००६ ।

उपाध्याय, केशवप्रसाद, **साहित्य प्रकाशन**, पाँचौं संस्क., ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०४९ ।

उपाध्याय, हुतराज हरिशरण, **मानव धर्म**, वाराणसी: बाबू माधवप्रसाद शर्मा, २०४९ ।

कुँवर, उत्तम, **स्रष्टा र साहित्य**, चौथो संस्क., ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०५० ।

खनाल, नारायणप्रसाद, **समस्यापूर्ति परम्परामा लेखनाथका कविता-काव्य**, नवलपरासी: त्रिवेणी साहित्य परिषद्, २०६५ ।

चापागाई, नरेन्द्र, **शब्द, वाक्य र अभिव्यक्ति**, काठमाण्डौ: रत्नपुस्तक भण्डार, २०५१ ।

जोशी, रत्नध्वज, **आधुनिक नेपाली साहित्यको झलक**, ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०५० ।

दुङ्गाना, गोविन्दप्रसाद, **छन्दोहार**, ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०६० ।

_____, **ज्ञानरत्नमाला**, वाराणसी: बाबू माधवप्रसाद शर्मा, २०६३ ।

थापा, हिमांशु, **साहित्य परिचय**, ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०३६ ।

न्यौपाने, टड्कप्रसाद, **साहित्यको रूपरेखा**, ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०३८ ।

पराजुली, कृष्णप्रसाद, **राम्रो रचना, मीठो नेपाली**, सोह्रौं संस्क., काठमाण्डौ: सहयोगी प्रेस, २०५१ ।

पराजुली, ठाकुर, **नेपाली साहित्यको परिक्रमा**, ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०५६ ।

पोखरेल भानुभक्त, **माधव घिमिरेका विशिष्ट खण्डकाव्य**, ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०५६ ।

भट्टराई, घटराज, **प्रतिभै प्रतिभा र नेपाली साहित्य**, दोस्रो संस्क., काठमाण्डौ: एकता बुक्स डिस्ट्रिब्युटर्स प्रा.लि., २०५१ ।

भट्टराई, भूपेन्द्र शर्मा, **नवलपरासीका साहित्यिक व्यक्ति र कृति**, नवलपरासी: श्यामप्रसाद श्रेष्ठ, २०६२ ।

भण्डारी, लक्ष्मण, **सनातन जीवनदर्शन**, काठमाण्डौ: दुर्गा भण्डारी, २०६८ ।

- रिसाल, राममणि, **नेपाली काव्य र कवि**, चौथो संस्क., ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०५० ।
- शर्मा, जनकलाल, **हाम्रै समाज एक अध्ययन**, ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०५८ ।
- शर्मा, ताना, **नेपाली साहित्यको इतिहास**, तेस्रो संस्क., काठमाण्डौः, नवीन प्रकाशन, २०५१ ।
- शर्मा, मोहनराज र लुईटेल, खगेन्द्रप्रसाद, **शोधविधि**, दोस्रो संस्क., ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०५५ ।
- शर्मा, वसन्तकुमार, **नेपाली शब्दसागर**, काठमाण्डौः भाभा पुस्तक भण्डार, २०५८ ।
- सुवेदी, राजेन्द्र, **सिर्जनात्मक लेखन; सिद्धान्त र विश्लेषण**, काठमाण्डौः पाठ्यसामग्री पसल, २०५७ ।
- श्रेष्ठ, दयाराम र शर्मा, मोहनराज, **नेपाली साहित्यको सङ्क्षिप्त इतिहास**, पाँचौ संस्क., ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०४६ ।
- त्रिपाठी, बासुदेव र अन्य, **नेपाली कविता भाग-४**, ललितपुर: साभा प्रकाशन, २०४९ ।
- ज्वाली, रामप्रसाद र अन्य, **ऐच्छिक नेपाली**, काठमाण्डौः भुँडीपुराण प्रकाशन, २०५९ ।